CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दो शब्द

ज्योतिष भूत, भविष्य और वर्तमान का साकार कहानी है। भविष्य कैसा है और उसे किस प्रकार सँवारना है, इसकी जानकारी ज्योतिष ही दे सकता है।

पाठकों की काफी समय से एक ऐसी पुस्तक की माँग थी, जो सरल हो, सुबोध हो और जिससे अनजान व्यक्ति भी ज्योतिष सीख सके, लग्न निकालकर अपनी कुण्डली बना सके। इस पुस्तक में अत्यन्त सुबोध शैली में इस पूरे विषय को अत्यन्त सरलता से समझाया गया है।

मेरी अन्य पुस्तकों की तरह पाठक इसे भी हाथों-हाथ उठायेंगे, इसका तो मुझे विश्वास है ही, और यदि यह पुस्तक पाठकों की ज्ञानवृद्धि कर सकी, तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा।

सी/एफ-१४, हाईकोर्ट कालोनी,
जोधपुर (राज०)

—नारायणदत्त श्रीमाली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषय-सूची

क्रम-अध्याय	विषय	पृष्ठ से पृष्ठ

१. **प्रवेश** ११—१९

ज्योतिष-विज्ञान, इसकी महत्ता, इसका कार्य-क्षेत्र। काल-विभाजन, काल-विभाजन के भेद। दिन के भेद। दिन के तीन भेद। पाँच भेद। मास। मास भेद। दिनमान। घटी-पल। मुहूर्त। दिन के पन्द्रह मुहूर्त, उसके स्वामी। रात्रि के पन्द्रह मुहूर्त, उसके स्वामी। संवत्सर। साठ संवत्सरों का फलित ज्योतिष में उपयोग।

२. **वार, तिथि** २०—२८

वार, वार-नाम। होरा। होरा नाम की उत्पत्ति। वारों का क्रम। क्रम पड़ने के पीछे रहस्य। वार-स्वभाव-संज्ञा—फल विशेष। वार स्वामी, कष्ट दिवस, वार कष्टावली। कष्ट शान्त्यर्थ दान।

तिथि। तिथि का तात्पर्य। तिथियों का क्रम। तिथियों के नाम। तिथियों के प्रसिद्ध संबोधनवाची नाम। तिथियों के स्वामी। तिथियों की सज्ञाएँ। नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता, पूर्णा तिथियाँ। सिद्धा तिथियाँ। मृतसंज्ञक तिथियाँ। अधम तिथियाँ। दग्ध तिथियाँ। विषाख्य तिथियाँ। हुताशन तिथियाँ। मास-शून्य तिथियाँ। पक्ष-रन्ध्र तिथियाँ। मन्वादि तिथियाँ। युगादि तिथियाँ। निष्कर्ष।

३. **नक्षत्र** २९—५२

नक्षत्र। नक्षत्रों की स्थिति। नक्षत्रों के नाम। मानव-शरीर में नक्षत्रों की स्थिति। नक्षत्रों के संस्कृत-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पर्यायवाची नाम। नक्षत्रों के सांकेतिक अक्षर। नक्षत्रों के स्वामी। गुण भेद नक्षत्र—सात्विक, राजस, तामस नक्षत्र। लिंग भेद नक्षत्र—पुल्लिग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग नक्षत्र। स्थिर संज्ञक नक्षत्र। चर संज्ञक नक्षत्र। उग्र संज्ञक नक्षत्र। मिश्र संज्ञक नक्षत्र। लघु संज्ञक नक्षत्र। मृदु संज्ञक नक्षत्र। दारुण संज्ञक नक्षत्र। अधोमुख संज्ञक नक्षत्र। ऊर्ध्वमुख संज्ञक नक्षत्र। तिर्यङ्मुख संज्ञक नक्षत्र। दग्ध संज्ञक नक्षत्र। पंचक संज्ञक नक्षत्र। मूल संज्ञक नक्षत्र। ध्रुव संज्ञक नक्षत्र। गास-शून्य नक्षत्र। गण्ड नक्षत्र। मूल नक्षत्र, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, रेवती, अश्विनी—प्रति नक्षत्र चरण फल। नक्षत्र—ग्रहस्वामी। नक्षत्र चरणाक्षर। नक्षत्र राशिचक्र। राशि संबंधित नक्षत्र। नक्षत्र—योनि, गण, युंजा, नाड़ी, तारा संख्या, वर्ण। नक्षत्र कष्ट—प्रतिनक्षत्र-चरण-कष्ट, कष्ट-दिन, जपसंख्या, जप-मंत्र।

४. योग ५३—६८

योग। योग अर्थ। योग भेद। योगों के नाम। योग-स्वामी। योग-सांकेतिक अक्षर। शुभ कार्य में त्याज्य योग। विशेष योग—चर, ऋकच, दग्ध, मृत्यु-दायक, सिद्धि, उत्पात, मृत्यु, काल, सुसिद्धि, यमदंष्ट्र योग, यमघंट, मूसल, अमृतसिद्धि, सर्वार्थसिद्धि योग। चतुर्दश योग चक्र। प्रमुख अट्ठाईस योग। प्रमुख योग चक्र। योग शुभाशुभ। शुभ कार्यों में वर्जित, भद्रा। भद्रा-निवास।

५. करण ६९—७०

करण। करण नाम। चर संज्ञक करण। स्थिर संज्ञक करण। भद्रा। करणों के स्वामी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६. पञ्चांग-परिचय ७१—७३
पंचांग—तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण। पंचांग को समझने का तरीका। निष्कर्ष।

७. ग्रह ७४—९०
ग्रह। ग्रहों के प्रमुख नाम। प्रत्येक ग्रह की विशेषताएँ। फारसी नाम। अंग्रेजी नाम। एकपाद-दृष्टि। द्विपाद दृष्टि। त्रिपाद दृष्टि। सम्पूर्ण दृष्टि। ग्रह-वर्ष। नेष्ट ग्रहस्य उपाय। एक राशि-भुक्त प्रमाण। रत्न। मित्र ग्रह। सम ग्रह। शत्रु ग्रह। उच्च राशि। नीच राशि। स्वगृह। मूल-त्रिकोण। वर्ष। जाति। आकार। समय। दिशा। धातु। पाद। स्वभाव। गुण। व्यवहार। रस। भूमि। शरीर। अवस्था। रंग। धातु। स्थान। विंशोत्तरी दशा-वर्ष। अष्टोत्तरी दशा-वर्ष। कारक ग्रह। अरिष्टकारक ग्रह। ग्रह बल वृद्धि। ग्रह जपनीय मंत्र। निष्कर्ष।

८. राशि ९१—१०८
राशि। राशि का अर्थ। प्रसिद्ध राशियाँ। पर्याय-वाची शब्द। मानव-शरीर में राशियों की स्थिति। राशि-परिचय। अंग्रेजी नाम। फारसी नाम। अरबी नाम। राशि—नाम। पुं०। चरादि। तत्व। अवयव। पाद। वर्ण। गुण। धातु। शब्द। स्थान। क्रूरादि। बल। समादि। दिशा। स्त्रीसंग। कांति। जाति। उदय। ऋतु। राशि-स्वामी। घातचक्र—प्रत्येक राशि-घात। मास। तिथि। वार। नक्षत्र। योग। करण। प्रहर। लग्न। चंद्र। मंगल। बुध। गुरु। शुक्र। शनि। राहु। सूर्य। स्त्री-घात चंद्र।

९. भाव १०९—११४
भाव। जन्मकुण्डली। लग्न। केन्द्र। पणफर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आपोक्लिम । त्रिकोण । त्रित्रिकोण । चतुरस्र ।
उपचय । पीडर्क्ष । कण्टक । चतुष्टय । द्वादश भाव ।
भाव स्वामी नाम । भावों के अंग्रेजी नाम । संस्कृत-
पर्यायवाची नाम । भावों के स्वामी के पर्यायनाम ।
प्रत्येक भाव से क्या-क्या जाना जाता है । निष्कर्ष ।

१०. सारिणियाँ ११५—१२६

स्टैण्डर्ड टाइम । स्थानीय समय । भारत के प्रसिद्ध
शहरों के अक्षांश, रेखांश व स्टैण्डर्ड अन्तर मिनटों-
सैकण्डों में । वेलान्तर-सारिणी । लग्न-सारिणी ।

११. लग्न १२७—१३४

लग्न क्या है ? लग्न निकालने का सुगम तरीका ।
इष्टकाल-ज्ञान । विभिन्न समयों के इष्टकाल निका-
लने के नियम । इष्टकाल से लग्न निकालना ।
उदाहरण । जन्मकुण्डली-निर्माण । निष्कर्ष ।

१२. ज्ञातव्य १३५—१३८

जन्मराशि प्रधानता । नामराशि प्रधानता । दिशा-
शूल वास । योगिनी विचार । चंद्रवास-फल । दिशा-
शूल परिहार । कालराहु विचार । धरतीशयन ।
रजस्वला धरती । वर्ग विचार । वैर-मित्र । पाया-
विचार । चौघटिका । भद्रा-निवास । निष्कर्ष ।

१३. जन्म-पत्रिका लिखने का प्रकार १३९—१४०

१४. विविध मुहूर्त्त १४०—१४४

सूतिका स्नान । अन्नप्राशन । कर्णवेध । विद्यारम्भ ।
वाग्दान । विवाह । वधू-प्रवेश । यात्रा । गृहारम्भ ।
नूतन गृह-प्रवेश । शान्ति-कार्य । दुकान करना ।
व्यापार-प्रारंभ । अधिकारी से मिलना । नौकरी ।
मुकद्दमा । मंत्रसिद्धि । समस्त शुभ-कार्य । मन्दिर-
निर्माण । प्रतिष्ठा-कार्य । होमाहुति । गोद लेना ।
बँटवारा । बीज बोने का मुहूर्त्त ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ प्रवेश

ज्योतिष भारतीय जीवन का आधार है। वेदों में इसे पाँचवाँ वेद और शास्त्रों में इसे नेत्र माना गया है, जिसका सीधा-सादा तात्पर्य है, कि मानव-शरीर में नेत्रों का महत्त्व सर्वोपरि है। वे प्राणी का तादात्म्य अखिल विश्व से कराते हैं, तथा व्यक्ति को ऊबड़-खाबड़ मार्ग में सावधानी से बचाकर गन्तव्य तक पहुँचाने में सहायक होते हैं। ठीक उसी प्रकार ज्योतिष की जानकारी रखने वाला व्यक्ति भी जीवन के ऊबड़-खाबड़ क्षणों, विपरीत परिस्थितियों एवं अज्ञात आशंकाओं में से सकुशल बाहर निकलकर अपने लक्ष्य तक पहुँचने में सफल होता है।

ज्योतिष केवल कपोल-कल्पित कल्पना नहीं, अपितु ठोस सत्य है; यह मात्र विश्वास और श्रद्धा कर लेने वाला शास्त्र ही नहीं, अपितु निश्चित परिणाम-सम्पन्न पूर्ण विज्ञान है। जिस प्रकार विज्ञान का निर्णय एक और सत्य है, उसी प्रकार ज्योतिष का भी; उदाहरणार्थ विज्ञान के अनुसार हाइड्रोजन की दो मात्रा तथा ऑक्सीजन की एक मात्रा मिलने से पानी बन जाता है, यह सिद्धान्त भारत में भी उतना ही सत्य है जितना अमेरिका में, ठीक इसी प्रकार ग्रहों के संयोग-वियोग, पारस्परिक आकर्षण-विकर्षण से जो प्रभाव होता है, उसका एक निश्चित फल है, सुनिश्चित परिणाम है। कालभेद और स्थानभेद का उसपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इनका परिणाम चाहे भारत हो चाहे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इंग्लैंड या अमेरिका, एक ही फल होगा, एक ही परिणाम होगा और एक ही उसका मान होगा।

ज्योतिष कोई कठिन और दुस्साध्य विद्या नहीं, अपितु अत्यन्त सीधा-सादा सरल विषय है। काफी वर्षों तक यह विद्या एक वर्ग-विशेष के ही पास रही और पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे चलती रही, जिसके कारण इसमें एकान्तता और सड़ाँध-सी उत्पन्न हुई; इसे न तो खुला वातायन मिला, और न ही उन्मुक्त वातावरण। पिता प्रतिभाशाली होने पर पुत्र भी उतना ही प्रतिभाशाली हो यह जरूरी नहीं, इसी कारण पीढ़ी-दर-पीढ़ी होने के कारण इसमें अज्ञानता बढ़ती रही और अज्ञानता ने गप्पबाजी एवं लच्छेदार बातों का आश्रय ले लिया; भविष्य के सुनहरी ख्वाब दरसाए जाने लगे; साथ ही आगे जाकर इसमें ऐसे व्यक्तियों का दखल रह गया, जो इसके ठोस जानकार कम और भविष्य के ताने-बाने बनाने में अधिक कुशल थे।

स्पष्ट है, यह काल ज्योतिष-जगत् में संक्रान्ति-काल था। अधकचरे एवं अल्पशिक्षित पंडितों का बाहुल्य हो गया। जो वास्तविक जानकार थे, वे 'आउट ऑफ़ डेट' कहला दिये गए। इससे जनता और ज्योतिष दोनों की हानि ही हुई। जनता विज्ञापन एवं व्यक्तित्व की ओर झुकी और उसने जब फलादेश प्राप्त किया, तो वह भविष्य की शिला पर ठोस न रह सका क्योंकि उसकी नींव कमजोर थी। यह नींव उन अधकचरे पंडितों द्वारा निर्मित थी, जिन्हें केवल नौ ग्रह और बारह राशियों का ही नाम स्मरण था, इसके आगे न उनकी पहुँच थी, और न आवश्यकता ही।

जब एक फलादेश सही नहीं उतरा तो जनता दूसरे के पास गई। वहाँ भी वही हाल हुआ तो तीसरे के पास गई, और इस प्रकार जब आठ-दस लोगों के पास जाने पर भी ठोस सत्य की उपलब्धि नहीं हुई तो खीझकर उसने ज्योतिष को ही गप्पबाजी एवं कपोल-कल्पित ठहरा दिया।

पर यह पाखण्ड तथा झूठी चमक-दमक ज्यादा समय तक नहीं टिकी। जनता भी ऐसे पाखण्डियों को पहचान गई, और उन अधकचरे विद्वानों को भी अपना आसन हिलता नजर आया। धीरे-धीरे इन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सब के बीच में से ठोस सत्य उभरता रहा। जो सही सुदृढ़ थे वही अडिग दिखाई दिये, और बालू की दीवारें ढहती गईं। आज जनता को पहचान हो गई है। उसकी पुनः आस्था जमने लगी है। उसके फलादेश सही उतरने लगे हैं और यह सही फलादेश उन पंडितों की विशेषता नहीं हैं; यह तो कालजयी ज्योतिष की सत्यता है, निश्चित विज्ञान का परिणाम है, और उन आर्ष ऋषियों की उपलब्धि है जिन्होंने परिश्रम-पूर्वक पूरे खगोल-मण्डल का अध्ययन किया था—ग्रहों की गति, स्थिति एवं पथ का अध्ययन किया था, उसका आयाम और व्यास नापा था तथा उसके बारे में निश्चित सिद्धान्त स्थिर किये थे।

पिछले दिनों मेरे द्वारा जब ज्योतिषीय कम्प्यूटर का निर्माण हुआ, तो देश-विदेश से हजारों प्रशंसापूर्ण पत्र मिले। लगभग सभी पत्र-पत्रिकाओं ने इसे सराहा, दैनिक 'नवभारत' ने जहां इसे 'ज्योतिष-जगत् में नया कीर्तिमान' बताया तो 'धर्मयुग' ने इसे 'ज्योतिषीय उपलब्धि' कहकर अभिनंदन किया। 'कादम्बिनी' आदि कई हिन्दी, मराठी, गुजराती पत्र-पत्रिकाओं ने इसपर विशेष लेख प्रकाशित किये और यह बताया कि "इससे किसी भी व्यक्ति का, किसी भी क्षण-विशेष का भविष्य स्पष्ट किया जा सकता है।"

और यह इस बात का प्रमाण है कि ज्योतिष ध्रुव सत्य है। उससे उत्पन्न फलादेश निश्चित ही सत्य है। आवश्यकता है परिश्रम की, शोध की, और आगे बढ़कर कुछ कर गुजरने की क्षमता की। इस यंत्र-निर्माण का श्रेय, मेरा श्रेय नहीं, अपितु उन ऋषियों का है जिन्होंने ग्रहों का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन किया, ग्रहों व मनुष्यों का पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित किया, और इसके लिए निश्चित सिद्धान्त स्थिर किये, अस्तु।

ज्योतिष सीखने के इच्छुक व्यक्ति को चाहिए कि वह काल-विभाजन को समझे। आजकल काल-विभाजन घण्टा, मिनट, सैकण्ड हैं, किन्तु भारतीय गणितज्ञों ने काल-विभाजन दिन, घटी, पल में किया था। यह विभाजन इस प्रकार है—

३ लव	=	१ निमेष
३ निमेष	=	१ क्षण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इंग्लैंड या अमेरिका, एक ही फल होगा, एक ही परिणाम होगा और एक ही उसका मान होगा।

ज्योतिष कोई कठिन और दुस्साध्य विद्या नहीं, अपितु अत्यन्त सीधा-सादा सरल विषय है। काफी वर्षों तक यह विद्या एक वर्ग-विशेष के ही पास रही और पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे चलती रही, जिसके कारण इसमें एकान्तता और सड़ाँध-सी उत्पन्न हुई; इसे न तो खुला वातायन मिला, और न ही उन्मुक्त वातावरण। पिता प्रतिभाशाली होने पर पुत्र भी उतना ही प्रतिभाशाली हो यह जरूरी नहीं, इसी कारण पीढ़ी-दर-पीढ़ी होने के कारण इसमें अज्ञानता बढ़ती रही और अज्ञानता ने गप्पबाजी एवं लच्छेदार बातों का आश्रय ले लिया; भविष्य के सुनहरी ख्वाब दरसाए जाने लगे; साथ ही आगे जाकर इसमें ऐसे व्यक्तियों का दखल रह गया, जो इसके ठोस जानकार कम और भविष्य के ताने-बाने बनाने में अधिक कुशल थे।

स्पष्ट है, यह काल ज्योतिष-जगत् में संक्रान्ति-काल था। अधकचरे एवं अल्पशिक्षित पंडितों का बाहुल्य हो गया। जो वास्तविक जानकार थे, वे 'आउट ऑफ़ डेट' कहला दिये गए। इससे जनता और ज्योतिष दोनों की हानि ही हुई। जनता विज्ञापन एवं व्यक्तित्व की ओर झुकी और उसने जब फलादेश प्राप्त किया, तो वह भविष्य की शिला पर ठोस न रह सका क्योंकि उसकी नींव कमजोर थी। यह नींव उन अधकचरे पंडितों द्वारा निर्मित थी, जिन्हें केवल नौ ग्रह और बारह राशियों का ही नाम स्मरण था, इसके आगे न उनकी पहुँच थी, और न आवश्यकता ही।

जब एक फलादेश सही नहीं उतरा तो जनता दूसरे के पास गई। वहाँ भी वही हाल हुआ तो तीसरे के पास गई, और इस प्रकार जब आठ-दस लोगों के पास जाने पर भी ठोस सत्य की उपलब्धि नहीं हुई तो खीझकर उसने ज्योतिष को ही गप्पबाजी एवं कपोल-कल्पित ठहरा दिया।

पर यह पाखण्ड तथा झूठी चमक-दमक ज्यादा समय तक नहीं टिकी। जनता भी ऐसे पाखण्डियों को पहचान गई, और उन अधकचरे विद्वानों को भी अपना आसन हिलता नजर आया। धीरे-धीरे इन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सब के बीच में से ठोस सत्य उभरता रहा। जो सही सुदृढ़ थे वही अडिग दिखाई दिये, और बालू की दीवारें ढहती गईं। आज जनता को पहचान हो गई है। उसकी पुनः आस्था जमने लगी है। उसके फलादेश सही उतरने लगे हैं और यह सही फलादेश उन पंडितों की विशेषता नहीं हैं; यह तो कालजयी ज्योतिष की सत्यता है, निश्चित विज्ञान का परिणाम है, और उन आर्ष ऋषियों की उपलब्धि है जिन्होंने परिश्रम-पूर्वक पूरे खगोल-मण्डल का अध्ययन किया था—ग्रहों की गति, स्थिति एवं पथ का अध्ययन किया था, उसका आयाम और व्यास नापा था तथा उसके बारे में निश्चित सिद्धान्त स्थिर किये थे।

पिछले दिनों मेरे द्वारा जब ज्योतिषीय कम्प्यूटर का निर्माण हुआ, तो देश-विदेश से हजारों प्रशंसापूर्ण पत्र मिले। लगभग सभी पत्र-पत्रिकाओं ने इसे सराहा, दैनिक 'नवभारत' ने जहाँ इसे 'ज्योतिष-जगत् में नया कीर्तिमान' बताया तो 'धर्मयुग' ने इसे 'ज्योतिषीय उपलब्धि' कहकर अभिनंदन किया। 'कादम्बिनी' आदि कई हिन्दी, मराठी, गुजराती पत्र-पत्रिकाओं ने इसपर विशेष लेख प्रकाशित किये और यह बताया कि "इससे किसी भी व्यक्ति का, किसी भी क्षण-विशेष का भविष्य स्पष्ट किया जा सकता है।"

और यह इस बात का प्रमाण है कि ज्योतिष ध्रुव सत्य है। उससे उत्पन्न फलादेश निश्चित ही सत्य है। आवश्यकता है परिश्रम की, शोध की, और आगे बढ़कर कुछ कर गुजरने की क्षमता की। इस यंत्र-निर्माण का श्रेय, मेरा श्रेय नहीं, अपितु उन ऋषियों का है जिन्होंने ग्रहों का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन किया, ग्रहों व मनुष्यों का पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित किया, और इसके लिए निश्चित सिद्धान्त स्थिर किये, अस्तु।

ज्योतिष सीखने के इच्छुक व्यक्ति को चाहिए कि वह काल-विभाजन को समझे। आजकल काल-विभाजन घण्टा, मिनट, सैकण्ड हैं, किन्तु भारतीय गणितज्ञों ने काल-विभाजन दिन, घटी, पल में किया था। यह विभाजन इस प्रकार है—

३ लव	=	१ निमेष
३ निमेष	=	१ क्षण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

५ क्षण	=	१ काष्ठा
१५ काष्ठा	=	१ लघु
१५ लघु	=	१ घड़ी
६० घड़ी	=	१ दिन

इन घटी पलों को आधुनिक काल-विभाजन में इस प्रकार समझा जा सकता है—

१ घटी	=	२४ मिनट
१ मिनट	=	२½ पल
१ पल	=	६० प्रतिपल या २४ सैकण्ड
१ प्रतिपल	=	६० विप्रतिपल या $\frac{१}{६०}$ सैकण्ड

इस काल-विभाजन से ही ज्ञात होजाता है कि प्राचीन ज्योतिर्विदों की गणना या काल-मापन सैकण्ड के भी सूक्ष्म में गई हुई थी।

वस्तुतः कालपद्धति के आविष्कर्ता भारतीय ही थे। दिन-रात के लिए संस्कृत में 'अहोरात्र' शब्द प्रयुक्त होता है। मुख-सुख पद्धति के अनुसार प्रथम तथा अंतिम अक्षर का त्याग कर ज्योतिष में 'होरा' शब्द स्वीकार किया। अहोरात्र के चौबीसवें भाग को 'होरा' कहा गया, जो एक घण्टे का द्योतक है, और यही 'होरा' शब्द अंग्रेजी में 'आँवर' (Hour) शब्द बना, जो एक घण्टे का ही पर्यायवाची है।

उपर्युक्त काल-विभाजन के साथ ही निम्न शब्दों को भी ध्यान में रखना चाहिए—

३० काष्ठा	=	१ कला
३० कला	=	१ क्षण
१२ क्षण	=	१ मुहूर्त
३० महूर्त	=	१ अहोरात्र
दिन-रात्रि का १५वाँ भाग	=	१ मुहूर्त
अंग्रेजी में A.M. पूर्वाह्न	=	प्रातः से दोपहर तक
,, P.M. अपराह्न	=	दोपहर से सायं तक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दिन की लम्बाई के तीन भाग — पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्न

दिन की लम्बाई के चार भाग — पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्न, सायाह्न

दिन की लम्बाई के पाँच भाग

३ मुहूर्त तक = प्रातःकाल
६ ,, ,, = संगव
९ ,, ,, = मध्याह्न
१२ ,, ,, = अपराह्न
१५ ,, ,, = सायाह्न

१ याम = दिन का चौथा भाग या एक प्रहर

इसके अतिरिक्त भारतीय काल-गणना में कुछ विशिष्ट नाम भी प्रचलित हैं—

प्रातः = सूर्योदय से तीन घटी तक
सायं = सूर्यास्त से तीन घटी तक
प्रदोष = सूर्यास्त से ६ घटी तक
निशीथ = अर्धरात्रि के मध्य की दो घटी
उषाकाल = सूर्योदय से पूर्व पाँच घटी
१५ अहोरात्र = १ पक्ष
२ पक्ष = १ मास
२ मास = १ ऋतु
६ ऋतु या १२ मास = १ वर्ष
६ मास = १ अयन

सूक्ष्मता में जाने पर कई मास ज्ञात होते हैं—

१ चन्द्रमास = (पूर्णिमा से पूर्णिमा या अमावस्या तक। यह २९ दिन १२ घंटा ४४ मिनट ३ सैकण्ड का होता है।)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ सौर मास = (सूर्य की एक राशि या ३० अंश भ्रमण का काल)

१ सावन मास = ३० दिन

१ नाक्षत्र मास = चन्द्रमा का एक पूर्ण भ्रमण या २७ दिन ७ घटा ४३ मिनट ८ सैकण्ड।

मास की तरह वर्ष भी पाँच प्रकार के माने जाते हैं—

१२ चन्द्रमास = १ चान्द्र वर्ष
१ सौर वर्ष = ३६५·२५६ दिन
१ सावन वर्ष = ३६० दिन
१ नाक्षत्र वर्ष = १२ नाक्षत्र मास
१ चान्द्र वर्ष = ३५४.३० दिन
१ बार्हस्पत्य वर्ष = ३६१ सौर दिन

ऊपर देखने पर पता चलता है कि चान्द्र वर्ष ३५४·३० दिन का होता है, जबकि सौर वर्ष ३६५·२५६ दिन का। इस असंगति को मिटाने के लिए वेदांग ज्योतिष में ढाई वर्षों के अन्तर से एक चान्द्र मास और बढ़ा देने की परम्परा है, जिसे अधिमास, या अधिक मास भी कहते हैं।

प्रत्येक पंचांग में दिनमान लिखा हुआ होता है। एक अहोरात्र ६० घटी का होता है। इसमें जितना दिनमान होता है, ६० घटी में से घटाने पर शेष रात्रिमान कहलाता है। उदाहरणार्थ दिनमान ३४ घटी १२ पल है, तो इसे ६० में से घटाने पर ← रात्रिमान निकालने तरीका.

६० = ००
३४ = १२
---
२५ = ४८ शेष

अर्थात् ३४ घटी १२ पल दिनमान है, तो उस दिन २५ घटी ४८ पल रात्रिमान होगा।

'मुहूर्त' शब्द भारतीय ज्योतिष में काफी प्रचलित है तथा शुभ कार्यों के प्रारंभ हेतु शुभ मुहूर्त का अध्ययन किया जाता है।

पर प्रश्न उठता है कि एक महूर्त का काल-मापन क्या ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्योतिष-सिद्धान्त के अनुसार १५ मुहूर्त दिन में होते हैं, तथा १५ मुहूर्त रात्रि में। दिन-रात में कुल ३० मुहूर्त होते हैं।

दिनमान में १५ का भाग देने से एक मुहूर्त का काल स्पष्ट हो जाता है। उदाहरणार्थ किसी दिन दिनमान ३४ घटी १२ पल है, इसमें १५ का भाग दिया—

१५) ३४=१२ (२ घटी
३०
४
× ६० पल बनाये
२४०
+ १२ पल जोड़े
१५)२५२(१६
१५
१०२
९०
१२ शेष

अर्थात् उस दिन एक मुहूर्त की समयावधि लगभग २ घटी १६ पल (या १७ पल, या सही लें तो २ घटी १६·८ पल) थी।

यह पीछे ही बताया जा चुका है कि एक घटी=२४ मिनट और एक पल=२४ सैकण्ड का होता है। इस प्रकार उस दिन एक मुहूर्त की समयावधि लगभग ५४ मिनट २४ सैकण्ड की थी।

दिन के जो पन्द्रह मुहूर्त होते हैं उसके स्वामी इस प्रकार माने गये हैं—

मुहूर्त	स्वामी	मुहूर्त	स्वामी
पहला	गिरीश	चौथा	पितृ
दूसरा	भुजग	पाँचवाँ	वसु
तीसरा	मित्र	छठा	अम्बु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुहूर्त	स्वामी	मुहूर्त	स्वामी
सातवाँ	विश्वदेव	बारहवाँ	निर्ऋति
आठवाँ	अभिजित्	तेरहवाँ	वरुण
नवाँ	विधाता	चौदहवाँ	अर्यमा
दसवाँ	इन्द्र	पन्द्रहवाँ	भग
ग्यारहवाँ	इन्द्रानल		

रात्रि के जो पन्द्रह मुहूर्त होते हैं, उनके स्वामी इस प्रकार कहे गये हैं—

पहला	शिव	नवाँ	शशभृद्
दूसरा	अजेकपाद्	दसवाँ	अदिति
तीसरा	अहिर्बुध्न्य	ग्यारहवाँ	जीव
चौथा	पूषा	बारहवाँ	विष्णु
पाँचवाँ	अश्विनी	तेरहवाँ	अर्क
छठा	यम	चौहदवाँ	त्वष्ट्रा
सातवाँ	अग्नि	पन्द्रहवाँ	मरुत्
आठवाँ	धातृ		

मुहूर्त व उसके स्वामी का ज्ञान होने के साथ ही साथ संवत्सर का ज्ञान भी जरूरी है। कुल संवत्सर साठ हैं, जिनके क्रमशः नाम इस प्रकार हैं—

१ प्रभव	१२ बहुधान्य	२३ विरोधी
२ विभव	१३ प्रमाथी	२४ विकृति
३ शुक्ल	१४ विक्रम	२५ खर
४ प्रमोद	१५ वृष	२६ नन्दन
५ प्रजापति	१६ चित्रभानु	२७ विजय
६ अंगिरा	१७ सुभानु	२८ जय
७ श्रीमुख	१८ तारण	२९ मन्मथ
८ भाव	१९ पार्थिव	३० दुर्मुख
९ युवा	२० व्यय	३१ हेमलम्बी
१० धाता	२१ सर्वजित्	३२ विलम्बी
११ ईश्वर	२२ सर्वधारी	३३ विकारी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३४ शार्वरी	४३ सौम्य	५२ कालयुक्त
३५ प्लव	४४ साधारण	५३ सिद्धार्थी
३६ शुभकृत	४५ विरोधकृत	५४ रौद्र
३७ शोभकृत	४६ परिधावी	५५ दुर्मति
३८ क्रोधी	४७ प्रमाथी	५६ दुन्दुभि
३९ विश्वावसु	४८ आनन्द	५७ रुधिरोद्गारी
४० पराभव	४९ राक्षस	५८ रक्ताक्षी
४१ प्लवंग	५० नल	५९ क्रोधन
४२ कीलक	५१ पिंगल	६० क्षय

प्रत्येक वर्ष एक विशेष संवत्सर रहता है, जिसका उल्लेख प्रत्येक शुभकार्य या संकल्प के साथ किया जाता है। किस वर्ष कौन-सा संवत्सर है, इसको जानने की विधि यह है—

शक वर्ष को दो स्थानों पर लिखो। एक स्थान पर २२ से गुणा कर ४२९१ जोड़ो, तथा उसमें १८७५ का भाग दो। जो लब्धि हो उसको दूसरे स्थान पर लिखे शक वर्षों में जोड़कर साठ का भाग देने से शेष जो बचे उसमें एक जोड़ देने से संवत्सरादि क्रम में संवत्सर होगा। उदाहरणार्थ—संवत् २०२८ में शक वर्ष १८९३ है (जो प्रत्येक पंचांग पर लिखा होता है)—

```
        १८९३
        ×२२
       ४१६४६
      +४२९१
१८७५)४५९३७(२४
      ३७५०
      ८४३७
      ७५००
       ९३७ त्वाज्य
```

```
      १८९३
      +२४
६०)१९१७(३१
    १८०
    ११७
     ६०
     ५७
     +१
     ५८
```

अर्थात् संवत्सरादि क्रम में ५८वाँ संवत्सर 'रक्ताक्षी' है, अतः संवत् २०२८ या शक वर्ष १८९३ 'रक्ताक्षी' संवत्सर कहलाएगा।

संवत्सर का फलित ज्योतिष में भी काफी महत्त्व माना गया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वार, तिथि | २

भारतीय ज्योतिष शास्त्र में सात वार माने गए हैं, जिनका क्रम इस प्रकार है—

१ रविवार
२ सोमवार या चन्द्रवार
३ मंगलवार
४ बुधवार
५ गुरुवार या बृहस्पतिवार
६ शुक्रवार
७ शनिवार

प्रश्न उठता है कि यह वारों का क्रम किस प्रकार बना ? क्या यह यों ही है, या इसके पीछे भी निश्चित सिद्धान्त है ?

उत्तर में निवेदन है कि वारों का यह क्रम भारतीयों की देन है, और इसके पीछे एक निश्चित सिद्धान्त है।

पृथ्वी से सबसे निकट ग्रह चन्द्रमा है, उससे दूर क्रमशः बुध, शुक्र, सूर्य, मंगल, गुरु तथा शनि है। उनमें सर्वाधिक तेजस्वी ग्रह सूर्य है, अतः प्रलय के उपरान्त ऋषियों ने पहली होरा सूर्य की ही मानी।

दिन-रात में २४ होरा होती हैं। ग्रह-क्रम से गणना कर २५वीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होरा पर जब सूर्योदय होगा तो वह होरा चन्द्रमा की होगी। उदाहरणार्थ—

सूर्य —	१	८	१५	२२
शुक्र —	२	९	१६	२३
बुध —	३	१०	१७	२४
चन्द्र —	४	११	१८	२५
शनि —	५	१२	१९	
गुरु —	६	१३	२०	
मंगल —	७	१४	२१	

पहली होरा सूर्य की मानकर चलें, तो २५वीं होरा चन्द्रमा की आई। चन्द्रमा से फिर गणना की तो २५वीं होरा मंगल की आई। इसी प्रकार क्रम से सूर्य के बाद चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि की होराएँ आईं। एतदर्थ वारों का क्रम भी इसी प्रकार रहा।

इस प्रकार सूक्ष्मता से देखने पर पता चलता है कि वारों का जो क्रम रखा है, इसके पीछे भी ठोस वैज्ञानिक आधार है।

जो वार होता है, उसका अधिपति भी वही ग्रह होता है, अर्थात् रविवार का स्वामी सूर्य, सोमवार का स्वामी चन्द्र, मंगलवार का स्वामी मंगल, आदि इसी प्रकार समझना चाहिए।

नीचे वार-नाम, उनकी संज्ञा, स्वभाव तथा फल स्पष्ट किया जा रहा है—

क्रमसंख्या	वार	स्वभाव	संज्ञा	फल-विशेष
१	रविवार	क्रूर	स्थिर	गायनादि के लिए
२	सोमवार	सौम्य	चर	शुभ कार्य हेतु
३	मंगलवार	क्रूर	उग्र	जुआ आदि हेतु
४	बुधवार	सौम्य	सम	व्यापारादि के लिए
५	गुरुवार	सौम्य	मृदु	विद्यारंभ हेतु
६	शुक्रवार	सौम्य	मृदु	वाद-विवाद हेतु
७	शनिवार	क्रूर	तीक्ष्ण	चिकित्सा आदि

उपर्युक्त चक्र देखने से यह स्पष्ट होता है कि रविवार क्रूर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वभाव का होता है तथा स्थिर प्रकृति का है। यह वार गायन आदि कार्य प्रारंभ करने के लिए शुभ है। इसी प्रकार सोमवार सौम्य स्वभाव तथा चर प्रकृति का होने के साथ-साथ किसी भी शुभ कार्य को प्रारंभ करने हेतु श्रेष्ठ माना गया है।

इसके साथ ही मैं वार-कष्टावली भी स्पष्ट कर रहा हूँ।

वार	वार-स्वामी	कष्ट-दिवश	दान
रविवार	शिव	५	दुग्धदान
सोमवार	गौरी	८	भोजनदान
मंगलवार	स्कन्द	५	दुग्धदान
बुधवार	विष्णु	७	अन्नदान
गुरुवार	ब्रह्मा	५	घृत पक्वान्नदान
शुक्रवार	इन्द्र	७	मधुदान
शनिवार	यम	१५	मापान्नदान

ऊपर चक्र में यह स्पष्ट है कि यदि कोई व्यक्ति या बालक रविवार को बीमार पड़े, तो उसे शिव-स्मरण करना चाहिए। उसका रोग-कष्ट लगभग पाँच दिन तक रहेगा तथा शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ हेतु उसे दूध का दान देना चाहिए। इसी प्रकार अन्य वारों में भी समझना चाहिए।

चन्द्रमा की एक कला को तिथि कहा जाता है, इसका सूर्य और चन्द्रमा के अन्तरांशों पर से मान निकाला जाता है। अमावस्या से पूर्णिमा तक्र की तिथियाँ शुक्ल पक्ष की तथा पूर्णिमा से अमावस्या तक की तिथियाँ कृष्ण पक्ष की तिथियाँ कही जाती हैं।

तिथियों को १, २, ३ आदि अंकों से सूचित करते हैं, अर्थात् १ का अर्थ एकम या प्रतिपदा, २ का अर्थ दूज या द्वितीया, इसी प्रकार आगे भी समझना चाहिए। पूर्णिमा को १५ की संख्या से सूचित करते हैं, तथा अमावस्या को ३० के अंक से।

मुस्लिम पद्धति, गुजरात आदि में शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से महीने का प्रारंभ मानते हैं, इस प्रकार पुनः अमावस्या आने पर तीस तिथियाँ व्यतीत हो जाती हैं, इसीलिए अमावस्या को ३० की संज्ञा से विभूषित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF
करते हैं। ज्योतिष-शास्त्र में भी तिथियों की गणना शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से की जाती है।

नीचे तिथियों के सूचक अंक एवं उनके संबोधनवाची नाम दिये जा रहे हैं—

तिथियाँ	प्रसिद्ध सम्बोधनवाची नाम
१	एकम, प्रतिपदा
२	दूज, द्वितीया
३	तीज, तृतीया
४	चौथ, चतुर्थी
५	पाँचम, पंचमी
६	छठ, षष्ठी
७	सातम, सप्तमी
८	आठम, अष्टमी
९	नम, नवमी
१०	दसम, दशमी
११	ग्यारस, एकादशी
१२	बारस, द्वादशी
१३	तेरस, त्रयोदशी
१४	चवदश, चतुर्दशी
१५	पूनम, पूर्णिमा
३०	अमावस, अमावस्या

तिथियों को समझने के उपरान्त तिथियों के स्वामी पर भी विचार कर लेना आवश्यक है। प्रत्येक तिथि का अधिपति एक देवता है, जिन्हें तिथियों के स्वामी भी कह सकते हैं, वे इस प्रकार हैं—

तिथियों के स्वामी

तिथियाँ	स्वामी	तिथियाँ	स्वामी
१	अग्नि	४	गणेश
२	ब्रह्मा	५	शेष
३	गौरी	६	कार्तिकेय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तिथियाँ	स्वामी	तिथियाँ	स्वामी
७	सूर्य	१२	विष्णु
८	शिव	१३	कामदेव
९	दुर्गा	१४	शिव
१०	काल	१५	चन्द्रमा
११	विश्वदेव	३०	पितृदेव

जिन तिथियों के जो स्वामी हैं, उन देवताओं की पूजा या प्रतिष्ठा आदि उन्हीं तिथियों में करने से विशेष शुभदायक होता है।

ज्योतिष-क्षेत्र में प्रवेश करने से पूर्व तिथियों के बारे में कुछ और जानकारी भी जरूरी है।

तिथियों की संज्ञाएँ

कुल पन्द्रह तिथियों को पाँच भागों में बाँटा गया है, जिनके नाम नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता और पूर्णा हैं।

१	६	११	तिथियों	का	नाम	'नन्दा' है।
२	७	१२	,,	,,	,,	'भद्रा' है।
३	८	१३	,,	,,	,,	'जया' है।
४	९	१४	,,	,,	,,	'रिक्ता' है।
५	१०, १५ या ३०		,,	,,	,,	'पूर्णा' है।

शुभ कार्य में भी ये तिथियाँ शुक्ल पक्ष में अधम, मध्यम तथा उत्तम एवं कृष्ण पक्ष में उत्तम, मध्यम, अधम होती हैं। नीचे के चक्र से यह भली-भाँति समझा जा सकता है—

शुक्ल पक्ष में—

	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा
अधम	१	२	३	४	५
मध्यम	६	७	८	९	१०
उत्तम	११	१२	१३	१४	१५

कृष्ण पक्ष में

	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा
उत्तम	१	२	३	४	५
मध्यम	६	७	८	९	१०
अधम	११	१२	१३	१४	१५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्थात् शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा अधम, शुभ कार्यों में वर्ज्य, षष्ठी मध्यम तथा एकादशी उत्तम है, जबकि ये तीनों ही तिथियाँ 'नंदा' संज्ञा से विभूषित हैं। इसके विपरीत कृष्ण पक्ष में प्रतिपदा शुभ कार्यों के लिए उत्तम, षष्ठी मध्यम तथा एकादशी अधम मानी गई है।

सिद्धा तिथियाँ—

ऊपर उत्तम, मध्यम तथा अधम तिथियों को स्पष्ट किया, पर यदि दोनों ही पक्षों (कृष्ण पक्ष अथवा शुक्ल पक्ष) में से किसी भी पक्ष में नन्दा तिथियों को शुक्रवार, भद्रा तिथियों को बुधवार, जया तिथियों को मंगलवार, रिक्ता तिथियों को शनिवार या पूर्णा तिथियों को गुरुवार हो तो उनका अशुभ दोष मिटकर वे सिद्ध, सफलतादायक एवं श्रेष्ठ तिथियाँ बन जाती हैं; स्पष्टता के लिए नीचे का चक्र प्रस्तुत है—

तिथि-संज्ञा	तिथियाँ	संबंधित वार
नन्दा	१, ६, ११	शुक्रवार
भद्रा	२, ७, १२	बुधवार
जया	३, ८, १३	मंगलवार
रिक्ता	४, ५, १४	शनिवार
पूर्णा	५, १०, १५ या ३०	गुरुवार

मृतसंज्ञक तिथियाँ

मृतसंज्ञक तिथियाँ अशुभ होती हैं, तथा इनमें कोई भी शुभ कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। रविवार को नंदा, सोम को भद्रा, मंगल को नंदा, बुध को जया, गुरु को रिक्ता, शुक्र को भद्रा, तथा शनि को पूर्णा तिथियाँ होने पर वे मृतसंज्ञक तिथियाँ कहलाती हैं। नीचे के चक्र में यह स्पष्ट है—

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१	२	१	३	४	२	५
६	७	६	८	९	७	१०
११	१२	११	१३	१४	१२	१५
नंदा	भद्रा	नंदा	जया	रिक्ता	भद्रा	पूर्णा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अधम तिथियाँ—

शनिवार को षष्ठी, शुक्र को सप्तमी, गुरु को अष्टमी, बुध को प्रतिपदा एवं नवमी, मंगल को दशमी, सोम को एकादशी, रविवार को सप्तमी तथा द्वादशी तिथियाँ होने पर वे अधम तिथियाँ कहलाती हैं। किसी भी प्रकार का शुभ कार्य इन तिथियों में वर्जनीय है—

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
तिथियाँ	७	११	१०	१	८	७	६
	१२			९			

दग्ध तिथियाँ—

रवि को १२, सोम को ११, मंगल को ५, बुध को ३, गुरु को ६, शुक्र को ८ तथा शनि को ९ तिथि हो तो वे दग्ध तिथियाँ कहलाती हैं। शुभ कार्यों में इन्हें छोड़ देना चाहिए।

विषाख्य तिथियाँ

रवि को ४, सोम को ६, मंगल को ७, बुध को २, गुरु को ८ तथा शनि को ७ तिथि होने हर वे विषाख्य या विष-तिथियाँ कहलाती हैं।

हुताशन तिथियाँ—

रवि को १२, सोम को ६, मंगल को ७, बुध को ८, गुरु को ९, शुक्र को १० तथा शनि को ११ तिथि होने पर वे हुताशन तिथियाँ कहलाती हैं।

विषाख्य तथा हुताशन तिथियाँ भी शुभ कार्यों में निषिद्ध मानी गई हैं।

आगे के चक्र में दग्ध, विषाख्य तथा हुताशन तिथियों को भली प्रकार समझाया है—

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
दग्ध	१२	११	५	३	६	८	९
विषाख्य	४	६	७	२	८	९	७
हुताशन	१२	६	७	८	९	१०	११

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मास-शून्य तिथियाँ—

मास-शून्य तिथियाँ ज्योतिष में शुभ नहीं मानी जातीं। ये इस प्रकार हैं—

मास	तिथियाँ
चैत्र	दोनों पक्षों की अष्टमी और नवमी।
वैशाख	दोनों पक्षों की द्वादशी।
ज्येष्ठ	कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी और शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी।
आषाढ़	कृष्ण पक्ष की षष्ठी और शुक्ल पक्ष की सप्तमी।
श्रावण	दोनों पक्षों की द्वितीया और तृतीया।
भाद्रपद	दोनों पक्षों की प्रतिपदा और द्वितीया।
आश्विन	दोनों पक्षों की दशमी और एकादशी।
कार्तिक	कृष्ण पक्ष की पंचमी और शुक्लपक्ष की चतुर्दशी।
मार्गशीर्ष	दोनों पक्षों की सप्तमी और अष्टमी।
पौष	दोनों पक्षों की चतुर्थी और पंचमी।
माघ	कृष्ण पक्ष की पंचमी और शुक्ल पक्ष की षष्ठी।
फाल्गुन	कृष्ण पक्ष की चतुर्थी और शुक्ल पक्ष की तृतीया।

पक्ष-रन्ध्र तिथियाँ—

चतुर्दशी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, द्वादशी और चतुर्दशी, ये पक्ष-रन्ध्र तिथियाँ कहलाती हैं। शुभ कार्य यथासंभव इन तिथियों से प्रारंभ न करें।

मन्वादि तिथियाँ—

चैत्र शुक्ला तृतीया और पूर्णमासी
कार्तिक शुक्ला द्वादशी व पूर्णमासी
आषाढ़ शुक्ला दशमी व पूर्णमासी
ज्येष्ठ की पूर्णमासी
फाल्गुन की पूर्णमासी
आश्विन शुक्ला नवमी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

माघ शुक्ला सप्तमी
पौष शुक्ला एकादशी
भाद्रपद शुक्ला तृतीया
श्रावन कृष्ण अष्टमी व अमावस्या

उपर्युक्त मन्वादि तिथियाँ कहलाती हैं, एतदर्थ शुभ कार्य इन तिथियों में वर्ज्य हैं।

युगादि तिथियाँ

युगादि तिथियों में भी विवाहादि शुभ कार्य प्रारंभ नहीं करना चाहिए। तिथियाँ इस प्रकार हैं—

कार्तिक शुक्ला नवमी
वैशाख शुक्ला तृतीया
भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी
माघ कृष्ण अमावस्या

उपर्युक्त चारों तिथियाँ युगादि तिथियाँ कहलाती हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३ | नक्षत्र

ताराओं का समूह नक्षत्र कहलाता है। किसी नक्षत्र में दो या तीन तारे होते हैं, तो किसी में सैकड़ों-हजारों। विभिन्न रूपों में यथा अश्व, सर्प आदि आकारों में जो तारापुंज दिखाई देते हैं, उन्हें ही नक्षत्रों की संज्ञा दी गई है।

समस्त आकाश-मण्डल को ज्योतिर्विदों ने सत्ताईस भागों में विभक्त कर दिया है, और प्रत्येक भाग का नाम एक-एक नक्षत्र रक्खा है। आकाश-मण्डल के किसी भी स्थान को समझने के लिए नक्षत्रों का ही सहारा लिया जा सकता है; आकाश-मण्डल की दूरी भी नक्षत्रों से ही नापी जाती है।

उदाहरणार्थ यह पूछा जाय कि दिल्ली में लाल किला कहाँ स्थित है तो अनजान अपरिचित व्यक्ति को समझाने के लिए कहा जाएगा कि लालकिला चाँदनी चौक से इतने फर्लांग इस दिशा में दूर है। इस प्रकार कोई ग्रह कहाँ स्थित है, तो उसको समझाने के लिए कहा जाएगा कि अमुक ग्रह, अमुक नक्षत्र के इतना पास या दूर है। इस प्रकार बताने से ज्योतिर्विद् तुरन्त उस ग्रह की वास्तविक स्थिति समझ लेगा कि अमुक ग्रह आकाश-मण्डल में कहाँ पर स्थित है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूक्ष्मता से समझने के लिए प्रत्येक नक्षत्र के चार भाग कर लिये हैं, जिन्हें चरण कहा जाता है। सत्ताईस नक्षत्रों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं—

१	अश्विनी	२	भरणी
३	कृत्तिका	४	रोहिणी
५	मृगशिरा	६	आर्द्रा
७	पुनर्वसु	८	पुष्य
९	आश्लेषा	१०	मघा
११	पूर्वा फाल्गुनी	१२	उत्तरा फाल्गुनी
१३	हस्त	१४	चित्रा
१५	स्वाति	१६	विशाखा
१७	अनुराधा	१८	ज्येष्ठा
१९	मूल	२०	पूर्वाषाढ़ा
२१	उत्तराषाढ़ा	२२	श्रवण
२३	धनिष्ठा	२४	शतभिषा
२५	पूर्वा भाद्रपद	२६	उत्तरा भाद्रपद
२७	रेवती		

इन सत्ताईस नक्षत्रों के अतिरिक्त अभिजित् को अट्ठाईसवाँ नक्षत्र माना है। ज्योतिर्विदों के मतानुसार उत्तराषाढ़ा का उत्तरार्द्ध तथा श्रवण का पूर्वार्द्ध मिलाकर जो नक्षत्र बनता है वह 'अभिजित' है, यह नक्षत्र प्रत्येक कार्य में शुभ माना गया है।

अभिजित् को मानने पर भी मुख्यतः सत्ताईस नक्षत्रों को ही मान्यता प्राप्त है।

मानव-शरीर को पूरा आकाश-मण्डल मानकर उसमें इन सत्ताईस नक्षत्रों की स्थिति मानी है। रुद्र-कृत 'होरा शास्त्र' में इसका पूर्ण विवरण है। वह इस प्रकार है—

मानव-शरीर में नक्षत्र-स्थिति

क्रम-संख्या	नक्षत्र	तारा	मानव-शरीर-भाग
१	अश्विनी	३	पैरों के ऊपरी भाग में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

२	भरणी	३.	[illegible]
३	कृत्तिका	६ -१	शिर में
४	रोहिणी	५.	भाल में
५	मृगशिरा	१० - ३	भौहों में
६	आर्द्रा	१	आँखों में
७	पुनर्वसु	४	नाक में
८	पुष्य	—	चेहरे में
९	आश्लेषा		कानों में
१०	मघा	.	होठों में
११	पूर्वा फाल्गुनी	२	दाहिने हाथ में
१२	उत्तरा फाल्गुनी	२.	बायें हाथ में
१३	हस्त	५	अँगुलियों में
१४	चित्रा	१	ग्रीवा में
१५	स्वाति	१	सीने में
१६	विशाखा		छाती में
१७	अनुराधा		उदर में
१८	ज्येष्ठा		आमाशय में
१९	मूल		कोख में
२०	पूर्वाषाढ़ा		पीठ में
२१	उत्तराषाढ़ा		रीढ़ में
२२	श्रवण	३	कमर में
२३	धनिष्ठा	५.	गुदा में
२४	शतभिषा		दाहिनी जंघा में
२५	पूर्वा भाद्रपद	२ -	बाईं जंघा में
२६	उत्तरा भाद्रपद	२ -	पिंडली में
२७	रेवती		टखने में

गोचरवश जब-जब पाप-ग्रह या अष्टमेश अथवा षष्ठेश इन नक्षत्रों पर आवें, तब-तब इनसे संबंधित शरीर के अंगों में पीड़ा या कष्ट उत्पन्न करते हैं। इस दृष्टि से ज्योतिष-विद्यार्थियों को इनका ज्ञान रखना बहुत जरूरी है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्योतिष-ग्रंथों में नक्षत्रों के कुछ पारिभाषिक शब्द भी मिलते हैं, अथवा पर्याय के रूप में प्रयुक्त होते हैं। वे इस प्रकार हैं—

क्रम संख्या	नक्षत्र नाम	संस्कृत के पर्यायवाची शब्द	सांकेतिक अक्षर
१	अश्विनी	दस्र, अश्वियुग, हया	अ०
२	भरणी	यम, याम्य	भ०
३	कृत्तिका	हुताशन, अग्नि, वहुला	कृ०
४	रोहिणी	विधि, विरंचि	रो०
५	मृगशिरा	सौम्य, चन्द्र, उडुव	मृग०
६	आर्द्रा	तारका, रौद्र	आ०
७	पुनर्वसु	अदिति, सुरजननी	पुन०
८	पुष्य	तिष्य, अमरेज्य	पु०
९	आश्लेषा	अहि, भुजंग, सर्प	आश्ले०
१०	मघा	जनक, पितृ	म०
११	पूर्वा फाल्गुनी	भाग्य, फाल्गुनी, पूर्व भग	पू० फा०
१२	उत्तरा फाल्गुनी	अर्यभा, उत्तरभग	उ० फा०
१३	हस्त	भानु, अर्क	ह०
१४	चित्रा	त्वष्ट्रा	चि०
१५	स्वाति	वात, वायु, समीर,	स्वा०
१६	विशाखा	द्विदैवत, इन्द्राग्नि	विशा०
१७	अनुराधा	मैत्र	अनु०
१८	ज्येष्ठा	शतमख, सुरस्वामी	ज्ये०
१९	मूल	असुर, कृतभुज	मू०
२०	पूर्वाषाढ़ा	पय, सलिल, जल	पू० षा०
२१	उत्तराषाढ़ा	विश्व	उ० षा०
२२	श्रवण	श्रोणा, विष्ण, हरि	श्र०
२३	धनिष्ठा	वसु	ध०
२४	शतभिषा	प्रचेता, शततारका	शत०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२५	पूर्वाभाद्रपद	अजैकपाद, अजपात्	पू० भा०
२६	उत्तराभाद्रपद	अहिर्बुध्न्य, उत्तरा	उ० भा०
२७	रेवती	पूषा, पौष्ठा	रे०

नक्षत्रों के पर्यायवाची शब्द जान लेने के साथ ही साथ नक्षत्रों के स्वामी के बारे में ज्ञान प्राप्त कर लेना भी जरूरी है—

क्र० सं०	नक्षत्र	स्वामी
१	अश्विनी	अश्विनी कुमार
२	भरणी	काल
३	कृत्तिका	अग्नि
४	रोहिणी	ब्रह्मा
५	मृगशिरा	चन्द्रमा
६	आर्द्रा	रुद्र
७	पुनर्वसु	अदिति
८	पुष्य	बृहस्पति
९	आश्लेषा	सर्प
१०	मघा	पितर
११	पूर्वाफाल्गुनी	भग
१२	उत्तराफाल्गुनी	अर्यमा
१३	हस्त	सूर्य
१४	चित्रा	विश्वकर्मा
१५	स्वाति	पवन
१६	विशाखा	शुक्राग्नि
१७	अनुराधा	मित्र
१८	ज्येष्ठा	इन्द्र
१९	मूल	निर्ऋति
२०	पूर्वाषाढ़ा	जल
२१	उत्तराषाढ़ा	विश्वदेव
२२	श्रवण	विष्णु
२३	धनिष्ठा	वसु
२४	शतभिषा	वरुण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२५	पूर्वाभाद्रपद	अजैकपाद्
२६	उत्तराभाद्रपद	अहिर्बुध्न्य
२७	रेवती	पूषा

उपर्युक्त नक्षत्रों को सात्विक, राजस और तामस तीन भेदों में विभक्त कर सकते हैं। इन्हीं गुणों के कारण कभी शुभ नक्षत्र भी अशुभ फल, तो कभी अशुभ नक्षत्र भी शुभ फल देते दिखाई दिये हैं। ज्योतिष-प्रेमियों को नक्षत्रों की प्रकृति जानकर ही भविष्यफल कहना चाहिए—

गुण-भेद-नक्षत्र-चक्र

सात्विक नक्षत्र	तामस नक्षत्र	राजस नक्षत्र
पुनर्वसु	अश्विनी	कृत्तिका
विशाखा	मघा	उत्तराफाल्गुनी
पूर्वाभाद्रपद	मूल	उत्तराषाढ़ा
आश्लेषा	आर्द्रा	रोहिणी
ज्येष्ठा	स्वाति	हस्त
रेवती	शतभिषा	श्रवण
	मृगशिरा	भरणी
	चित्रा	पूर्वाफाल्गुनी
	धनिष्ठा	पूर्वाषाढ़ा
	पुष्य	
	अनुराधा	
	उत्तराभाद्रपद	

नक्षत्रों के गुण-भेद के साथ ही साथ लिंग-भेद पर भी विचार कर लेना आवश्यक होगा। लिंग-भेद के अन्तर्गत भी इन सत्ताईस नक्षत्रों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है—पुल्लिग, स्त्रीलिंग, नपुंसक लिंग।

पुल्लिग नक्षत्रों में पुरुष तत्व की प्रधानता, स्त्रीलिंग नक्षत्रों में स्त्री तत्व की प्रधानता तथा नपुंसक लिंग नक्षत्रों में पुरुष तत्व तथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्त्री तत्व की समानता रहती है—

लिंग-भेद-नक्षत्र-चक्र

पुल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसक लिंग
अश्विनी	भरणी	मृगशिरा
पुनर्वसु	कृत्तिका	मूल
पुष्य	रोहिणी	शतभिषा
हस्त	आर्द्रा	,,
अनुराधा	आश्लेषा	,,
श्रवण	मघा	,,
पूर्वाभाद्रपद	पूर्वाफाल्गुनी	,,
उत्तराभाद्रपद	चित्रा	,,
,,	स्वाति	,,
,,	विशाखा	,,
,,	ज्येष्ठा	,,
,,	पूर्वाषाढ़ा	,,
,,	उत्तराषाढ़ा	,,
,,	धनिष्ठा	,,
,,	रेवती	,,

इसके अतिरिक्त अश्विनादि सत्ताईस नक्षत्रों को अन्य संज्ञाओं में भी विभाजित कर सकते हैं। जो इस प्रकार से हैं—

स्थिर संज्ञक नक्षत्र—उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद और रोहिणी—ये चार नक्षत्र स्थिर संज्ञक नक्षत्र कहलाते हैं। बीज बोना, स्थिर कार्य, घर बनवाना, शांतिकार्य प्रारम्भ करना श्रेष्ठ माना गया है।

चर संज्ञक नक्षत्र—स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, और शतभिषा—ये पाँच नक्षत्र चर संज्ञक कहलाते हैं। यात्रा, सवारी करना आदि कार्यों के लिए ये नक्षत्र शुभ माने गए हैं।

उग्र संज्ञक नक्षत्र—पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी और मघा—ये पाँच नक्षत्र उग्र संज्ञक माने गए हैं। इन नक्षत्रों में उग्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कार्य, मारक, अग्नि से सम्बन्धित कार्य, युद्धादि प्रारम्भ करना शुभ माना गया है।

मिश्र संज्ञक नक्षत्र—विशाखा और कृत्तिका—ये दो नक्षत्र मिश्र संज्ञक माने गए हैं। इसमें अग्निहोत्र, वृषोत्सर्ग आदि कार्य उचित माने गए हैं।

लघु संज्ञक नक्षत्र—हस्त, अश्विनी, पुष्य और अभिजित्—ये चार नक्षत्र लघु संज्ञक माने गए हैं। क्रय-विक्रय, आभूषण-निर्माण, स्त्री-संभोग, कलादि सीखना, विद्यारंभ आदि के लिए ये नक्षत्र शुभ माने गए हैं।

मृदु संज्ञक नक्षत्र—मृगशिरा, रेवती, चित्रा और अनुराधा—ये चार नक्षत्र मृदु या मैत्र संज्ञक कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में मैत्र-कार्य, गाना, नवीन वस्त्र धारण आदि शुभ माने गए हैं।

दारुण संज्ञक नक्षत्र—मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा और आश्लेषा—ये चार दारुण संज्ञक नक्षत्र हैं। इनमें हिंस्र, लूटपाट आदि भयानक कार्य उचित माने गए हैं।

अधोमुख संज्ञक नक्षत्र—आश्लेषा, विशाखा, मूल, कृत्तिका, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, भरणी और मघा नक्षत्र अधोमुख संज्ञक कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में कुआँ, तालाब खुदवाना आदि शुभ हैं।

ऊर्ध्वमुख संज्ञक नक्षत्र—आर्द्रा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा—ये ऊर्ध्वमुख संज्ञक नक्षत्र कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में राज्याभिषेक, पट्टबन्द, मकान बनाना आदि शुभ है।

तिर्यङ्मुख संज्ञक नक्षत्र—अनुराधा, हस्त, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, स्वाति और अश्विनी—ये तिर्यङ्मुख संज्ञक नक्षत्र कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में यात्रा, वाहन, क्रय-विक्रय शुभ माना गया है।

दग्ध संज्ञक नक्षत्र—भरणी नक्षत्र को रविवार, चित्रा को सोमवार, उत्तराषाढ़ा को मंगलवार, धनिष्ठा को बुधवार, उत्तराफाल्गुनी को गुरुवार, ज्येष्ठा को शुक्रवार और रेवती को शनिवार हो तो ये नक्षत्र दग्ध संज्ञक कहलाते हैं। इन दिनों किसी भी प्रकार का शुभ कार्य वर्जित है।

पंचक संज्ञक नक्षत्र—धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तरा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाद्रपद और रेवती—ये पाँच नक्षत्र पंचक संज्ञक कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में अशुभ व क्रूर कार्य न करें, पर शुभकार्य प्रारम्भ कर सकते हैं।

मूल संज्ञक नक्षत्र—ज्येष्ठा, आश्लेषा, रेवती, मघा, मूल और अश्विनी—ये नक्षत्र मूल संज्ञक कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में बालक के जन्म लेने पर ग्रह-शांति करा लेना शुभ माना जाता है।

ध्रुव संज्ञक नक्षत्र—उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद तथा रोहिणी नक्षत्र ध्रुव संज्ञक कहलाते हैं। ये नक्षत्र कार्य में बाधा उपस्थित करते हैं।

मासशून्य नक्षत्र—

चैत्र	अश्विनी, रोहिणी
वैशाख	स्वाति, चित्रा
ज्येष्ठ	उत्तराषाढ़ा, पुष्य
आषाढ़	धनिष्ठा, पूर्वाफाल्गुनी
श्रावण	उत्तराषाढ़ा, श्रवण
भाद्रपद	शतभिषा, रेवती
आश्विन	पूर्वाभाद्रपद
कार्तिक	कृत्तिका, मघा
मार्गशीर्ष	चित्रा, विशाखा
पौष	आर्द्रा, अश्विनी, हस्त
माघ	श्रवण, मूल
फाल्गुन	ज्येष्ठा, भरणी

उपर्युक्त नक्षत्र 'मास शून्य नक्षत्र' कहलाते हैं, तथा किसी भी प्रकार का शुभकार्य इन नक्षत्रों में प्रारंभ करना वर्जित है।

उदाहरणार्थ चैत्र मास में अश्विनी और रोहिणी नक्षत्र शुभ कार्यों के लिये त्याज्य हैं, इसी प्रकार वैशाख मास में स्वाति और चित्रा नक्षत्र वर्जित हैं।

गण्ड नक्षत्र— (मूल)

आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल, रेवती तथा अश्विनी, ये छः नक्षत्र गण्ड नक्षत्र कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न बालक जीवित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रहे, तो अतुल ऐश्वर्य का स्वामी होता है।

गण्ड नक्षत्रों पर बालक के जन्म लेने से क्या फल होता है, इसका संक्षेप में वर्णन स्पष्ट कर रहा हूँ—

मूल नक्षत्र

१	चरण	पितृ नाश
२	,,	मातृ नाश
३	,,	धन नाश
४	,,	सुख-वृद्धि

आश्लेषा

१	चरण	सुख, शुभ फल
२	,,	धन-नाश
३	,,	मातृ नाश
४	,,	पितृ नाश

मघा

१	चरण	मातृ हानि
२	,,	पितृ भय
३	,,	सुख
४	,,	धन-लाभ

ज्येष्ठा

१	चरण	बड़े भाई की मृत्यु
२	,,	छोटे भाई को दुःख
३	,,	मातृ नाश
४	,,	आत्मघात

रेवती

१	चरण	राजा के तुल्य यशस्वी
२	,,	मंत्री
३	,,	सुख-सम्पत्ति-युक्त
४	,,	विविध कष्ट-सम्पन्न

अश्विनी

१	चरण	पिता को भय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२	चरण	सुख-ऐश्वर्य
३	,,	मंत्री
४	,,	राजा के समान।

गण्ड नक्षत्रों में बालक का जन्म हो तो पिता को चाहिए कि वह ग्रह-शांति करा दे।

नक्षत्र : ग्रह स्वामी

ज्योतिष-जगत् में मुख्यतः नौ ग्रह और सत्ताईस नक्षत्र माने गये हैं। प्रत्येक ग्रह तीन-तीन नक्षत्रों का स्वामी है। वे इस प्रकार हैं—

क्र० सं०	ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र	नक्षत्र
१	सूर्य	कृत्तिका	उ० फाल्गुनी	उत्तराषाढ़ा
२	चन्द्रमा	रोहिणी	हस्त	श्रवण
३	मंगल	मृगशिरा	चित्रा	धनिष्ठा
४	राहु	आर्द्रा	स्वाति	शतभिषा
५	गुरु	पुनर्वसु	विशाखा	पूर्वाभाद्रपद
६	शनि	पुष्य	अनुराधा	उत्तराभाद्रपद
७	बुध	आश्लेषा	ज्येष्ठा	रेवती
८	केतु	मघा	मूल	अश्विनी
९	शुक्र	पूर्वाफाल्गुनी	पूर्वाषाढ़ा	भरणी

इनमें से सूर्य की ६ वर्ष, चन्द्रमा की १० वर्ष, मंगल की ७ वर्ष, राहु की १८ वर्ष, गुरु की १६ वर्ष, शनि की १९ वर्ष, बुध की १७ वर्ष, केतु की ७ वर्ष, तथा शुक्र की २० वर्षों की विंशोत्तरी दशा मानी गई है।

नक्षत्र-चरणाक्षर

जैसा कि मैं पहले ही कह चुका हूँ कि सूक्ष्मता के लिए प्रत्येक नक्षत्र के चार भाग कर लिये हैं, जिन्हें चरण कहा जाता है। इस प्रकार प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते हैं।

इस प्रत्येक चरण से सम्बन्धित एक अक्षर माना गया है। बालक नक्षत्र के जिस चरण में जन्म लेता है, उस चरण से सम्बन्धित जो अक्षर होता है, वही बालक के नाम का आदि अक्षर होता है।

उदाहरणार्थ यदि किसी बालक का जन्म अश्विनी के दूसरे चरण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में हो तो इस दूसरे चरण से संबंधित अक्षर है 'चे', अतः उस बालक का नाम 'चेलाराम', 'चेनूसिंह', 'चेनकरण' आदि रखा जाएगा।

पाठकों की सुविधा के लिए प्रत्येक नक्षत्र के सामने चार-चार अक्षर लिखे जा रहे हैं। इनमें पहला अक्षर पहले चरण का, दूसरा अक्षर दूसरे चरण का, तीसरा अक्षर तीसरे चरण का तथा चौथा अक्षर चौथे चरण का प्रतिनिधित्व करता है।

नक्षत्र और उसके चरणाक्षर इस प्रकार हैं—

क्र० सं०	नक्षत्र	चरणाक्षर
१	अश्विनी	चू, चे, चो, ला
२	भरणी	ली, लू, ले, लो
३	कृत्तिका	आ, ई, ऊ, ए
४	रोहिणी	ओ, वा, वी, वू
५	मृगशिरा	वे, वो, का, की
६	आर्द्रा	कू, घ, ङ, छ
७	पुनर्वसु	के, को, हा, ही
८	पुष्य	हू, हे, हो, हा
९	आश्लेषा	डो, डू, डे, डो
१०	मघा	मा, मी, मू, मे
११	पूर्वाफाल्गुनी	मो, टा, टी, टू
१२	उत्तराफाल्गुनी	टे, टो, पा, पी
१३	हस्त	पू, ष, ण, ठ
१४	चित्रा	पे, पो, रा, री
१५	स्वाति	रू, रे, रो, ता
१६	विशाखा	ती, तू, ते, तो
१७	अनुराधा	ना, नी, नू, ने
१८	ज्येष्ठा	नो, या, यी, यू
१९	मूल	ये, यो, भा, भी
२०	पूर्वाषाढ़ा	भू, धा, फा, ढ़ा
२१	उत्तराषाढ़ा	भे, भो, जा, जी
२२	श्रवण	खी, खू, खे, खो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्र०सं०	नक्षत्र	चरणाक्षर
२३	धनिष्ठा	गा, गी, गू, गे
२४	शतभिषा	गो, सा, सी, सू
२५	पूर्वाभाद्रपद	से, सो, दा, दी
२६	उत्तराभाद्रपद	दू, थ, झ, ञ
२७	रेवती	दे, दो, चा, ची

नक्षत्र और उसके चरणों में ह्रस्व और दीर्घ का अन्तर नहीं माना जाता। यथा, विशाखा के दूसरे चरण में जन्म होने पर 'त' अक्षर होता है, इस पर तुलसीराम नाम भी रखा जा सकता है और तूमर सिंह भी। संयुक्ताक्षर होने पर आद्य अक्षर ही स्वीकार्य होगा।

सवा दो नक्षत्र मिलकर एक राशि का निर्माण करते हैं। यथा, अश्विनी के चारों चरण, भरणी के चारों चरण तथा कृत्तिका का एक चरण मिलकर मेष राशि का निर्माण करते हैं। स्पष्टता के लिए 'नक्षत्र-राशि-चक्र' दिया जा रहा है—

नक्षत्र-राशि-चक्र

राशि	नक्षत्र	नक्षत्र	नक्षत्र
मेष	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका १ चरण
वृष	कृत्तिका ३ चरण	रोहिणी	मृगशिरा २ चरण
मिथुन	मृगशिरा २ चरण	आर्द्रा	पुनर्वसु ३ चरण
कर्क	पुनर्वसु १ चरण	पुष्य	आश्लेषा
सिंह	मघा	पू०फाल्गुनी	उत्तराफाल्गुनी १ चरण
कन्या	उ०फा०३ चरण	हस्त	चित्रा २ चरण
तुला	चित्रा २ चरण	स्वाति	विशाखा ३ चरण
वृश्चिक	विशाखा १ चरण	अनुराधा	ज्येष्ठा
धनु	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा १ चरण
मकर	उत्तराषाढ़ा ३ चरण	श्रवण	धनिष्ठा २ चरण
कुम्भ	धनिष्ठा २ चरण	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद ३ चरण
मीन	पूर्वाभाद्रपद १ चरण	उत्तरा भाद्रपद	रेवती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जैसा कि पृष्ठ ४१ पर बताया जा चुका है, प्रत्येक राशि में सवा दो नक्षत्र होते हैं, तथा एक नक्षत्र में चार चरण होते हैं, इस प्रकार प्रत्येक राशि में नौ चरण भुक्त होते हैं। नीचे प्रत्येक राशि के सामने नक्षत्रानुसार अक्षर दिये जा रहे हैं।

जिस राशि के सामने जो अक्षर हैं, यदि किसी व्यक्ति का इन अक्षरों से नाम का प्रथमाक्षर प्रारम्भ होता है, तो उसके सामने अंकित राशि ही उस व्यक्ति की राशि होगी—

क्र० सं०	राशि	सम्बन्धित अक्षर
१	मेष	चू चे चो ला ली लू ले लो अ
२	वृष	ई उ ए ओ वा वी वू वे वो
३	मिथुन	का की कू घ ङ छ के को ह
४	कर्क	ही हू हे हो डा डी डू डे डो
५	सिंह	मा मी मू मे मो टा टी टू टे
६	कन्या	टो पा पी पू ष ण ठ पे पो
७	तुला	रा री रू रे रो ता ती तू ते
८	वृश्चिक	तो ना नी नू ने नो या यी यू
९	धनु	ये यो भा भी भू धा फा ढ़ा भे
१०	मकर	भो जा जी खी खू खे खो गा गी
११	कुंभ	गू गे गो सा सी सू से सो दा
१२	मीन	दी दू थ झ ञ दे दो चा ची

सामने के पृष्ठ पर नक्षत्रों के बारे में कुछ और जानकारी दी जा रही है, जिसे जानना ज्योतिष-विद्यार्थियों के लिए परमावश्यक है—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नक्षत्र योनि वैर गण चक्रम्

क्र०सं० नक्षत्र	योनि	गण	युंजा	नाडी	तारा संख्या	वर्ण
१ अश्विनी	अश्व	देव	पूर्व	आद्य	३	क्षत्रिय
२ भरणी	गज	मनुष्य	,,	मध्य	३	,,
३ कृत्तिका	मीढ़ा	राक्षस	,,	अन्त्य	६	,,
४ रोहिणी	सर्प	मनुष्य	,,	अन्त्य	५	वैश्य
५ मृगशिरा	सर्प	देव	,,	मध्य	३	,,
६ आर्द्रा	श्वान	मनुष्य	मध्य	आद्य	१	,,
७ पुनर्वसु	मार्जा	देव	,,	आद्य	४	शूद्र
८ पुष्य	मीढ़ा	देव	,,	मध्य	३	,,
९ आश्लेषा	मार्जा	राक्षस	,,	अन्त्य	५	,,
१० मघा	मूषक	राक्षस	,,	अन्त्य	५	विप्र
११ पू० फा०	मूषक	मनुष्य	,,	मध्य	२	,,
१२ उ० फा०	गाय	मनुष्य	,,	आद्य	२	,,
१३ हस्त	भैंस	देव	,,	आद्य	५	क्षत्रिय
१४ चित्रा	व्याघ्र	राक्षस	,,	मध्य	१	,,
१५ स्वाति	भैंस	देव	,,	अन्त्य	१	,,
१६ विशाखा	व्याघ्र	राक्षस	,,	अन्त्य	४	वैश्य
१७ अनुराधा	हिरण	देव	,,	मध्य	४	,,
१८ ज्येष्ठा	हिरण	राक्षस	अन्त्य	आद्य	३	,,
१९ मूल	श्वान	राक्षस	,,	आद्य	११	शूद्र
२० पूर्वाषाढ़ा	वानर	मनुष्य	,,	मध्य	२	,,
२१ उत्तराषाढ़ा	नकुल	मनुष्य	,,	अन्त्य	२	,,
२२ श्रवण	कपि	देव	,,	अन्त्य	३	वैश्य
२३ धनिष्ठा	सिंह	राक्षस	,,	मध्य	४	वैश्य
२४ शतभिषा	अश्व	राक्षस	,,	आद्य	१०	शूद्र
२५ पू० भाद्रपद	सिंह	मनुष्य	,,	आद्य	२	शूद्र
२६ उ०भाद्रपद	गौ	मनुष्य	,,	मध्य	२	विप्र
२७ रेवती	गज	देव	पूर्व	अन्त्य	३२	,,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नक्षत्र-कष्ट

रोग-प्रारंभ का नक्षत्रों से घनिष्ठ संबंध है, और यह भी देखा गया है कि नक्षत्र से संबंधित मंत्र का जप आदि करने से रोग-शांति भी हो जाती है।

पाठकों की जानकारी के लिए नक्षत्र-रोग, प्रत्येक चरण से संबंधित रोग-दिवस, जप-संख्या व जपनीय मंत्र का उल्लेख किया जाता है।

(१) अश्विनी

कष्ट—ज्वर, शरीर में पीड़ा, निद्राभंग, बुद्धि-विभ्रम, आदि।

चरणानुसार कष्ट

१	चरण	६ दिन
२	,,	१० दिन
३	,,	११ दिन
४	,,	२० दिन

जपसंख्या—पांच हजार

जपमंत्र—ओम् अश्विनातेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्। वाचेन्द्रा बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥ ओम् अश्विनी कुमाराभ्यां नमः॥

(२) भरणी

कष्ट—सर्दी-प्रकोप, ज्वर, चर्म रोग आदि।

१	चरण	मृत्यु के समान
२	,,	८० दिन
३	,,	४० दिन
४	,,	११ दिन

जपसंख्या—१०,०००

जपमंत्र—ओम् यमायत्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा स्वाहा, धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे। यमाय नमः।

(३) कृत्तिका

कष्ट—शरीर में तीव्र जलन, कष्ट, नेत्र रोग, अनिद्रा, ऐंठन, जी मतलाना आदि।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३ चरण ४१ दिन
४ ,, मृत्युसम

जपसंख्या—१०,०००

जपमंत्र—ओम् नमोस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु: ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्य: सर्प्पेभ्यो नम: ॥ ओम् सर्पाय नम: ॥

(१०) मघा

कष्ट—पीड़ा, ज्वर, सिरदर्द

प्रथम चरण १५ दिन
२ ,, ७ दिन
३ ,, १७ दिन
४ ,, २० दिन

जपसंख्या—१०,०००

जपमंत्र—ओम् पितृभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधानम: पिता महेभ्य: सुधा नम: स्वधायिभ्य: ॥ प्रपिता महेभ्य:स्वधनम: अक्षन्नपितरो मीमदन्तपितरोऽतीतृ पन्त पितर: पितर: सुन्धध्वम् ॥ ओम् पितृभ्यो नम: ॥

(११) पूर्वाफाल्गुनी

कष्ट—शरीर पीड़ा, स्वर, सिरदर्द

प्रथम चरण मृत्युसम
२ ,, १५ दिन
३ ,, मृत्युसम
४ ,, ३० दिन

जपसंख्या—१०,०००

जपमंत्र—ओम् भगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मांधीय मुदवा-ददन्न: । भगप्रणो जनयगोभिरश्वैर्भग प्रनृभिर्नृवंत: स्याम: ॥ ओम् भगाय नम: ॥

(१२) उत्तराफाल्गुनी

कष्ट—शूल, वात, ज्वर, सिरपीड़ा ।

प्रथम चरण ७ दिन
२ ,, १४ ,,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३	चरण	७ दिन
४	,,	६० ,,

जपसंख्या—१०,०००

जपमंत्र—ओम् देवा वव्वर्जूश्चागत ँ रथेन सूर्य त्वचा। मध्वायज्ञ ँ समञ्जाथे तं प्रत्नथा यं वे नश्चित्रं देवा नाम् ।। ओम् अर्यम्णे नमः ।।

(१३) हस्त

कष्ट—ऊरुशूल, ज्वर, पेटदर्द।

प्रथम	चरण	१५ दिन
२	,,	१७ ,,
३	,,	१५ ,,
४	,,	मृत्युसम

जपसंख्या—५०००

जपमंत्र—ओम्, विश्राड् बृहत्पिवतु सौम्यं मध्वायुर्धदयज्ञपता ववहुतम्। वातजूतोयो अभिरक्षतित्मना प्रजाः पुपोषपुरुधा विराजति ।। ओम् सवित्रे नमः ।।

(१४) चित्रा

कष्ट—विविध रोग

प्रथम	चरण	११ दिन
२	,,	६ दिन
३	,,	६ दिन
४	,,	१६ दिन

जपसंख्या—१०,०००

जपमंत्र—ओम् त्वष्टातुरीपो अद्भुत इन्द्राग्नि पुष्टि वर्धना द्विपदा छन्द इन्द्रिय मुक्षागौर्नव्ययो वयुः ।। ओम् विश्वकर्म्मणे नमः ।।

(१५) स्वाति

कष्ट—ज्वर, विविध कष्ट

प्रथम	चरण	६० दिन
२	,,	१७ दिन
३	,,	३० दिन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४ चरण मृत्युसम

जपसंख्या—१०,०००

जपमंत्र—ओम् वायो ये ते सहस्रिणो रथा सस्ते त्रिरागहि। नियुत्वा म सोम पीतये ॥ ओम् वायवे नमः ॥

(१६) विशाखा

कष्ट—सर्वाङ्ग-पीड़ा, ज्वर।

प्रथम	चरण	१५ दिन
२	,,	मृत्युसम
३	,,	४ दिन
४	,,	१३ दिन

जपसंख्या—१०,०००

जपमंत्र—ओम् इन्द्राग्नी आगत ँ सुतं गीभिर्नमो वरेण्यम्। अस्य पातं धियेषिता ॥ ओम् इन्द्राग्निभ्यां नमः ॥

(१७) अनुराधा

कष्ट—सिरपीड़ा, तीव्र ज्वर।

प्रथम	चरण	६० दिन
२	,,	१२ ,,
३	,,	३६ ,,
४	,,	३० ,,

जपसंख्या—१०,०००

जपमंत्र—ओम् नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवायत दृत ँ सपर्यत दूरदृशे देव जातायकेतवे दिवसपुत्राय सूर्य्यायम ँ सत ॥ ओम् मित्राय नमः ॥

(१८) ज्येष्ठा

कष्ट—पित्तरोग, व्याकुलता, जी-उच्चाटन।

प्रथम	चरण	५९ दिन
२	,,	९ दिन
३	,,	६ ,,
४	,,	४ ,,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जपसंख्या—५,०००

जपमंत्र—ओम् त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवे हवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम् । ह्वयामिशक्रं पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्तिनो मघवाधात्वा-मिन्द्रः ॥ ओम् शक्राय नमः ॥

(१९) मूल

कष्ट—मूत्र तथा उदर-रोग ।

प्रथम चरण		मृत्युसम
२	,,	९ दिन
३	,,	१५ दिन
४	,,	६ दिन

जपसंख्या—५,०००

जपमंत्र—ओम् मातेव पुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्नि ँ स्वेयोनाभारुषा । तां विश्वेदेवैर्ऋतुभिः संवदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुंचतु ॥ ओम् निर्ऋतये नमः ॥

(२०) पूर्वाषाढ़ा

कष्ट—शिरपीड़ा, सर्दी का ज्वर ।

प्रथम चरण		मृत्युसम
२	,,	१५ दिन
३	,,	२४ दिन
४	,,	१० दिन

जपसंख्या—५,०००

जपमंत्र—ओम् अपाघमप किल्विषमपकृत्वा मपोरपः अपाम्मार्गंत्वमस्मदप दुःष्वप्न्य ँ सुवः ॥ ओम् अद्भ्योनमः ।

(२१) उत्तराषाढ़ा

कष्ट—कटि-पीड़ा, वात ज्वर ।

प्रथम चरण		३० दिन
२	,,	२४ दिन
३	,,	२६ ,,
४	,,	१६ ,,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जपसंख्या—१०,०००

जपमंत्र—ओम् विश्वेदेवाः शृणुतेम ँ हवं मे ये अन्तरिक्षे य पद्यविष्ठायं। अग्निजिह्वा उतवायजत्रा आसद्यास्मिन्बर्हि षिमाद्य-दम् ॥ ओम् विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥

(२२) श्रवण

कष्ट—विविध पीड़ा।

प्रथम	चरण	६० दिन
२	,,	२४ ,,
३	,,	६ ,,
४	,,	९ ,,

जपसंख्या—१०,०००

जपमंत्र—ओम् विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥ ओम् विष्णवे नमः ॥

(२३) धनिष्ठा

कष्ट—रक्तातिसार, मूत्रपीड़ा।

प्रथम	चरण	१५ दिन
२	,,	२ दिन
३	,,	२० दिन
४	,,	२१ दिन

जनसंख्या—१०,०००

जपमंत्र—ओम् वसोः पवित्रमसिशतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामधुक्षः ॥ ओम् वसुभ्यो नमः ॥

(२४) शतभिषा

कष्ट—वात-ज्वर, सन्निपात।

प्रथम	चरण	मृत्युसम
२	,,	४५ दिन
३	,,	३ दिन
४	,,	२२ दिन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जपसंख्या—१०,०००

जपमंत्र—ओम् वरुणस्योत्तंभनमसि वरुणस्य स्कंभसर्जनिस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसी वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॥ ओम् वरुणाय नमः ॥

(२५) पूर्वाभाद्रपद

कष्ट—व्याकुलता, ज्वर, सिर-पीड़ा ।

प्रथम चरण		मृत्युसम
२	,,	१२ दिन
३	,,	२१ ,,
४	,,	१७ ,,

जपसंख्या—१०,०००

जपमंत्र—ओम् उतनोऽहिर्बुध्न्यः शृणोत्वज एकपात्पृथिवी समुद्रः । विश्वेदेवाऽऋतावृधो हुवानास्तुता मंत्राः कविशस्ता अवन्तु ॥ ओम् अजैकपादे नमः ॥

(२६) उत्तराभाद्रपद

कष्ट—कामला, अतिसार, शूल, वात-ज्वर ।

प्रथम चरण		१० दिन
२	,,	२० ,,
३	,,	७ ,,
४	,,	१५ ,,

जपसंख्या—१०,०००

जपमंत्र—ओम् शिवोनामासिस्वधितिस्तेपिता नमस्ते अस्तु-मामाहि ँ सीः । निर्वर्तयाम्यायुषेऽन्नाद्यायजननायरायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥ ओम् अहिर्बुध्न्याय नमः ॥

(२७) रेवती

कष्ट—वात, पित्त, ज्वर, शूलपीड़ा ।

प्रथम चरण		१८ दिन
२	,,	१० ,,
३	,,	६ ,,
५	,,	२० ,,

जपसंख्या—५०००

जपमंत्र—ओम् पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इहस्मसि ॥ ओम् पूष्णे नमः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पृथ्वी र चन्द्रमाको भ्रमण गतिलाई
जोडदा आएको जोड ।

योग का अर्थ है जोड़। पंचांग में सूर्य और चन्द्रमा के जोड़ को ही योग कहते हैं। सूर्य व चन्द्रमा के अन्तर से जिस प्रकार तिथि का निर्माण होता है, उसी प्रकार सूर्यस्पष्ट एवं चन्द्रस्पष्ट के जोड़ से योग का निर्माण होता है।

स्पष्टता के लिए यों समझा जाय कि अश्विनी नक्षत्र से जब सूर्य और चन्द्रमा दोनों मिलकर ८०० कलाएँ आगे निकल जाते हैं, तब एक योग व्यतीत होता है। १६०० कलाएँ आगे बढ़ने पर दो योग व्यतीत होते हैं। इसी प्रकार २१६०० कलाएँ आगे बढ़ जाने पर २७ योग व्यतीत हो जाते हैं।

कुल योग सत्ताईस हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं— विष्कुम्भादि योग

१. विष्कम्भ	८. धृति
२. प्रीति	९. शूल
३. आयुष्मान	१०. गण्ड
४. सौभाग्य	११. वृद्धि
५. शोभन	१२. ध्रुव
६. अतिगण्ड	१३. व्याघात
७. सुकर्मा	१४. हर्षण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

१५. वज्र	२२. साध्य
१६. सिद्धि	२३. शुभ
१७. व्यतिपात	२४. शुक्ल
१८. वरीयान	२५. ब्रह्म
१९. परिघ	२६. ऐन्द्र
२०. शिव	२७. वैधृति
२१. सिद्ध	

उपर्युक्त २७ योगों का ज्योतिष-शास्त्र में काफी महत्त्व है। नीचे योगों के स्वामी, व संकेताक्षर स्पष्ट किए जा रहे हैं—

क्र. सं०	योग	स्वामी	संकेताक्षर
१.	विष्कुम्भ	यम	वि०
२.	प्रीति	विष्णु	प्री०
३.	आयुष्मान	चन्द्रमा	आयु०
४.	सौभाग्य	ब्रह्मा	सौ०
५.	शोभन	बृहस्पति	शो०
६.	अतिगण्ड	चन्द्रमा	अति०
७.	सुकर्मा	इन्द्र	सु०
८.	धृति	जल	धृ०
९.	शूल	सर्प	शू०
१०.	गण्ड	अग्नि	ग०
११.	वृद्धि	सूर्य	वृ०
१२.	ध्रुव	भूमि	ध्रु०
१३.	व्याघात	वायु	व्या०
१४.	हर्षण	भग	ह०
१५.	वज्र	वरुण	व०
१६.	सिद्धि	गणेश	सि०
१७.	व्यतिपात	रुद्र	व्य०
१८.	वरीयान	कुबेर	वरी०
१९.	परिघ	विश्वकर्मा	परि०
२०.	शिव	मित्र	शि०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२१.	सिद्ध	कार्तिकेय	सि०
२२.	साध्य	सावित्री	सा०
२३.	शुभ	लक्ष्मी	शुभ
२४.	शुक्ल	पार्वती	शु०
२५.	ब्रह्म	अश्विनीकुमार	ब्र०
२६.	ऐन्द्र	पितर	ऐ०
२७.	वैधृति	दिति	वै०

शुभ कार्य में त्याज्य

परिघ का आधा पहले का
विष्कम्भ की प्रथम पांच घटिकाएँ
शूल ,, ,, सात
गण्ड ,, ,, छः
व्याघात ,, ,, छः
हर्षण ,, ,, नौ
वज्र ,, ,, नौ
वैधृति पूरा
व्यतिपात पूरा
साध्य योग की एक घटी
अतिगण्ड योग की नौ घटिकाएँ।

उपर्युक्त सत्ताईस योगों के अतिरिक्त तेरह विशेष योग हैं, जो कि निम्न हैं—

(१) चर योग

रविवार को पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र, चंद्र को आर्द्रा, मंगल को विशाखा, बुध को रोहिणी, गुरु को पुष्य, शुक्र को मघा, शनिवार को मूल नक्षत्र हो तो चर योग होता है।

(२) ककच योग

रविवार को द्वादशी, चंद्र को एकादशी, मंगल को दशमी, बुध को नवमी, गुरु को अष्टमी, शुक्र को सप्तमी, शनि को षष्ठी तिथि हो तो ककच योग होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) दग्ध योग

रविवार को द्वादशी, चंद्र को एकादशी, मंगल को पंचमी, बुध को तृतीया, गुरु को षष्ठी, शुक्र को अष्टमी, तथा शनिवार को नवमी तिथि हो तो दग्ध योग होता है।

(४) मृत्युदायक योग

रविवार को नन्दा (१, ६, ११) चंद्र को भद्रा (२, ७, १२), मंगल को नन्दा (१, ६, ११), बुध को रिक्ता (४, ९, १४), गुरु को भद्रा (२, ७, १२) शुक्र को जया (३, ८, १३), शनिवार को पूर्णा (५, १०, १५) तिथि होने पर मृत्युदायक योग होता है।

(५) सिद्धि योग

मंगलवार को जया (३, ८, १३), बुधवार को भद्रा (२, ७, १२), गुरुवार को पूर्णा (५, १०, १५), शुक्रवार को नन्दा (१, ६, ११), शनिवार को रिक्ता (४, ९, १४) तिथि होने पर सिद्धि योग होता है।

(६) उत्पात योग

रविवार को विशाखा नक्षत्र, चन्द्रमा को पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र, मंगल को धनिष्ठा, बुध को रेवती, गुरु को रोहिणी, शुक्र को पुष्य तथा शनि को उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र होने पर उत्पात योग होता है।

(७) मृत्यु योग

रविवार को अनुराधा नक्षत्र, चंद्रवार को उत्तराषाढ़ा, मंगल को शतभिषा, बुध को अश्विनी, गुरु को मृगशिरा, शुक्र को आश्लेषा तथा शनिवार को हस्त नक्षत्र होने पर मृत्यु योग होता है।

(८) काल योग

रविवार को ज्येष्ठा नक्षत्र, चन्द्रवार को अभिजित्, मंगल को पूर्वाभाद्रपद, बुध को भरणी, गुरु को आर्द्रा, शुक्र को मघा तथा शनिवार को चित्रा नक्षत्र होने पर काल योग होता है।

(९) सुसिद्धि योग

रविवार को मूल नक्षत्र, चंद्र को श्रवण, मंगल को उत्तराभाद्रपद, बुध को कृत्तिका, गुरु को पुनर्वसु, शुक्र को पूर्वाफाल्गुनी तथा शनिवार को स्वाति नक्षत्र होने से सुसिद्धि योग होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१०) यमदंष्ट्र योग

रविवार को मघा या धनिष्ठा नक्षत्र होने पर, चंद्रवार को मूल या विशाखा, मगलवार को कृत्तिका या रोहिणी, बुधवार को पूर्वाषाढ़ा या पुनर्वसु, गुरुवार को उत्तराषाढ़ा या अश्विनी, शुक्रवार को रोहिणी या अनुराधा, तथा शनिवार को श्रवण या शतभिषा नक्षत्र होने पर यमदंष्ट्र योग होता है।

(११) यमघंट योग

रविवार को मघा नक्षत्र, चंद्रमा को विशाखा, मंगल को मृगशिरा, बुध को मूल, गुरु को कृत्तिका, शुक्र को रोहिणी, तथा शनिवार को हस्त नक्षत्र होने पर यमघंट योग होता है।

(१२) मूसल योग

रविवार को भरणी नक्षत्र, चन्द्रमा को चित्रा, मंगल को उत्तराषाढ़ा, बुध को धनिष्ठा, गुरु को उत्तराभाद्रपद, शुक्र को ज्येष्ठा तथा शनिवार को रेवती नक्षत्र होने पर मूसल योग होता है।

(१३) अमृतसिद्धि योग

रविवार को हस्त नक्षत्र, चंद्रवार को श्रवण, मंगल को अश्विनी, बुध को अनुराधा, गुरु को पुष्य, शुक्र को रेवती, तथा शनिवार को रोहिणी नक्षत्र होने पर अमृतसिद्धि योग होता है।

(१४) सर्वार्थसिद्धि योग

रविवार को हस्त, मूल, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, पुष्य, अश्विनी; चंद्रवार को श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा; मंगल को अश्विनी, उत्तराभाद्रपद, कृत्तिका, आश्लेषा; बुधवार को रोहिणी; अनुराधा, हस्त, कृत्तिका, मृगशिरा; गुरुवार को रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य; शुक्रवार को रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, श्रवण; तथा शनिवार को श्रवण, रोहिणी या स्वाति नक्षत्र होने पर सर्वार्थसिद्धि योग होता है।

पाठकों की सुविधा के लिए चतुर्दशयोग चक्र प्रस्तुत है—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री चतुर्दश योग चक्रम्

क्र० सं०	योग	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	बृहस्पतिवार	शनिवार
१	चर	पूर्वफाल्गुनी	श्रवण	विशाखा	रोहिणी	पुष्य	मघा	मूल
२	कृकच	तिथि १२	११	१०	९	८	७	६
३	दण्ड	१२ तिथि	११	५	३	६	८	९
४	मृत्युदायक	१, ६, ११	२, ७, १२	१, ६, ११	४, ९, १४	२, ७, १२	३, ८, १३	५, १०, १५
५	सिद्धि	×	×	३, ८, १३	७, ७, १२	५, १०, १५	१, ६, ११	४, ९, १४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६	उत्पात	विशाखा	पू० फा०	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ० फा०
७	मृत्यु	अनुराधा	उ० फा०	शत०	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त
८	काल	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू० भा०	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
९	सिद्धि	मूल	श्रवण	उ० भा०	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू० फा०	स्वाति
१०	यमदंष्ट्र	मघा धनिष्ठा	मूल विशाखा	कृत्तिका रोहिणी	पूर्वाषाढ़ा पुनर्वसु	उत्तरा अश्विनी	रोहिणी अनुराधा	श्रवण शतभिषा
११	यमघंट	मघा	विशाखा	मृगशिरा	मूल	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१२	मूल	भरणी	चित्रा	उ० फा०	धनिष्ठा	उत्तरा ३	ज्येष्ठा	रेवती	
१३	अमृतसिद्धि	हस्त	श्रवण	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी	
१४	सर्वार्थ-	हस्त	श्रवण	अश्विनी	रोहिणी	रेवती	रेवती	श्रवण	
	सिद्धि	मूल	रोहिणी	उ० भा०	अनुराधा	अनुराधा	अनुराधा	रोहिणी	
		उ० ३	मृगशिरा	कृत्तिका	हस्त	अश्विनी	अश्विनी	स्वाति	
		पुष्य	पुष्य	आश्लेषा	कृत्तिका	पुनर्वसु	पुनर्वसु		
		अश्विनी	अनुराधा		मृगशिरा	पुष्य	श्रवण		

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्योतिष के विद्यार्थियों को प्रमुख अट्ठाईस योगों का ज्ञान प्राप्त कर लेना भी परमावश्यक है। ये 'प्रमुख योग' निम्न हैं—

आनन्दादि योग

१	आनन्द	२	कालदण्ड
३	धूम्र	४	धाता
५	सौम्य	६	ध्वांक्ष
७	केतु	८	श्रीवत्स
९	वज्र	१०	मुद्गर
११	छत्र	१२	मित्र
१३	मानस	१४	पद्म
१५	तुम्ब	१६	उत्पात
१७	मृत्यु	१८	कारण
१९	सिद्धि	२०	शुभ
२१	अमृत	२२	मूसल
२३	गद	२४	मातंग
२५	रक्ष	२६	चर
२७	सुस्थिर	२८	प्रवर्द्धमान

आगे स्पष्टता से समझने के लिए चक्र स्पष्ट किया जा रहा है।—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रमुख योग चक्रम्

क्र० सं०	योगनाम	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	बृहस्पतिवार	शुक्रवार	शनिवार
१	आनन्द	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ़ा	शतभिषा
२	कालदण्ड	भरणी	रोहिणी	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभाद्रपद
३	धूम्र	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफाल्गुनी	स्वाति	मूल	श्रवण	उत्तराभाद्रपद
४	धाता	रोहिणी	पुष्य	उ० फाल्गुनी	विशाखा	पूर्वाषाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती
५	सौम्य	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ़ा	शतभिषा	अश्विनी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६	ध्रौव्य	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू० भा०	भरणी
७	केतु	पुनर्वसु	पू० फा०	स्वाति	मूल	श्रवण	उ० भा०	कृत्तिका
८	श्रीवत्स	पुष्य	उ० फा०	विशाखा	पू० षा०	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी
९	वज्र	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ० षा०	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा
१०	मुद्गर	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू० भा०	भरणी	आर्द्रा
११	छत्र	पू० फा०	स्वाति	मूल	श्रवण	उ० भा०	कृत्तिका	पुनर्वसु
१२	मित्र	उ० फा०	विशाखा	पू० षा०	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१३	मानस	हस्त	अनुराधा	उ० षा०	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	
१४	पद्म	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू० भा०	भरणी	आर्द्रा	मघा	
१५	लुम्ब	स्वाति	मूल	श्रवण	उ० भा०	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू० फा०	
१६	उत्पात	विशाखा	पू० षा०	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ० फा०	
१७	मृत्यु	अनुराधा	उ० षाढ़ा	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	
१८	काण	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू० भा०	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	
१९	सिद्धि	मूल	श्रवण	उ० भा०	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू० फा०	स्वाति	

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

२०	शुभ	पू० पा०	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ० फा०	विशाखा
२१	अमृत	उ० पा०	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा
२२	मूसल	अभिजित्	पू० भा०	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा
२३	गद	श्रवण	उ० भाद्र०	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू० फा०	स्वाति	मूल
२४	मातंग	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ० फा०	विशाखा	पू० पा०
२५	रक्ष	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ० पा०
२६	चर	पू० भा०	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२७	सुस्थिर	उ० भा०	कृत्तिका	पुंनर्वसु	पू० फा०	स्वाति	मूल	श्रवण
२८	प्रवर्धमान	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ० फा०	विशाखा	पू० षा०	धनिष्ठा

'प्रमुख योग चक्र' समझने का तरीका यह है कि संख्या एक का योग आनन्द लें।

पंचांग में जब भी रविवार को अश्विनी नक्षत्र, सोमवार को मृगशिरा, मंगलवार को आश्लेषा, बुधवार को हस्त, बृहस्पतिवार को अनुराधा, शुक्रवार को उत्तराषाढ़ा या शनिवार को शतभिषा नक्षत्र आयेगा, तो उस दिन 'आनन्द' नाम का योग होगा।

इन योगों का फल इस प्रकार होता है—

आनन्दादि योग

योग शुभाशुभ

१. आनन्द	शुभकार्यों हेतु।
२. कालदण्ड	शुभकार्यों में वर्जित।
३. धूम्र	एक घटी तक अशुभ, बाद में शुभ।
४. धाता	विद्यारंभ में शुभ।
५. सौम्य	प्रत्येक प्रकार के शुभ कार्यों में।
६. ध्वांक्ष	प्रथम पाँच घटी तक अशुभ, बाद में शुभ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

७. केतु	युद्धादि कार्यों में सफलतादायक ।
८. श्रीवत्स	विवाहादि कार्यों में शुभ ।
९. वज्र	प्रथम पांच घटी तक अशुभ, बाद में शुभ ।
१०. मुद्गर	प्रथम पांच घटी तक अशुभ, बाद में शुभ ।
११. छत्र	राज्यादि कार्यों में शुभ ।
१२. मित्र	यात्रादि कार्यों में शुभ ।
१३. मानस	मांगलिक कार्यों में शुभ ।
१४. पद्म	प्रथम चार घटी तक अशुभ, बाद में शुभ ।
१५. लुम्ब	प्रथम चार घटी तक अशुभ, बाद में शुभ ।
१६. उत्पात	अशुभ ।
१७. मृत्यु	शुभ कार्यों में वर्जित ।
१८. काण	प्रथम दो घटी तक अशुभ, बाद में शुभ ।
१९. सिद्धि	प्रत्येक कार्य में सिद्धिदायक ।
२०. शुभ	शुभ फलदायक ।
२१. अमृत	शुभ फलदायक ।
२२. मूसल	प्रथम दो घटी तक अशुभ, बाद में शुभ ।
२३. गद	प्रथम सात घटी तक अशुभ, बाद में शुभ ।
२४. मातंग	शुभ फलदायक ।
२५. रक्ष	शुभ कार्यों में वर्जित ।
२६. चर	कार्य में शीघ्रता देने वाला ।
२७. सुस्थिर	भूमि संबंधी कार्यों में शुभ ।
२८. प्रवर्धमान	समस्त शुभ कार्यों में उत्तम ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शुभ कार्यों में वर्जित

जन्म-नक्षत्र, जन्म-मास, जन्म-तिथि, व्यतिपात योग, भद्रा, वैधृति योग, अमावस्या, माता-पिता के मरने की तिथि, क्षय तिथि, वृद्धि तिथि, क्षय मास, अधिमास, कुलिक, अर्द्धयाम, महापात, विष्कम्भ, वज्रयोग, परिघ, शूल, गण्ड, अतिगण्ड, व्याघात योग, चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, द्वादशी, चतुर्दशी तिथियाँ समस्त शुभ कार्यों में वर्जित हैं।

भद्रा

शुक्लपक्ष की अष्टमी और पूर्णमासी के पूर्वार्द्ध में तथा एकादशी और चतुर्थी के उत्तरार्द्ध में भद्रा होती है। कृष्णपक्ष की तृतीया और दशमी के उत्तरार्द्ध में तथा सप्तमी एवं चतुर्दशी के पूर्वार्द्ध में भद्रा होती है।

किसी भी प्रकार के शुभ कार्य में भद्रा वर्जित मानी गई है।

भद्रा-निवास

यदि चन्द्रमा कुम्भ, मीन, कर्क या सिंह राशि में हो तो स्वर्ग-लोक में, मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक में चन्द्र हो तो भद्रा मर्त्यलोक में तथा कन्या, तुला, धनु, मकर राशि पर चन्द्रमा होने पर भद्रा का निवास पाताललोक में समझना चाहिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

५ | करण

तिथि के आधे भाग को करण कहते हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि एक तिथि में दो करण होते हैं। कुल करण ग्यारह हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं—

१. बव	२. बालव
३. कौलव	४. तैतिल
५. गर	६. वणिज
७. विष्टि (भद्रा)	८. शकुनि
९. चतुष्पद	१०. नाग
११. किंस्तुघ्न	

उपर्युक्त ग्यारह करणों में पहले सात करण चर संज्ञक और आगे के चार करण स्थिर संज्ञक हैं।

यह ध्यान रखने की बात है कि इनमें 'शकुनि' नामक करण कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के अंतिम अर्द्ध भाग में रहता है। इसके बाद अमावस के प्रथम अर्द्ध भाग में चतुष्पद और अंतिम अर्द्ध भाग में 'नाग' करण रहता है। इसके पश्चात् शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के प्रथम अर्द्ध भाग में किंस्तुघ्न और उसके क्रमशः बव आदि सात करण भुक्त होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'विष्टि' करण का ही दूसरा नाम भद्रा है। भद्रा में किसी भी प्रकार का शुभ कार्य नहीं करना चाहिए।

करणों के स्वामी

करण	स्वामी	करण	स्वामी
१. बव	इन्द्र	७. विष्टि	यम
२. बालव	ब्रह्मा	८. शकुनि	कलियुग
३. कौलव	सूर्य	९. चतुष्पद	रुद्र
४. तैतिल	सूर्य	१०. नाग	सर्प
५. गर	पृथ्वी	११. किंस्तुघ्न	वायु
६. वणिज	लक्ष्मी		

उपर्युक्त करणों की स्थिति व स्वामी का अध्ययन ज्योतिष-प्रेमियों के लिए आवश्यक होता है।

इनमें १ से ७ तक चर करण और ८ से ११ तक स्थिर करण है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६ पंचांग-परिचय

ज्योतिष में पंचांग की महत्ता अथवा उपयोगिता निर्विवाद रूप से प्रधान है। पंचांग का सीधासादा तात्पर्य है—पाँच अंग, अथवा पांच अंगों वाला। ये पाँच अंग हैं—

(१) तिथि,
(२) वार,
(३) नक्षत्र,
(४) योग, और
(५) करण।

पाठक पीछे के पृष्ठों में इन पाँचों ही अंगों का अध्ययन भली-भाँति कर चुके हैं। अब देखना यह है कि पंचांग को देखा कैसे जाता है? आप किसी भी पंचांग को उठाकर देखिये, उसमें क्रम इस प्रकार होगा—(१) मुख्य योग, (२) तिथि, (३) वार (घटी-पल), नक्षत्र (घटी-पल), योग (घटी-पल), करण (घटी-पल), दिनमान, सूर्योदय, सूर्यास्त, हिन्दी तारीख, अंग्रेज़ी तारीख, मुसलमानी तारीख, भारतीय तारीख, चन्द्र, प्रातः सूर्य स्पष्ट (प्रा० सू० स्प०) गति, विशेष।

उदाहरणार्थ चण्डू पंचांग के मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी की पंक्ति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देखनी है (सं० २०२७)

वह पंक्ति इस प्रकार है—

सर्वप्रथम योगा: शीर्षक में 'ध्वज' लिखा है। हम पीछे 'प्रमुख योगा' के अन्तर्गत बता चुके हैं कि ध्वज योग (या केतु योग) तब बनता है, जब गुरुवार को श्रवण नक्षत्र हो। इस दिन गुरुवार तथा श्रवण नक्षत्र का संयोग है, अतः ध्वज योग या केतु योग होना लाजिमी है।

इसके बाद है ५, गु० अर्थ हैं, इस दिन पंचमी तथा गुरुवार है, इसके आगे ही अंकित है ३०।६ अर्थात् यह पंचमी ३० घटी ६ पल तक है। जैसा कि मैं पीछे बता चुका हूँ कि एक घटी चौबीस मिनट के बराबर होती है, तथा एक पल २४ सैकण्ड के।

इस प्रकार ३० घटी ६ पल का अर्थ हुआ १२ घंटे, ३ मिनट, ३६ सैकण्ड, यानि सूर्योदय के पश्चात् १२ घंटे ३ मिनट ३६ सैकण्ड तक पंचमी तिथि रही, इसके बाद षष्ठी तिथि प्रारंभ हो गई।

इसके पश्चात् अंकित है श्र० ५३।३० अर्थात् ५३ घटी ३० पल तक श्रवण नक्षत्र रहेगा।

५३ घटी ३० पल का तात्पर्य उसी फार्मूले से देखिये, बराबर २१ घंटे २४ मिनट होते हैं; अर्थात् उस दिन सूर्योदय से २१ घंटे २४ मिनट तक श्रवण नक्षत्र रहेगा, इसके पश्चात् धनिष्ठा नक्षत्र का प्रारंभ हो जायगा।

इसके पश्चात् अंकित है ध्रु० ५१।६; ध्रु० से तात्पर्य है ध्रुव योग ५१।६ अर्थात् इक्यावन घटी ६ पल तक रहेगा, अर्थात् सूर्योदय से २० घंटे २७ मिनट ३६ सैकण्ड तक ध्रुव योग रहेगा, इसके पश्चात् व्याघात योग प्रारंभ हो जायगा।

इसके पश्चात् अंकित है व० २।४४ अर्थात् बव करण २ घटी ४४ पल अर्थात् १ घंटा ५ मिनट ३६ सैकण्ड तक रहेगा, इसके बाद बालव करण प्रारम्भ हो जायगा।

इसके पश्चात् अंकित है मात्र १०, पर इस पंक्ति में ऊपर देखो, अंकित होगा 'दि०' अर्थात् दिनमान, और उसी के नीचे अंकित है २६ (छब्बीस)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अतः, पंचमी को जो १० अंकित है, उसका पूरा अर्थ है—२६।१० अर्थात् उस दिन दिनमान २६ घटी १० पल है, यानि १० घंटे २८ मिनट तक दिन रहेगा, तथा (२४ घंटों में से १० घंटे २८ मिनट शेष करने पर) १३ घंटे ३२ मिनट तक रात्रि रहेगी।

इसके बाद शीर्षक है 'उदय' तथा अंकित है ६।४६ अर्थात् इस दिन सूर्योदय छः बजकर ४६ मिनट पर होगा।

इसके बाद शीर्षक है 'अस्त' तथा अंकित है ५।१४ अर्थात् इस दिन सूर्यास्त होगा ५ बजकर १४ मिनट पर।

इसके पश्चात् शीर्षक है हि०, अंकित है १८, अर्थात् हिन्दी तारीख १८, इसके आगे ३, अर्थात् अंग्रेजी तारीख ३ दिसम्बर, इसके आगे ३ मु०, अर्थात् मुसलमानी तारीख ३ सव्वाल, इसके आगे भा० १२ अर्थात् भारतीय तारीख १२ है।

फिर 'चन्द्र' शीर्षक के अन्तर्गत है 'मकर' अर्थात् इस दिन पूरे दिन-भर 'मकर' का चन्द्रमा रहेगा।

(पर इसके दूसरे दिन ही देखें 'चन्द्र' शीर्षक में लिखा है—कुं २१।२७ अर्थात् कुंभ का चन्द्रमा २१ घटी २७ पल व्यतीत होने के बाद प्रारंभ होगा।)

फिर प्रा० सू० स्प० शीर्षक यानि प्रातः-सूर्य-स्पष्ट के अन्तर्गत अंकित है ७।१६।४६।० यानि प्रातःकालीन सूर्य वृश्चिक राशि के १६ अंश ४६ घटी ० पल व्यतीत कर चुका है, तथा उसकी गति ६१।५ अर्थात् ६१ घटी ५ पल है।

इस प्रकार पाठक देखेंगे कि पंचांग की एक पंक्ति में कितनी अधिक जानकारी स्पष्ट की गई है।

पंचांग के नीचे बाईं ओर अष्टमी के ग्रह स्पष्ट होते हैं, तथा दाहिनी ओर पूर्णिमा या अमावास्या के ग्रह स्पष्ट होते हैं।

प्रत्येक पंचांग में यह सब जानकारी होती है। पाठक ध्यानपूर्वक उसका अध्ययन कर सीखने का प्रयत्न करें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रह ७

ज्योतिष-शास्त्र में मुख्यतः नौ ग्रहों की प्रधानता है—

१. सूर्य	२. चंद्रमा
३. मंगल	४. बुध
५. बृहस्पति	६. शुक्र
७. शनि	८. राहु
९. केतु	

इनके अतिरिक्त ज्योतिर्विद् हर्शल, प्लूटो, नेपच्यून आदि ग्रहों की भी चर्चा करते हैं, पर एक तो इनकी गति अत्यन्त मन्द है, दूसरे इनके प्रभाव का (मानव पर) अध्ययन किया जा रहा है।

फिर भी यह स्पष्ट है कि चाहे कम ही सही पर इन ग्रहों का भी प्रभाव मानव पर पड़ता है।

अब प्रत्येक ग्रह के बारे में साधारण जानकारी स्पष्ट की जा रही है—

सूर्य—यह सबसे अधिक तेजस्वी, प्रबल, प्रकाशवान एवं बेजोड़ ग्रह है। समस्त ग्रह इसके चारों ओर चक्कर लगाते रहते हैं। पृथ्वी से इसकी दूरी ९,३०,००,००० मील तथा अर्ध व्यास ४,३०,००० मील है। यह पृथ्वी से तेरह लाख गुना बड़ा है। यह सम्पूर्ण राशियों का भ्रमण ३६५ दिन ७ घ० ४८ घण्टा में परिक्रमा पूरा कर लेता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यह पूर्व दिशा का स्वामी, पुरुष-रूप और पाप-ग्रह है।

विशेष जानकारी दैनिक गति ५८ कला विवरण

नाम	सूर्य
फारसी नाम	आफ़ताब
अंग्रेजी नाम	सन (Sun)
एकपाद दृष्टि	३।१०
द्विपाद दृष्टि	५।९
त्रिपाद दृष्टि	४।८
संपूर्ण दृष्टि	७
ग्रह-वर्ष	२२
नेष्ट ग्रहस्य उपाय	हरिवंश श्रवण
एक राशि भुक्त प्रमाण	१ मास
रत्न	माणक
मित्र ग्रह	चंद्र, मंगल, वृहस्पति
सम ग्रह	बुध
शत्रु ग्रह	शनि, राहु, शुक्र
उच्च राशि	मेष १० अंश तक
नीच राशि	तुला १० अंश तक
स्वगृह	सिंह राशि
मूल त्रिकोण	सिंह
वर्ण	क्षत्रिय
जाति	पुरुष
आकार	वृत्त
समय	मध्याह्न
दिशा	पूर्व
धातु	सुवर्ण
पाद	चतुष्पद
स्वभाव	उग्र
गुण	सत्व
व्यवहार	स्थिर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding: MIDF

रस	तिक्त
भूमि	पशुप्राय
शरीर	पित्त
अवस्था	वृद्ध
रंग	पाटल
धातु	मूल
स्थान	वन
विंशोत्तरी दशा	६ वर्ष
अष्टोत्तरी दशा	६ वर्ष

इसके अतिरिक्त पिता का अध्ययन, नेत्र, कलेजा, स्नायु आदि रोगों का अध्ययन इसी ग्रह से किया जाता है।

चन्द्रमा—पृथ्वी से चन्द्रमा की दूरी २,३८,६०० मील है। लगभग साढ़े उन्तीस दिनों में यह ग्रह पृथ्वी का एक चक्कर पूरा कर लेता है। यह एक राशि पर सवा दो दिन तक रहता है। इसकी दैनिक गति ७९० कला और १४ विकला है। इसका व्यास २,१५३ मील का है। इसे राशि-चक्र के पूर्ण भ्रमण में ८७ दिन, १९ घटी, १७ पल, और ४२ विपल लगते हैं।

विशेष जानकारी

नाम	चन्द्रमा
फारसी नाम	माहताब
अंग्रेजी नाम	मून (Moon)
एकपद दृष्टि	३।१०
द्विपाद दृष्टि	५।९
त्रिपाद दृष्टि	४।८
सम्पूर्ण दृष्टि	७
ग्रह-वर्ष	२४
नेष्ट ग्रहस्य उपाय	त्रिपुरारी जप
एक राशि भुक्त प्रमाण	सवा दो दिन
रत्न	मोती
मित्र ग्रह	सूर्य, बुध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दान समय	सैद्धान्तिक मा.
सम ग्रह	मंगल, शुक्र, गुरु, शनि
शत्रुग्रह	राहु
उच्च राशि	वृष, ३ अंशों तक ४ से ३० तक
नीच राशि	वृश्चिक ३, अंशों तक मूलत्रि कोण; परमनीच ४ से ३० तक नीच
स्वगृह	कर्क
मूल त्रिकोण	वृष
वर्ण	वैश्य
जाति	स्त्री
आकार	चौकोर
समय	अपराह्न
दिशा	वायव्य
धातु	चाँदी
पाद	बहुपद
स्वभाव	सौम्य
गुण	सत्व
व्यवहार	चर
रस	क्षार
भूमि	जलभू
शरीर	श्लेष्म
अवस्था	युवा
रंग	गौर श्वेत
धातु	जीव
स्थान	जल
विंशोत्तरी दशा	१० वर्ष
अष्टोत्तरी दशा	१५ वर्ष

इसके अतिरिक्त मानव-रक्त-परिभ्रमण का इससे विशेष संबंध है।

शारीरिक पुष्टि, राज्य-कृपा, चित्र, माता, सम्पत्ति आदि का अध्ययन इसी से किया जाता है।

शारीरिक रोग, पाण्डुता, कृशता, जल, कफ आदि बीमारियाँ,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्त्री जननोत्पत्ति-रोग, भ्रमण, उदर-विकार आदि का विचार भी ज्योतिष-शास्त्र में चन्द्रमा के अध्ययन से ही किया जाता है।

✓मंगल—इसका व्यास ४२१५ मील तथा पृथ्वी से इसकी दूरी ३,५०,००,००० मील मानी गई है। यह ग्रह २५ डिग्री का कोण बनाता हुआ लगभग *६८७ दिनों में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है।

विशेष जानकारी

नाम	मंगल
फारसी नाम	मिरीख
अंग्रेज़ी नाम	मार्स (Mars)
एकपाद दृष्टि	३।१०
द्विपाद दृष्टि	५।९
त्रिपाद दृष्टि	४।८
सम्पूर्ण दृष्टि	४।७।८
ग्रह-वर्ष	२८
नेष्ट ग्रहस्य उपाय	रुद्रीपाठ
एक राशि भुक्त प्रमाण	डेढ़ मास
रत्न	प्रवाल
मित्र ग्रह	सूर्य, गुरु, चन्द्र
सम ग्रह	शुक्र, शनि, राहु
शत्रु ग्रह	बुध
उच्च राशि	मकर २८ अंशों तक
नीच राशि	कर्क २८ अंशों तक
स्वगृह	मेष, वृश्चिक १३ से २८ जो १ से २८
मूल त्रिकोण तथा स्वगृह	मेष १ से १२ अंश सम्म मू. त्रि.
वर्ण	क्षत्रिय १३ से २८ अंश तक
जाति	पुरुष स्वगृह।
आकार	त्रिकोण
समय	मध्याह्न
दिशा	दक्षिण

Tuesday (७) 1976 July 20
Landing: U.S.A.

* १ वर्ष ३२२ दिन. अर्थात ३२२ दिन
[illegible]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दान समय	४८ मिनटका २ घडी दिनरहे
धातु	स्वर्ण
पाद	चतुष्पाद
स्वभाव	उग्र
गुण	तमस्
व्यवहार	चर
रस	कटु
भूमि	दग्ध
शरीर	पित्त
अवस्था	युवा
रंग	रक्त
धातु	धातु
स्थान	वन
विंशोत्तरी दशा	७ वर्ष
अष्टोत्तरी दशा	८ वर्ष

विभिन्न स्थितियों के अनुसार इस ग्रह से ईमानदारी, भूमि-सम्बन्धी कार्य, मानसिक आघात, बड़े भाई से व्यवहार, संघर्ष, गरीबी, शूरता, मुकद्दमा, युद्ध, पुलिस, मिलिटरी, आकस्मिक मृत्यु, गरीबी, एक्सीडेंट, चालाकी, धोखाधड़ी आदि का ज्ञान इसी ग्रह से किया जाता है। मंगल दैनिक गति ३८ कला ५ विकला

कृषि-संबंधी कार्यों, मकान बनाना, बेचना, खरीदना, जंगलात आदि का यह विशेष कारक ग्रह है।

बुध—यह लगभग ३,६०,००,००० मील की दूरी से सूर्य की परिक्रमा करता है। इसका व्यास ३१०० मील तथा जमीन से इसका अन्तर लगभग १३,३०,००,००० मील है। लगभग ८८ दिनों में यह सूर्य की एक परिक्रमा पूरी कर लेता है। यह ग्रह अपनी धुरी पर ६६ दिन में एक चक्कर पूरा कर लेता है।

विशेष जानकारी

नाम	बुध
फारसी नाम	उतारुद
अंग्रेजी नाम	मर्करी

*८७ दिन २३ घण्टा.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एकपाद दृष्टि	३।१०
द्विपाद दृष्टि	५।६
त्रिपाद दृष्टि	४।८
सम्पूर्ण दृष्टि	७
ग्रह-वर्ष	३२
नेष्ट ग्रहस्य उपाय	कांस्य दान
✓एक राशि भुक्त प्रमाण	१ मास
रत्न	पन्ना
मित्र ग्रह	सूर्य, राहु, शुक्र
सम ग्रह	मंगल, शनि, गुरु,
शत्रु ग्रह	चन्द्र
उच्च राशि	कन्या १५ अंश तक
नीच राशि	मीन १५ अंश तक
स्वगृह	मिथुन, कन्या
मूल त्रिकोण	कन्या
वर्ण	शूद्र
जाति	स्त्री
आकार	वृत्त
समय	प्रभात
दिशा	उत्तर
धातु	कांस्य
पाद	द्विपाद
स्वभाव	शुभ
गुण	रजस्
व्यवहार	द्विस्वभाव
रस	सर्वरस
भूमि	श्मशान
शरीर	सम
अवस्था	सग
रंग	नील

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दान समय	२ घण्टा वा १ घड़ी दिन रहता
धातु	जीव
स्थान	ग्राम
विंशोत्तरी दशा	१७ वर्ष
अष्टोत्तरी दशा	१७ वर्ष

बुध की दैनिक गति २४५ कला ३२ विकला है। विभिन्न स्थितियों के अनुसार यह ग्रह वेद-वेदांग, ज्योतिष-शास्त्र का अध्ययन, व्यापार, वैद्यक, कुष्ठ, संग्रहणी आदि रोगों का कारक है।

व्यापारिक कार्यों का यह प्रमुख प्रतिनिधि ग्रह है।

गुरु—यह सूर्य से ५०,००,००,००० मील दूर तथा प्रति सेकण्ड ८ मील की गति से यह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाता है। इसकी दैनिक गति १४ कला ४६ विकला है अथवा स्टेण्डर्ड समय के अनुसार ९ घण्टा ५५ मिनट है। यह पृथ्वी से ४८ करोड़ ५० लाख मील दूर है, तथा इसका व्यास ३ लाख ७५ हजार मील है।

११ वर्ष १० मास १५ दिन ३६ घड़ी और ८ पल पर यह अपना राशिचक्र पूरा कर लेता है। ग्रह एक राशि पर १३ महीना तक रहता है।

विशेष जानकारी

नाम	बृहस्पति या गुरु
फारसी नाम	मुश्तरी
अंग्रेजी नाम	जुपिटर
एकपाद दृष्टि	३।१०
द्विपाद दृष्टि	५।९
त्रिपाद दृष्टि	४।८
सम्पूर्ण दृष्टि	५।७।९
ग्रह-वर्ष	१६
नेष्ट ग्रहस्य उपाय	अमावस्या व्रत
एक राशि भुक्त प्रमाण	१३ मास
रत्न	पुखराज
मित्र ग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चन्द्रमा	
दान समय	सैध्याकालमा.
सम ग्रह	शनि, राहू
शत्रु ग्रह	बुध,, शुक्र
उच्च राशि	कर्क ५ अंश तक
नीच राशि	मकर ५ अंश तक.
स्वगृह	धनु, मीन
मूल त्रिकोण	धनु १० अंश तक
वर्ण	विप्र
जाति	पुरुष
आकार	वृत्त
समय	प्रभात
दिशा	ईशान
धातु	काँस्य
पाद	द्विपद
स्वभाव	शुभ
गुण	सत्व
व्यवहार	स्थिर
रस	मधुर
भूमि	सुरालय
शरीर	सम धातु
अवस्था	वृद्ध
रंग	पीत
धातु	जीव
स्थान	ग्राम
विंशोत्तरी दशा	१६ वर्ष
अष्टोत्तरी दशा	१६ वर्ष

जन्मकुण्डली की विभिन्न स्थितियों के अनुसार इस ग्रह से सन्तान, सन्तान-सुख, विद्या, विवाह, शिक्षण, कला-कौशल आदि का ज्ञान होता है। इसके अलावा इन्द्रिय-निग्रह, राज-सम्मान, लाभ, कीर्ति, पवित्रता, धर्म आदि का विचार भी होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शुक्र—यह ग्रह सौरमण्डल का सर्वाधिक देदीप्यमान ग्रह है। सूर्य से इसकी दूरी ६,७०,००,००० मील है। हमारे २२५ दिनों के बराबर इसका एक वर्तमान होता है, तथा यह २२ मील प्रति सैकण्ड की गति से सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाता है।

ऐश-आराम, भोग-विलास, पर-स्त्री-रमण, द्यूत, प्रेम, काव्य, नेत्र-पीड़ा, वीर्य-विकार, वाहन आदि का अध्ययन इस ग्रह से किया जाता है।

इसकी दैनिक गति ७६ कला ७ विकला यानी २३ घंटा २१ मिनट ७ सैकण्ड है। यह पृथ्वी से ६ करोड़ ४० लाख मील दूर है, और इसका व्यास ७७०० मील है। इसका वर्ष २२७ दिनों का होता है।

विशेष जानकारी

नाम	शुक्र
फारसी नाम	भाहार
अंग्रेजी नाम	वीनस
एकपाद दृष्टि	३।१०
द्विपाद दृष्टि	५।६
त्रिपाद दृष्टि	४।८
सम्पूर्ण दृष्टि	७
ग्रह-वर्ष	२५
नेष्ट ग्रहस्य उपाय	गौ-सेवा
एक राशि भुक्त प्रमाण	१ मास
रत्न	हीरा
मित्र ग्रह	बुध, राहु, शनि
सम ग्रह	मंगल, गुरु
शत्रु ग्रह	रवि, चन्द्रमा
उच्च राशि	मीन २७ अंशों तक
नीच राशि	कन्या २७ अंशों तक
स्वगृह	वृष, तुला

* २२४ दिन १७ घण्टा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

दान समय	सूर्योदय कालमा.
मूल त्रिकोण	तुला
वर्ण	विप्र
जाति	स्त्री
आकार	दीर्घ
समग	अपराह्न
दिशा	आग्नेय
धातु	चाँदी
पाद	द्विपद
— स्वभाव	शुभ
— गुण	रजस्
— व्यवहार	चर
रस	अम्ल
भूमि	जलभूमि
शरीर	कफ
अवस्था	युवा
रंग	श्वेत
धातु	मूल
स्थान	ग्राम
विंशोत्तरी दशा	२० वर्ष
अष्टोत्तरी दशा	२१ वर्ष

सम्बन्ध-विच्छेद, तलाक, संगीत, चित्रकारी, कोषाध्यक्षता, विदेश-गमन आदि की जानकारी भी इसी ग्रह से की जाती है।

शनि—कांतिहीन और अत्यन्त धीरे-धीरे चलने के कारण ही इसका नाम 'शनैश्चर' या शनि पड़ा है। इसका व्यास ७५,००० मील और ध्रुवीय व्यास ६७,००० मील है। सूर्य से इसकी दूरी लगभग ८८,००,००,००० मील है। २९.५ वर्षों में यह सूर्य की एक पूरी परिक्रमा करता है। यह ग्रह अपनी धुरी पर १० घंटे १२ मिनटों में एक चक्कर पूरा कर लेता है। इस ग्रह का वर्ष हमारे २५००० दिनों के बराबर होता है।

एक राशि पर यह ग्रह ढाई वर्षों तक रहता है। यह नपुंसक-

* २९ वर्ष १६८ दिन)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लिंगी तथा तामस स्वभाव का ग्रह है। इसकी दैनिक गति ८ कला ५ विकला है, या १० घंटा १६ मिनट समझनी चाहिए। यह पृथ्वी से लगभग ८९ करोड़ मील दूर है, और इसका व्यास २,५०,००० मील है। ७९ करोड ३२ लाख ७१,५००

२९ वर्ष ५ मास १७ दिन १२ घटी और ३० पल में यह सम्पूर्ण राशियों का एक भ्रमण पूरा कर लेता है।

इस संबंध में विशेष जानकरी निम्न-प्रकारेण है—

विशेष जानकारी

नाम	शनि
फारसी नाम	झाहल
अंग्रेजी नाम	सेटर्न
एकपाद दृष्टि	३।१०
द्विपाद दृष्टि	५।९
त्रिपाद दृष्टि	४।८
सम्पूर्ण दृष्टि	३।७।१०
ग्रह-वर्ष	३६ वर्ष
नेष्ट ग्रहस्य उपाय	महामृत्युंजय जप
एक राशि भुक्त प्रमाण	३० मास
रत्न	नीलम
मित्र ग्रह	बुध, राहु, शुक्र
सम ग्रह	बृहस्पति
शत्रु ग्रह	रवि, चन्द्र, मंगल
उच्च राशि	तुला २० अंशों तक
नीच राशि	मेष २० अंशों तक
स्वगृह	मकर, कुंभ
मूल त्रिकोण	कुंभ
वर्ण	शूद्र, निषाद
जाति	स्त्री
आकार	दीर्घ
समय	अपराह्न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

दिन समय	मध्याह्न काल में
दिशा	पश्चिम
धातु	लौह
पाद	भुजंग, अपद
— स्वभाव	पाप
— गुण	तमस्
व्यवहार	पक्षी, स्थिर
रस	कषाय
भूमि	ऊसर
शरीर	वायु
अवस्था	अतिवृद्ध
रंग	नील
धातु	मूल
स्थान	संधि
विंशोत्तरी दशा	१९ वर्ष
अष्टोत्तरी दशा	१० वर्ष

जन्मकुण्डली में शनि की स्थिति से आयु, मृत्यु, चोर कार्य, हानि, नुकसान, दिवाला, बन्धन, जेल, मुकद्दमा, फाँसी शत्रुता, राज्यभय, त्यागपत्र, मुकद्दमाबाजी, डाका, गठिया, वायु-संबंधी रोग, तस्करी, जासूसी, राजनीति आदि का अध्ययन शनि के शुभाशुभ पर ही जाना जा सकता है।

राहु—इस ग्रह का अधिकार मुख्यतः पैरों पर रहता है। यह एक राशि पर डेढ़ वर्ष तक रहता है।

इस ग्रह की दैनिक गति ३ कला और ११ विकला है। यह पृथ्वी से ९० करोड़ मील दूर है और इसका व्यास ३ लाख मील है। १८ वर्ष ७ मास १८ दिन और १५ घटी में यह सम्पूर्ण राशियों का एक भ्रमण पूरा कर लेता है।

विशेष जानकारी

नाम	राहु
फारसी नाम	रास
अंग्रेजी नाम	ड्रेगन्स हेड

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दान समय		रात्रिकालमा
एकपाद दृष्टि	३।१०	३।६
द्विपाद दृष्टि	५।६	४।१०
त्रिपाद दृष्टि	४।८	×
सम्पूर्ण दृष्टि	७/५/८	
ग्रह-वर्ष	४२	
नेष्ट ग्रहस्य उपाय	भुजंग-दान	
एक राशि भुक्त प्रमाण	१८ मास	
रत्न	फ़िरोजी	
मित्र ग्रह	बुध, शनि, शुक्र	
सम ग्रह	गुरु	
शत्रु ग्रह	रवि, चन्द्र, मंगल	
उच्च राशि	मिथुन १५ अंशों तक	
नीच राशि	धनु १५ अंशों तक	
स्वगृह	कन्या	
मूल त्रिकोण	वर्क	
वर्ण	निषाद	
जाति	पुरुष	
आकार	दीर्घ	
समय	अपराह्न	
दिशा	नैर्ऋत्य	
धातु	लौह	
पाद	अपद	
स्वभाव	पाप	
गुण	तमस्	
व्यवहार	चर	
रस	कषाय	
भूमि	ऊसर	
शरीर	वायु	
अवस्था	वृद्ध	
रंग	धूम्र	

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धातु	धातु
स्थान	विवर
विंशोत्तरी दशा	१८ वर्ष
अष्टोत्तरी दशा	१२ वर्ष

जातक की कुण्डली में विभिन्न स्थितियों के अनुसार इस ग्रह के द्वारा शक्ति, परिश्रम, पहलवानी, राजनीति, मोटापा, वीरता, साहस, हिम्मत, शौर्य, बल, पाप, कर्म, व्यय, शत्रुता, दुःख, चिन्ता, दुर्भाग्य, अन्याय, संकट आदि का अध्ययन किया जाता है।

केतु—यह एक राशि पर डेढ़ वर्ष तक रहता है। यह बलवान् तथा मोक्षदाता ग्रह है। इसकी दैनिक गति ३ कला ११ विकला है। यह पृथ्वी से ९० करोड़ मील दूर है, और इसका व्यास तीन लाख मील का है। सम्पूर्ण राशियों पर यह १८ वर्ष ७ मास १८ दिन और १५ घटी में एक पूरा भ्रमण कर लेता है।

विशेष जानकारी

नाम	केतु
फारसी नाम	जनब
अंग्रेजी नाम	ड्रेगन्स टेल
एकपाद दृष्टि	३।१० ३।६
द्विपाद दृष्टि	५।९ ५।१०
त्रिपाद दृष्टि	४।८ ×
सम्पूर्ण दृष्टि	७।५।९
ग्रह-वर्ष	४२
नेष्ट ग्रहस्य उपाय	ध्वजादान
एक राशि भुक्त प्रमाण	१८ मास
रत्न	लहसनिया
मित्र ग्रह	बुध
सम ग्रह	गुरु
शत्रु ग्रह	रवि. चन्द्र. मंगल
उच्च राशि	धनु १५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दान समय	रात्रि काल मा.
नीच राशि	मिथुन १५
स्वगृह	मीन
मल त्रिकोण	मकर
वर्ण	निषाद
जाति	पुरुष
आकार	पुच्छाकार
समय	अपराह्न
दिशा	नैऋत्य
धातु	लौह
पाद	अपद
स्वभाव	पाप
गुण	तमस्
व्यवहार	पक्षी
रस	कषाय
भूमि	ऊसर
शरीर	वायु
अवस्था	वृद्ध
रंग	धूम्र
धातु	धातु
स्थान	बिवर
विंशोत्तरी दशा	७ वर्ष
अष्टोत्तरी दशा	×

जातक की कुण्डली में विभिन्न स्थितियों में स्थित केतु के शुभाशुभ का अध्ययन भी भिन्न-भिन्न होता है।

भयानक स्वप्नदर्शन, दुर्घटना, पर्वत से गिरना, जलाघात, कारावास, मृत्यु, अगति, मोक्ष, फोड़ा-फन्सी, कुष्ठ, अशुभ भावनाएँ तथा गंदे विचारों का अध्ययन केतु ग्रह से ही किया जाता है।

कारकग्रह—सूर्य लग्न का, बृहस्पति धन-भाव का, मंगल पराक्रम-भाव का, चन्द्र तथा बुध सुख-भाव का, गुरु पुत्र-भाव का,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शनि तथा मंगल शत्रु-भाव के। शुक्र स्त्री-भाव का, शनि मृत्यु-भाव का। सूर्य तथा गुरु भाग्य-भाव के। गुरु, सूर्य बुध तथा शनि राज्य-भाव के। गुरु लाभ-भाव का कारक ग्रह है।

अरिष्टकारक ग्रह—शुक्र सप्तम भाव में, बुध चौथे भाव में, तथा गुरु पांचवें भाव में अरिष्टकारक ही माने गये हैं।

ग्रह-बल-वृद्धि—सूर्य के साथ शनि का बल बढ़ता है, शनि के साथ मंगल का, मंगल के साथ गुरु का, गुरु के साथ चन्द्रमा का, चन्द्रमा के साथ शुक्र का, शुक्र के साथ बुध का, तथा बुध के साथ चन्द्रमा का बल बढ़ता है।

ग्रह जपनीय मंत्र

ग्रह	जपनीय मंत्र	जप-समय
सूर्य	ओम् ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः ॥	उदय
चंद्र	ओम् श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः ॥	संध्या
मंगल	ओम् क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः ॥	२ घटी शेष दिन
बुध	ओम् ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः ॥	५ ,, ,, ,,
गुरु	ओम् ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः ॥	संध्या
शुक्र	ओम् द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः ॥	सूर्योदय
शनि	ओम् प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ॥	मध्याह्न
राहु	ओम् भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः ॥	रात्रि
केतु	ओम् स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः ॥	,,

अब आगे के पृष्ठों में राशि पर विचार किया जायगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

८ राशि

राशि का अर्थ है ढेर। सम्पूर्ण आकाशमण्डल को ३६० अंशों में बाँटा गया है, जो कि १२ भागों में विभक्त है। इस प्रकार ३० अंशों की एक राशि होती है। नीचे बारह राशियों के नाम तथा उनके पर्यायवाची शब्द दिये जा रहे हैं—

क्र० सं	राशि	पर्यायवाची शब्द
१	मेष	अज, विश्व, क्रिय, तुंकुर, आद्य
२	वृष	उक्ष, गो-तावुरु, गोकुल
३	मिथुन	द्वन्द्व, नृयुग्म, यम, युग, तृतीय
४	कर्क	कुलीर, कर्कटक, कर्कट
५	सिंह	कंठीरव, सिंह, मृगेन्द्र, लेय
६	कन्या	पाथोन, कन्या, रमणी, तरुणी
७	तुला	तौली, वणिक्, जूक, तुला, घट
८	वृश्चिक	अलि, अष्टम, वृश्चिक, कौपि, कीट
९	धनु	धन्वी, धनु, चाप, शरासन
१०	मकर	मृग, मृगास्य, मकर, नक्र
११	कुंभ	कुंभ घट, तोषधर
१२	मीन	अन्त्य, मत्स्य, पृथुरोम, झख

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मानव-शरीर में राशियों की स्थिति—जिस प्रकार मानव-शरीर में नक्षत्रों की स्थिति है ठीक उसी प्रकार राशियों की भी। काल पुरुष के शरीर में राशियों की स्थिति इस प्रकार है —

१	मेष	शिर
२	वृष	मुख
३	मिथुन	स्तनमध्य
४	कर्क	हृदय
५	सिंह	उदर (पेट)
६	कन्या	कमर
७	तुला	नाभि के नीचे का भाग
८	वृश्चिक	लिंग (योनि)
९	धनु	ऊरु
१०	मकर	दोनों घुटने
११	कुंभ	दोनों जाँघें
१२	मीन	दोनों पैर

राशि-परिचय

क्र० सं०	राशि-नाम	अंग्रेजी नाम	फारसी नाम	अरबी नाम
१	मेष	Aries	बरे	हमल
२	वृष	Taurus	गत्व	सोर
३	मिथुन	Gemini	दोपेकर	जौजा
४	कर्क	Cancer	खरचंग	सरतान
५	सिंह	Leo	शीर	असद्
६	कन्या	Virgo	खुशे	सम्बला
७	तुला	Libra	त्राजु	मीजर
८	वृश्चिक	Scorpio	कभ्दुम	अकरब
९	धनु	Sagittarius	कमान	कोम
१०	मकर	Capricornus	बोझ	जद्दी
११	कुंभ	Aquarius	दुल	दलू
१२	मीन	Pisces	माही	हूत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अब आगे राशियों के बारे में विशेष जानकारी प्रस्तुत की जा रही है, जो कि पाठकों के लिए आवश्यक है।

मेष—यह पहली राशि भेड़ के आकार की, अंग्रेजी पद्धति से १ डिग्री से ३० डिग्री तक होती है। इस राशि में ४ घटी १५ पल होते हैं। यह विषम राशि साहस, अभिमान और प्रेम की प्रतीक है। सूर्य इस राशि पर ३० दिन ५५ घटी ३३ पल रहता है।

विशेष जानकारी

नाम	मेष	स्थान	पर्वत
पुं०	पुरुष	क्रूरादि	उग्र
चरादि	चर	बल	दिवा बल
तत्व	अग्नि	समादि	विषम
अवयव	दृढ़	दिशा	पूर्व
पाद	चतुष्पाद	स्त्री-सग	अल्प
वर्ण	पाटलरक्त	कांति	रूक्ष
गुण	तप्तदेह	जाति	क्षत्रिय
धातु	पित्त	उदय	पृष्ठोदय
शब्द	घोर रव	ऋतु	वसन्त

यह पित्त-प्रधान राशि मानव के भाग्य को त्वरित गति से ऊँचा उठाने वाली एवं उसे कर्म-पथ पर अग्रसर करने वाली है।

वृष—यह राशि डिग्री ३० से ६० तक चेहरे पर अपना प्रभाव रखती है। यह राशि चार घटी पैंतालीस पल की होती है, तथा सम-राशि कहलाती है। सूर्य इस राशि पर ३१ दिन २४ घटी और ५६ पल तक रहता है।

विशेष जानकारी

नाम	वृषभ	वर्ण	श्वेत
पुं०	स्त्री	गुण	शीत
चरादि	स्थिर	धातु	वायु
तत्व	पृथ्वी	शब्द	अतिरव
अवयव	दृढ़	स्थान	समभूमि
पाद	चतुष्पाद	क्रूरादि	सौम्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बल	रात्रि	कांति	रूक्ष
समादि	सम	जाति	वैश्य
दिशा	दक्षिण	उदय	पृष्ठोदय
स्त्री संग	मध्य	ऋतु	ग्रीष्म

यह राशि कान्तिहीन, मध्यम सन्तति, वैश्य जाति और शिथिल स्वभाव की है। यह राशि स्वार्थपूर्ण कार्यों में दत्तचित्त, सांसारिक कार्यों में चतुर और विचारपूर्वक कार्य करने वाली राशि है।

मिथुन—यह राशि डिग्री ६० से ९० तक दोनों कंधों पर अपना प्रभाव रखती है। यह राशि ५ घटी और १५ पल की होती है, तथा इसे विषम राशि कहा जाता है। इस पर सूर्य ३१ दिन ३० घटी और ३२ पल रहता है। हरित वर्ण प्रधान, मध्यम सन्तति, समशीतोष्ण स्वभाव, शूद्र वर्ण एवं शिथिल शरीर की स्वामिनी है।

विशेष जानकारी

नाम	मिथुन	स्थान	वनचर
पुं०	पुरुष	क्रूरादि	उग्र
चरादि	द्विस्वभाव	बल	दिवा
तत्व	वायु	समादि	विषम
अवयव	मृदु	दिशा	पश्चिम
पाद	द्विपद	स्त्री-संग	मध्य
वर्ण	हरित	कांति	स्निग्ध
गुण	तप्त	जाति	शूद्र
धातु	समधातु	उदय	शीर्षोदय
शब्द	दीर्घ शब्द	ऋतु	ग्रीष्म

यह राशि प्रकृतः विद्याव्यसनी है, तथा शिल्प-दक्षता, कन्धा, वक्ष, भुजाओं आदि का अध्ययन इसी राशि से किया जाता है।

कर्क—यह राशि डिग्री ९० से १२० तक सीने या छाती पर अपना प्रभाव रखती है। यह राशि ५ घटी ३० पल की होती है। समराशि, चर संज्ञक, स्त्रीलिंग-प्रधान इस राशि पर सूर्य ३१ दिन २२ घटी और ३५ पल रहता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेष जानकारी

नाम	कर्क	स्थान	जलचर
पुं०	स्त्री	क्रूरादि	सौम्य
चरादि	चर	बल	रात्रि
तत्व	जल	समादि	सम
अवयव	मृदु	दिशा	उत्तर
पाद	अपद	स्त्री-संग	बहु
वर्ण	पाटल	कांति	स्निग्ध
गुण	शीत	जाति	विप्र
धातु	कफ	ऋतु	वर्षा
शब्द	शब्दहीन		

इस राशि से सांसारिक उन्नति में प्रयत्नशीलता, लज्जा-विवेक, गुर्दा, वक्षस्थल आदि का अध्ययन किया जाता है।

सिंह—यह राशि १२० डिग्री से १५० डिग्री तक हृदय पर अधिकार रखती है। यह ५ घटी और १५ पल की होती है। यह विषम राशि है, तथा इस पर सूर्य ३१ दिन २ घटी और ५२ पल रहता है। पुरुष जाति, उष्ण स्वभाव, पुष्ट अंग, एवं रमणप्रिय यह जाति बलिष्ठता की द्योतक है।

विशेष जानकारी

नाम	सिंह	स्थान	पर्वत
पुं०	पुरुष	क्रूरादि	उग्र
चरादि	स्थिर	बल	दिवा
तत्व	अग्नि	समादि	विषम
अवयव	दृढ़	दिशा	पूर्व
पाद	चतुष्पाद	स्त्री-संग	अल्प
वर्ण	धूम्र	कांति	रूक्ष
गुण	उष्ण	जाति	क्षत्रिय
धातु	पित्त	उदय	शीर्षोदय
शब्द	दीर्घ शब्द	ऋतु	वर्षा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वभाव से यह राशि भ्रमणप्रिय, साहसी, उदार, अनुसन्धानरत एवं वीरभावों से पूरित है।

कन्या—यह राशि १५० डिग्री से १८० डिग्री तक आमाशय पर अपना अधिकार रखती है। यह राशि ५ घटी ४ पल की होती है, तथा इसे समराशि कहा जाता है। सूर्य इस पर ३० दिन २९ घटी और ४ पल रहता है। स्त्री जाति, शीतोष्ण स्वभाव, पिंगल वर्ण तथा अल्प सन्तति वाली यह राशि विद्याव्यसनी एवं शिल्पदक्षी है।

विशेष जानकारी

नाम	कन्या	स्थान	समभूमि
पुं०	स्त्री	क्रूरादि	सौम्य
चरादि	द्विस्वभाव	बल	रात्रि
तत्व	पृथ्वी	समादि	सम
अवयव	कृश	दिशा	दक्षिण
पाद	द्विपद	स्त्री-संग	अल्प
वर्ण	पांडुरंग	कांति	रूक्ष
गुण	शीत	जाति	वैश्य
धातु	वायु	उदय	शीर्षोदय
शब्द	अर्ध शब्द	ऋतु	शरद्

अपनी उन्नति की ओर विशेष तत्पर इस राशि से पेट अथवा पेट-सम्बन्धी बीमारियों का ज्ञान किया जाता है।

तुला—यह राशि डिग्री १८० से २१० तक पेट पर रहती है। ५ घटी १४ पल की इस राशि पर सूर्य २९ दिन ५७ घटी २५ पल तक गोचर करता है। यह राशि पुरुष जाति, चर संज्ञक, अल्प सन्तान-वाली, श्याम वर्ण तथा वायुतत्व प्रधान है।

विशेष जानकारी

नाम	तुला	पाद	द्विपद
पुं०	पुरुष	वर्ण	विचित्र
चरादि	चर	गुण	उष्ण
तत्व	वायु	धातु	समधा
अवयव	दृढ़	शब्द	शब्दहीन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्थान	वनचर	स्त्री-संग	अल्प
क्रूरादि	उग्र	कांति	स्निग्ध
बल	दिवा	जाति	शूद्र
समादि	विषम	उदय	शीर्षोदय
दिशा	पश्चिम	ऋतु	शरत्

इस राशि का प्राकृतिक स्वभाव, विचार, ज्ञान, चिन्तन, न्याय, कार्य-सम्पादन एवं कुशल राजनीति है। इस राशि से नाभि के नीचे के अंगों का विचार किया जाता है।

वृश्चिक—डिग्री २१० से २४० तक इसका प्रभाव पीठ पर रहता है। यह राशि ५ घटी १५ पल की होती है। समराशि है तथा इसका स्वामी मंगल है। इस राशि पर सूर्य २९ दिन २७ घटी और २९ पल रहता है। शुभ्र वर्ण, स्त्री जाति, स्थिर संज्ञक, बहुसन्तति, जलतत्व प्रधान यह राशि सात्विक विचारों से पूरित है।

विशेष जानकारी

नाम	वृश्चिक	स्थान	जलचर
पुं०	स्त्री	क्रूरादि	सौम्य
चरादि	स्थिर	बल	रात्रि
तत्व	जल	समादि	सम
अवयव	कुश	दिशा	उत्तर
पाद	बहुपद	स्त्री संग	बहु
वर्ण	श्वेत	कांति	स्निग्ध
गुण	शीत	जाति	विप्र
धातु	कफ	उदय	शीर्षोदय
शब्द	शब्दहीन	ऋतु	हेमन्त

इस राशि का प्राकृतिक गुण दंभ, हठ, स्पष्टवादिता और निर्मल विचार हैं। इससे जननेन्द्रिय का विचार किया जाता है।

धनु—यह डिग्री २४० से २७० तक जंघा पर रहती है। यह ५ घटी ३० पल की होती है, तथा विषम राशि कहलाती है। सूर्य का इस राशि पर भ्रमणकाल २९ दिन १५ घटी ४ पल है। पुरुष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जाति, कंचन वर्ण, क्रूर संज्ञक, अल्प सन्तति एवं जलतत्व प्रधान यह राशि है।

विशेष जानकारी

नाम	धनु	स्थान	पर्वत
पुं०	पुरुष	क्रूरादि	उग्र
चरादि	द्विस्वभाव	बल	दिवा
तत्व	अग्नि	समादि	विषम
अवयव	दृढ़	दिशा	पूर्व
पाद	द्विपद	स्त्री-संग	अल्प
वर्ण	सुवर्ण	कांति	रूक्ष
गुण	उष्ण	जाति	क्षत्रिय
धातु	पित्त	उदय	पृष्ठोदय
शब्द	अतिशब्द	ऋतु	हेमन्त

इस राशि का प्राकृतिक स्वभाव करुणा, मर्यादा और अधिकार-सम्पन्नता है। पैरों की सन्धि तथा जंघाओं पर इसका अधिकार रहता है।

मकर – यह राशि डिग्री २७० से ३०० तक घुटनों पर अपना अधिकार रखती है। यह ५ घटी १५ पल की होती है। इस राशि पर सूर्य २९ दिन २४ घटी तक रहता है। यह स्त्री जाति, चर संज्ञक, वात प्रकृति तथा दक्षिण दिशा की स्वामिनी है।

विशेष जानकारी

नाम	मकर	स्थान	वनचर
पुं०	स्त्री	क्रूरादि	सौम्य
चरादि	चर	बल	रात्रि
तत्व	पृथ्वी	समादि	सम
अवयव	दृढ़	दिशा	दक्षिण
पाद	चतुष्पाद	स्त्री-संग	अल्प
वर्ण	पीत	कांति	रूक्ष
गुण	शीत	जाति	वैश्य
धातु	वायु	उदय	पृष्ठोदय
शब्द	अतिशब्द	ऋतु	शिशिर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस राशि का प्राकृतिक स्वभाव उत्तरोत्तर उन्नति करते रहना है। इस राशि से घुटनों के बारे में विचार किया जाता है।

कुम्भ—यह राशि डिग्री ३०० से ३३० तक पैरों पर रहती है। यह ४ घटी ४५ पल की होती है, तथा इसे विषम राशि कहते हैं। इस राशि पर सूर्य २९ दिन ४९ घटी और ४३ पल रहता है। यह पुरुष राशि, स्थिर संज्ञक, विचित्र वर्ण, वात-पित्त-कफ प्रकृति प्रधान, दिन बली एवं पश्चिम दिशा की स्वामिनी है।

विशेष जानकारी

नाम	कुम्भ	स्थान	भूमि
पुं०	पुरुष	क्रूरादि	उग्र
चरादि	स्थिर	बल	दिवा
तत्व	वायु	समादि	विषम
अवयव	दृढ़	दिशा	पश्चिम
पाद	अपद	स्त्री-संग	मध्य
वर्ण	कर्बुर	कांति	स्निग्ध
गुण	उष्ण	जाति	शूद्र
धातु	समधा	उदय	शीर्षोदय
शब्द	खंड शब्द	ऋतु	शिशिर

इस राशि से शान्ति, धर्मप्रियता तथा विचारशीलता का अध्ययन किया जाता है।

मीन—यह राशि डिग्री ३३० से ३६० तक पदतल पर रहती है। यह ४ घटी १५ पल की होती है, तथा समराशि कहलाती है। इस राशि पर सूर्य ३० दिन ३३ घटी ३१ पल रहता है। यह राशि स्त्री जाति, कफ प्रकृति प्रधान, एवं पिंगल वर्ण की है।

विशेष जानकारी

नाम	मीन	अवयव	दृढ़
पुं०	स्त्री	पाद	अपद
चरादि	द्विस्वभाव	वर्ण	धूम्र
तत्व	जल	गुण	शीत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धातु	कफ	दिशा	उत्तर
शब्द	हीन शब्द	स्त्री-संग	बहु
स्थान	जलचर	कांति	स्निग्ध
क्रूरादि	सौम्य	जाति	विप्र
बल	रात्रि	उदय	उभयोदय
समादि	सम	ऋतु	वसन्त

इस राशि का प्राकृतिक स्वभाव दयालु, दानवीरता, धीरता एवं गम्भीरता है।

ऊपर बारह राशियों में जैसा बताया है। इस राशि में उत्पन्न व्यक्तियों एवं स्त्रियों का स्वभाव भी वैसा ही होता है। जन्म राशि से ही सामान्यतः फलाफल स्पष्ट किया जा सकता है।

राशि-स्वामी

प्रत्येक राशि का कोई-न-कोई ग्रह स्वामी है। सूर्य और चन्द्रमा एक-एक राशि के स्वामी हैं और बाकी अन्य ग्रह दो-दो राशियों के। नीचे राशि व उनके स्वामी ग्रह-स्पष्ट किये जा रहे हैं—

क्र० सं०	राशि	स्वामी
१	मेष	मंगल
२	वृष	शुक्र
३	मिथुन	बुध
४	कर्क	चन्द्रमा
५	सिंह	सूर्य
६	कन्या	बुध
७	तुला	शुक्र
८	वृश्चिक	मंगल
९	धनु	बृहस्पति
१०	मकर	शनि
११	कुम्भ	शनि
१२	मीन	बृहस्पति

राशि-स्वामी समझने के पश्चात् राशिघात-चक्र समझना भी

वर-वधूको मिलान गर्दा घात वार

Nepal Sanskrit University, Bajhang Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अत्यन्त आवश्यक है। उदाहरणार्थ, मेष राशि वाले को कार्तिक मास, १, ६, ११ तिथियाँ, सूर्यवार, मघा नक्षत्र, विष्कम्भ योग, वव करण, पहला प्रहर, पहला लग्न, मेष का चन्द्रमा, सिंह का मंगल, वृष का बुध, कन्या का गुरु, तुला का शुक्र, मिथुन का शनि, वृश्चिक का राहु, कर्क का सूर्य घातक है। स्त्री के लिए भी मेष का चन्द्रमा घातक है। इसी प्रकार अन्य राशि वालों के भी समझें।

ग्रह गोचरादि → घात-चक्र (मृत्यु ज्ञान) सुरक्षा

मेष राशि

मास	कार्तिक
तिथि	१, ६, ११
वार	सूर्य
नक्षत्र	मघा
योग	विष्कुंभ
करण	वव
प्रहर	१
लग्न	१
चन्द्र	१
मंगल	५
बुध	२
गुरु	६
शुक्र	७
शनि	३
राहु	८
स्त्री (राशि) के लिए चन्द्र	१
सूर्य	४

वृष राशि

मास	मार्गशीर्ष
तिथि	५, १०, १५
वार	शनिवार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नक्षत्र	हस्त
योग	शुक्ला
करण	शकुनि
प्रहर	४
लग्न	२
चन्द्र	५
मंगल	६
बुध	६
गुरु	१०
शुक्र	१०
शनि	७
राहु	१२
सूर्य	८
स्त्री के लिए चन्द्र	८

मिथुन राशि

मास	आषाढ़
तिथि	२, ७, १२
वार	चन्द्रवार
नक्षत्र	स्वाति
योग	परिघ
करण	चतुष्पद
प्रहर	३
लग्न	४
चन्द्र	६
मंगल	१
बुध	१०
गुरु	२
शुक्र	३
शनि	११
राहु	४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूर्य	१२
स्त्री के लिए चन्द्र	७

कर्क राशि

मास	पौष
तिथि	भद्रा (२, ७, १२)
वार	बुधवार
नक्षत्र	अनुराधा
योग	व्याघात
करण	नाग
प्रहर	१
लग्न	७
चन्द्र	२
मंगल	६
बुध	३
गुरु	७
शुक्र	८
शनि	४
राहु	६
सूर्य	५
स्त्री के लिए चन्द्र	६

सिंह राशि

मास	ज्येष्ठ
तिथि	३, ८, १३
वार	शनिवार
नक्षत्र	मूल
योग	धृति
करण	बव
प्रहर	१
लग्न	१०
चन्द्र	६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मंगल	१०
बुध	७
गुरु	११
शुक्र	१२
शनि	८
राहु	१
सूर्य	६
स्त्री के लिए चन्द्र	४

कन्या राशि

मास	भाद्रपद
तिथि	५, १०, १५
वार	शनिवार
नक्षत्र	श्रवण
योग	शूल
करण	कौलव
प्रहर	१
लग्न	१२
चन्द्र	१०
मंगल	२
बुध	११
गुरु	३
शुक्र	४
शनि	१२
राहु	५
सूर्य	१
स्त्री के लिए चन्द्र	३

तुला राशि

मास	माघ
तिथि	४, ६, १४
वार	गुरुवार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नक्षत्र	शतभिषा
योग	शूल
करण	तैतिल
प्रहर	४
लग्न	६
चन्द्र	३
मंगल	७
बुध	४
गुरु	८
शुक्र	९
शनि	५
राहु	१०
सूर्य	६
स्त्री के लिए चन्द्र	६

वृश्चिक राशि

मास	आश्विन
तिथि	१, ६, ११
वार	शुक्रवार
नक्षत्र	रेवती
योग	व्यतिपात
करण	गर
प्रहर	१
लग्न	८
चन्द्र	७
मंगल	११
बुध	८
गुरु	१२
शुक्र	१
शनि	४
राहु	२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूर्य	१०
स्त्री के लिए चन्द्र	२

धन राशि

मास	श्रावण
तिथि	३, ८, १३
वार	शुक्रवार
नक्षत्र	भरणी
योग	वरियान
करण	तैतिल
प्रहर	१
लग्न	६
चन्द्र	४
मंगल	८
बुध	५
गुरु	६
शुक्र	११
शनि	६
राहु	११
सूर्य	७
स्त्री के लिए चन्द्र	१०

मकर राशि

मास	वैशाख
तिथि	४, ६, १४
वार	मंगल
नक्षत्र	रोहिणी
योग	वैधृत
करण	शकुनि
प्रहर	४
लग्न	११
चन्द्र	८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मंगल	१२
वुध	९
गुरु	१
शुक्र	२
शनि	१०
राहु	३
सूर्य	११
स्त्री के लिए चन्द्र	११

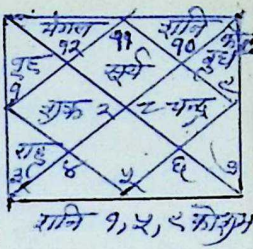

कुम्भ राशि

मास	चैत्र
तिथि	३, ८, १३
वार	गुरुवार
नक्षत्र	आर्द्रा
योग	गंड
करण	किंस्तुघ्न
प्रहर	३
लग्न	३
चन्द्र	११
मंगल	३
वुध	१२
गुरु	४
शुक्र	५
शनि	१
राहु	६
सूर्य	२
स्त्री के लिए चन्द्र	५

मीन राशि

मास	फाल्गुन
तिथि	५, १०, १५
वार	शुक्रवार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नक्षत्र	आश्लेषा
योग	वैधृति
करण	चतुष्पद
प्रहर	४
लग्न	५
चन्द्र	१२
मंगल	४
बुध	११
गुरु	५
शुक्र	६
शनि	२
राहु	७
सूर्य	३
स्त्री के लिए चन्द्र	१२

पीछे के पृष्ठों में राशि-घात-विवरण स्पष्ट किया है। वर वधू का मिलान करते समय अथवा शुभ कार्य प्रारंभ करते समय, इन घात-समय का त्याग ही श्रेयस्कर है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रत्येक कुण्डली का अध्ययन करने से पूर्व कुण्डली एवं उनके स्थानों का ज्ञान करना परमावश्यक है। प्रत्येक कुण्डली में १२ घर होते हैं, जिन्हें 'भाव' भी कहते हैं।

कुण्डली में सबसे ऊपर के स्थान को 'लग्न' कहते हैं।

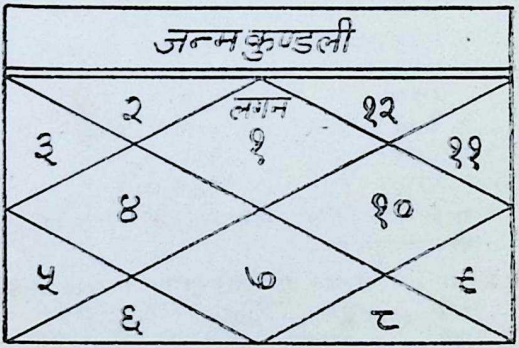

जैसा कि मैंने पहले बताया, कुण्डली में लग्न सबसे ऊपर होता है। ऊपर की कुण्डली में जहां १ लिखा है, वह घर लग्न का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है। यहाँ १ लिखा है, तथा पहली राशि मेष होती है, अतः इस कुण्डली का लग्न मेष कहलायगा।

लग्न में १ से १२ के बीच कोई भी अंक हो सकता है। जो अंक होगा, वही राशि लग्न कहलाएगी। यथा ऊपर ८ का अंक हो, तो आठवीं राशि वृश्चिक होती है, अतः वृश्चिक लग्न कहलाएगा।

लग्न का जो अंक होगा, उसके आगे का अंक लिखा जाएगा। बारह के अंक के बाद पुनः १ का अंक लिखा जायगा।

पृष्ठ ११० की कुण्डली में लग्न मेष है और मेष राशि का स्वामी मंगल होता है, अतः लग्न का स्वामी या लग्नेश मंगल कहलायगा।

कुण्डली में जो १२ भाव हैं, उनके विशिष्ट नाम भी हैं यथा पहले भाव को लग्न कहते हैं, इसके अतिरिक्त अन्य रूढ़ नाम इस प्रकार हैं—

१. लग्न	१
२. केन्द्र-स्थान	१, ४, ७, १०वाँ भाग केन्द्र-स्थान कहलाता है।
३. पणफर स्थान	२, ५, ८, ११
४. आपोक्लिम	३, ६, ९, १२
५. त्रिकोण	५, ९
६. चित्रिकोण	९
७. चतुरस्र	४, ८
८. उपचय	३, ६, १०, ११
९. पीडर्क्ष	१, २, ४, ५, ७, ८, ९, १२
१०. कण्टक	१, ४, ७, १०
११. चतुष्टय	१, ४, ७, १०

ऊपर भावों के विशिष्ट नाम दिये हैं, अब प्रत्येक भाव का स्पष्ट विवरण प्रस्तुत है—

१. प्रथम	भाव	को	लग्न	और	उसके स्वामी को लग्नेश कहते हैं।
२. द्वितीय	,,	द्रव्य	,,	,,	द्रव्येश ,,
३. तृतीय	,,	पराक्रम	,,	,,	पराक्रमेश ,,
४. चतुर्थ	,,	सुख	,,	,,	सुखेश ,,
५. पंचम	,,	सुत	,,	,,	सुतेश ,,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६. षष्ठ भाव को शत्रु और उसके स्वामी को शत्रु-ईश कहते हैं।
७. सप्तम ,, कलत्र ,, ,, कलत्रेश ,,
८. अष्टम ,, मृत्यु ,, ,, मृत्यु-ईश ,,
९. नवम ,, भाग्य ,, ,, भाग्येश ,,
१०. दशम ,, कर्म राज्य ,, कर्मेश ,,
११. एकादश ,, आय लाभ ,, आयेश ,,
१२. द्वादश ,, व्यय ,, ,, व्ययेश ,,

नीचे भावों के अंग्रेजी नाम व संस्कृत पर्यायवाची शब्द स्पष्ट किये जा रहे हैं—

द्वादश भाव

क्र० सं०	भावों के प्रसिद्ध नाम	अंग्रेजी नाम	संस्कृत पर्यायवाची शब्द
१	देह	Ascadent	लग्न, उदय, तनु, आद्य
२	द्रव्य	II House	स्व, कुटुम्ब, भुक्ति, वाक्
३	पराक्रम	III House	दुश्चिक्य, सहोदर
४	सुख	Mid Eavan	पाताल, वृद्धि, क्षिति
५	सुत	V House	धी, बुद्धि, पितृ, नंदन
६	शत्रु	VI House	रोग, अंग, भय, रिपु
७	कलत्र	VII House	जामित्र, काम. गमन
८	मृत्यु	VIII House	आयु, रन्ध्र, मृत्यु
९	भाग्य	IX House	धर्म, गुरु, शुभ, तप
१०	राज्य	X House	व्यापार, मध्य, मान
११	आय	XI House	उपान्त्य, भव, आय
१२	व्यय	XII House	व्यय, अन्त्यभ

इसके अतिरिक्त इन भावों के स्वामी को यों भी कहते हैं—
प्रथम भाव के स्वामी को लग्नेश, देहेश, केन्द्रेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दूसरे भाव के स्वामी को धनेश, सहायक मारकेश
तीसरे ,, ,, ,, पराक्रमेश, बान्धवेश
चौथे ,, ,, ,, सुखेश, मात्रीश
पाँचवें ,, ,, ,, पंचमेश, पुत्रेश, विद्याधीश
छठे ,, ,, ,, कष्टेश, रोगेश
सातवें ,, ,, ,, सप्तमेश, जायेश मारकेश
आठवें ,, ,, ,, मृत्यु-ईश, मारकेश
नवें ,, ,, ,, कर्मेश, भाग्येश
दसवें ,, ,, ,, राज्येश, राज्यपदेश
ग्यारहवें ,, ,, ,, आयेश
बारहवें ,, ,, ,, व्ययेश

अब आगे किस भाव से किन-किन बातों का अध्ययन किया जाता है, यह स्पष्ट किया जा रहा है—

प्रथम भाव—

इस भाव से किसी भी जातक के शरीर, कृशता, पुष्टता, प्रारम्भिक जीवन, बचपन, स्वास्थ्य, आरोग्य, रंग, गुण, स्वभाव, ख्याति, रूप, आत्मबल, आयु, सुख-दुःख, जाति, आकृति, व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, चरित्र आदि का अध्ययन किया जाता है।

द्वितीय भाव—

धन, कोष, पैतृक धन, बैंक-बैलेंस, मित्र, कुटुम्ब, पशु, जेल-यात्रा, आँख, नाक, सुन्दरता, गायन-प्रेम, संचित पूँजी, क्रय-विक्रय, मृत्यु का कारण, एक्सीडेंट, स्वार्थ, नीचता, पशुता, क्रूरता, रहस्य, भोजन, कलात्मक रुचि आदि का ज्ञान दूसरे भाव से किया जाता है।

तृतीय भाव—

पराक्रम, शूरवीरता, साहस, बल, छोटा भाई, छोटी बहनें, नौकर-चाकर, व्यापार, उद्यम, परिश्रम, आभूषण, सौन्दर्य-प्रियता, शौर्य, धैर्य, दया, दान, क्षय, अस्थमा, साँस, घुटन, प्राणायाम, योगाभ्यास, वचन-चातुर्य, भतीजे-भतीजियाँ, पारस्परिक संबंध,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पारिवारिक संबंध आदि का अध्ययन इसी भाव से किया जाता है।

चतुर्थ भाव—

सुख-सुविधा, ऐश-आराम, मस्तिष्क, शांति, घरेलू जीवन, माँ का सुख, मातृ-जीवन, माता की आयु, घर, गाँव, चौपाये, मित्र, अन्तःकरण, मातृभूमि, वायुयान, वाहन-सुख, मकान, कृषि भूमि, कृषि-कार्य, दलाली, खनिज कार्य, छल, कपट, गृह-सम्पत्ति, भूमि-सम्बन्धी मुकद्दमे, गर्दन, कंधों आदि का अध्ययन चतुर्थ भाव से ही किया जाता है।

पंचम भाव—

विद्या-व्यसन, शिक्षा, अनुभव, कार्यकुशलता, सन्तान, दादा, भावनाएँ, जातक का त्वरित निर्णय, चपलता, नीति, प्रबन्ध-दक्षता, देशभक्ति, गर्भस्थान, नौकरी छूटना, इस्तीफा, लॉटरी, अचानक द्रव्य-प्राप्ति, सट्टा, जुआ, जठराग्नि, गुण-अवगुणों की परख करने की क्षमता, यश, मूत्र-स्थान, मूत्र-पिण्ड आदि का अध्ययन इसी भाव से होता है।

षष्ठ भाव—

रोग-चिन्ता, मानसिक परेशानी, शत्रु-चिन्ता, झूठे इलजाम, खिलाफ मुकद्दमे, झूठी गवाही, भय, छुरेबाजी, निशानेबाजी, झंझट, परतन्त्रता, क्षति, गुदास्थान, ननिहाल, मामा, कर्जा, उधार, गलत-फहमियाँ तथा अनुचित कार्यों का अध्ययन इसी भाव से किया जाता है।

सप्तम भाव—

स्त्री, स्त्री की चिन्ता, प्रेम, प्रेमी-प्रेमिका, पर-स्त्री-सम्बन्ध, बदनामी, उत्सर्गता, विवाह, ससुराल, ससुराल से सम्बन्ध, दहेज, ससुराल से धन-प्राप्ति, वीर्य, मदन-पीड़ा, स्त्री का चरित्र, काम-क्रीड़ा, दैनिक रोजगार, छत, भोग-विलास, जननेन्द्रिय, लिंग, योनि, गुप्त स्थानों के रोग, व्यापार, तलाक, पति-पत्नी में प्रेम या अनबन, कूट-नीति, राजदूत, मारक स्थान, बवासीर, रक्त-दूषितता आदि का अध्ययन सातवें भाव से किया जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अष्टम भाव—

आयु, मानसिक दुःख, परेशानियाँ, मृत्यु, पुरातत्व-प्रेम, पुरा-तत्त्वान्वेषण, विदेशयात्रा, विदेशनिवास, गूढ़ उक्तियाँ, पूर्वसंचित द्रव्य, गड़ा हुआ खजाना, पूर्वजन्म ज्ञान, मृत्यु के पश्चात् की स्थिति, ऋण, संग्राम, मृत्यु का स्थान, मृत्यु का कारण, अपमृत्यु, अपघात, आत्म-हत्या, हत्या, समुद्र-यात्रा आदि का अध्ययन अष्टम भाव से किया जाता है।

नवम भाव—

भाग्य, भाग्योन्नति, भाग्य-पतन, धर्म, यात्रा, तीर्थ-यात्रा, धार्मिक कट्टरता, ईश्वर-चिंतन, गुरु, तपस्या, देव-प्राप्ति, जप-तप, ऐश्वर्य, मानसिक वृत्तियाँ, पितृ-सुख, प्रसिद्धि, यश, नेतृत्व-क्षमता, कर्तव्य-निष्ठा, पोते-पड़पोते आदि का अध्ययन इसी भाव से किया जाता है।

दशम भाव—

राज्य, मान-सम्मान, नौकरी, सेवा, दास्यवृत्ति, प्रतिष्ठा, पिता, पिता का सम्मान, पिता की मृत्यु, पिता के बारे में जानकारी, पिता का सुख, व्यापार, पितृ-द्रव्य, कर्म, आजीविका, हुकूमत, अधिकार, गजेटेड पद, ऐश्वर्य-भोग, कीर्ति, नौकरी का प्रकार, ऑफिसर-पद, आई० ए० एस०, आर० ए० एस०, आत्म-विश्वास, ज्ञान तथा जीवन-पद्धति के तरीके आदि का अध्ययन इसी भाव से किया जाता है।

एकादश भाव—

लाभ, आमदनी, आवश्यकताओं की पूर्ति, गुप्त धन, राजद्रव्य, भूषण, वस्त्र, हाथी, घोड़े, मोटर, बड़े भाई का सुख, बड़े भाइयों की संख्या, स्वतंत्र चिंतन आदि का अध्ययन इस भाव से होता है।

द्वादश भाव—

हानि, दान, परलोक, कर्जा, व्यय, दण्ड, व्यसन, राज-कोप, बाहरी व्यक्तियों से सम्पर्क, शत्रु-विरोध, नेत्र-पीड़ा, फिजूल-खर्ची, आकस्मिक व्यय आदि का अध्ययन द्वादश भाव से किया जाता है।

ज्योतिष-विद्यार्थियों को चाहिए कि वे शुभाशुभ का अध्ययन संबंधित भावों से करें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१० | सारिणियाँ

लग्न-कुण्डली बनाने से पूर्व रेखांश-शोधन जरूरी है। हमारे भारत का स्टैण्डर्ड टाइम (घड़ी का समय) ८२।३० रेखांश पर आधारित है। ईलाहाबाद

अब बालक का जन्म जिस शहर में हो उस शहर का रेखांश लो, फिर देखो कि वह रेखांश ८२।३० से कम है या ज्यादा। यदि कम है, तो ऋण होगा और ज्यादा है तो धन होगा।

जन्म-शहर का रेखांश ८२।३० में से घटाओ, जो शेष रहे, उसे ४ मिनट से गुणा करो, पाइण्ट के आगे की संख्या को ४ सैकण्ड से गुणा करो, जो समय आयेगा, उसे घड़ी के टाइम (स्टैण्डर्ड टाइम) से ऋण करने पर 'स्थानीय समय' आ जायेगा।

उदाहरणार्थ, आगरे में किसी बालक का जन्म प्रातःकाल ११ बजकर १७ मिनट पर हुआ (यह ११ बजकर १७ मिनट घड़ी का समय है, यानि जन्म के समय घड़ी में ११ बजकर १७ मिनट हुए थे)। घड़ी का यह समय तो पूरे भारत में एक-सा ही होता है। (1) (सवाल) पर उस समय स्थानीय समय (आगरे का समय) क्या था? क्योंकि ज्योतिष का आधार स्थानीय समय होता है, तो इसके लिए आगरे का रेखांश देखो। आगरे का रेखांश ७८।५ है; इसे ८२।३०

1 ऋण = घटाने / 2 धन = जोड़ने

पश्चिम ↑ पूर्व

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Latitude = Degree of latitude = अ
Longitude = Degree of longitude = रेखांश

से घटाव—

८२।३०
७८।५
— ४।२५ शेष रहे।

चूंकि आगरे का रेखांश ७८।५ भारत के रेखांश ८२।३० से कम है, अतः ऋण ४।२५ शेष रहा।

अब ४ को ४ मिनट से गुणा किया, और २५ को ४ सैकण्ड से, तो

४×४= १६ मिनट
२५×४=१०० सैकण्ड=१ मिनट ४० सैकण्ड
योग-ऋण १७ मिनट ४० सैकण्ड

अब घड़ी के समय ११ बजकर १७ मिनट में से १७ मिनट ४० सैकण्ड शेष किये—

११—१७
१७—४०
शेष रहा १०—५९—२०

अतः उस समय आगरे का स्थानीय समय १० बजकर ५९ मिनट २० सैकण्ड था। यही समय ज्योतिष में मान्य रहेगा, और इसी समय पर लग्न निकलेगा, तथा जन्म-पत्रिका बनेगी।

(२) यदि रेखांश ८२।३० से ज्यादा हो तो घटाने की बजाय घड़ी के समय में जोड़ देने पर स्थानीय समय स्पष्ट हो जायगा।

नीचे कुछ प्रमुख शहरों के अक्षांश-रेखांश दिये जा रहे हैं, साथ ही स्टैण्डर्ड अन्तर भी—

latitude — longitude

नगर (उत्तर)	अक्षांश[1] (उत्तर दक्षिण)	(पूर्व) रेखांश[2] (पूर्व पश्चिम)	स्टैण्डर्ड अन्तर मिनट-सैकण्ड
अयोध्या	२६।४८	८२।१४	—१।४
अकोला	२०।४२	७७।२	—२१।५२
अजमेर	२६।२७	७४।४२	—३१।१२

१ भूगोल मे पूर्व से पश्चिम पृथ्वी पर कल्पित समान्तर रेखाएँ (लैटिट्यूड की डिग्री). Latitude

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

अमृतसर	३१।३७	७४।४८	—३०।४८
अम्बाला	३०।२१	७६।५२	—२२।३२
अलमोड़ा	२९।३७	७९।४०	—११।२०
अलवर	३७।३४	७६।३८	—२३।२८
अहमदनगर	१९।५	७४।४८	—३०।४८
अहमदाबाद	२३।२	७२।३८	—३९।२८
अलीगढ़	२७।५४	७८।६	—१७।३६
→ आगरा	२७।१०	७८।५	—१७।४०
आजमगढ़	२६।५	८३।१२	+२।४८
आबू	२४।४०	७२।४५	—३९।०
इटावा	२६।४७	७९।२	—१३।५२
इन्दौर	२२।४४	७५ ५०	—२६।४०
✓ उज्जैन	२३।९	७५।४३	—२७।८
उदयपुर	२४।३५	७३।४२	—३५।१२
एलिचपुर	२१।१८	७७।३३	—१९।४९
औरंगाबाद	१९।५३	७५।२३	—२८।२८
कठुआ	३२।१७	७५।३६	—३७।३६
कपूरथला	३१।२३	७५।२५	—२८।२०
करनाल	२९।४२	७७।२	—२१।५२
कराची	२४।५१	६७।४	—३१।४४
कलकत्ता	२२।३४	८८।२४	+२३।३६
काठमाण्डू	२७।४२	८५।१२	+१०।४८
कानपुर	२६।२७	८०।२४	—८।२४
काशी	२५।२०	८३।०	+२।०
काँगड़ा	३२।५	७६।१८	—२४।४८
काँकरोली	२५।२	७३।५४	—३४।२४
कुरुक्षेत्र	३०।०	७६।४८	—२२।४८
कुमारी अन्तरीप	८।५	७७।३४	—१९।४४
कुम्भकोणम्	१०।५८	७९।२५	—१२।२०
कोटा	२५।१०	७५।५२	—२६।३२

२, भूगोल मे उत्तर और दक्षिण ध्रुवको मिलाने वाली रेखासे पूर्व या पश्चिम की दूरी (लंगीट्यूड की डिग्री)

Latitude : [illegible]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कोल्हापुर	१६।४२	७४।१६	—३२।५६
कोचीन	६।५६	७६।१७	—२४।५२
खंभात	२२।१६	७२।३६	—३६।३६
गया	२४।४६	८५।१	+१०।४
ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	—१७।२०
गाजीपुर	२५।३४	८३।३५	+४।२०
गुरदासपुर	३२।३	७५।२७	—२८।१२
गोरखपुर	२६।४५	८३।२४	+३।३६
गोवा	१५।३०	७३।५७	—३४।१२
चम्बा	३२।२६	७६।१०	—२५।२०
चंडीगढ़	३०।४४	७६।५२	—२२।३२
चेरापुंजी	२५।१७	६१।४७	+३७।८
छतरपुर	२४।५४	७६।३८	—११।२८
छपरा	२५।४७	८४।४१	+८।४४
जलपाइगुड़ी	२६।३२	८८।४६	+२५।४
जम्मू	३२।४४	७४।५४	—३०।२४
जबलपुर	३०।१०	७६।५६	—१०।४
जयपुर	२६।५५	७५।५२	—२६।३२
जालंधर	३१।१६	७५।१८	—२८।४६
जामनगर	२२।२७	७०।७	—४६।३२
जींद	२६।१६	७६।२३	—२४।२८
जूनागढ़	२१।३१	७०।३६	—४७।३६
जैसलमेर	२६।५५	७०।५७	—४६।१२
जोधपुर	२६।१८	७३।४	—३७।४४
जौनपुर	२५।४६	८२।४४	+०।५६
झालरापाटन	२४।३२	७६।१२	—२५।१२
झाँसी	२५।२७	७८।३७	—१५।३२
ट्रावनकोर	६।१०	७७।०	—२२।०
टोंक	२६।११	७५।५०	—२६।४०
डिबाई	२८।१२	७८।१५	—१७।०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

तलागंग	३२।५६	७२।२८	—४०।८
त्रिचनापल्ली	१०।५०	७८।४६	—१४।५६
दरभंगा	२६।१०	८५।५७	+१३।४८
द्वारिका	२२।१४	६६।१	—५३।५६
दार्जिलिंग	२६।३	८८।१८	+२३।१२
दिल्ली	२८।३८	७७।१२	—२१।१२
देहरादून	३०।१६	७८।४	—१७।४४
धौलपुर	२६।४२	७७।५३	—१८।२
नडियाद	२२।४१	७२।५५	—३८।२०
नसीराबाद	२६।१८	७४।४६	—३०।५६
नागपुर	२१।६	७६।६	—१३।२४
नाभा	३०।२५	७६।६	—२५।२४
नाथद्वारा	२४।५६	७३।५२	—३४।३२
नासिक	२०।२	७३।५०	—३४।४०
नैनीताल	२६।२३	२६।३०	—१२।०
पटना	२५।३७	८५।१३	+१०।५२
पटियाला	३०।२०	७६।२५	—२४।२०
पठानकोट	३२।१७	७५।४२	—१७।१२
प्रयाग	२५।२८	८१।५४	—२।२४
पांडिचेरी	११।५६	७५।५३	—१०।२८
पना	१६।०	७२।५५	—३८।२०
पोरबंदर	३१।३७	६६।४६	—५०।४४
फर्रुखाबाद	२७।२४	७६।३७	—११।३२
फरीदकोट	३०।४०	७४।५७	—३०।१२
फिरोजपुर	३०।५५	७४।४०	—३१।२०
बड़ौदा	२२।०	७३।३०	—३६।०
बंबई	१६।०	७२।५४	—३८।२४
बरेली	२८।२२	७६।२७	—१२।१२
बदीनाथ	३०।४४	७६।३२	—११।५२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बर्दवान	२३।१६	८७।५२	+२१।२८
बहावलपुर	२८।२४	७१।४७	—४२।५२
बिलासपुर	२२।५	८२।१३	—१।८
बीकानेर	२८।१	७३।२२	—३६।३२
बीजापुर	१६।५०	७५।४७	—२६।५२
बंगलौर	१२।५८	७७।३८	—१६।२८
भटिण्डा	३०।११	७५।०	—३०।०
भरतपुर	२७।१५	७७।३०	—२०।०
भागलपुर	२५।१४	८६।५६	+१७।५६
भोपाल	२३।१६	७७।३६	—१६।३६
मद्रास	१३।४	८०।१७	—८।५२
मथुरा	२७।२८	७७-४१	—१६।१६
मालेरकोटला	३०।३१	७५।५६	—२६।४
मुजफ्फरपुर	२६।७	८५।२७	+११।४८
मणिपुर	२४।१४	६३।५८	+४५।५२
मुरादाबाद	२८।५१	७८।४६	—१४।४४
मेरठ	२६।१	७७।४५	—१६।०
मैसूर	१२।१८	७६।४२	—२३।१२
मंडी	३६।४३	७६।५८	—२२।८
रतलाम	२३।३६	७५।७	—२६।३२
रत्नगिरि	१७।८	७३।१६	—३६।४४
रामेश्वरम्	६।१७	७६।२२	—१२।३२
राजमहेन्द्री	१७।१०	८१।४८	—२।४८
रिवाड़ी	२८।१२	७६।४०	—२३।२०
रेवा	२४।३१	८१।१६	—४।४४
रायपुर	२१।१५	८१।४१	—३।१६
राजकोट	२२।१८	७०।५६	—४६।१६
रोहतक	२८।५४	७६।३८	—२३।२८
रोपड़	३०।५७	७६।३०	—२४।०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MoE-IKS

लखनऊ	२६।५५	८०।५६	—६।४
लुधियाना	३०।५५	७५।५४	—२६।२४
शिमला	३१।६	७७।१३	—२१।८
श्रीनगर	३४।६	७४।५१	—३०।३६
सहारनपुर	२६।५८	७७।२३	—२०।२८
सतारा	१७।४२	७४।२	—३३।५२
सागर	२३।५०	७८।४५	—१५।०
सूरत	२१।१२	७२।५२	—३८।३२
सोलन	३०।५५	७७।६	—२१।२४
हरिद्वार	२६।५८	७८।१३	—१७।८
हिसार	२६।१०	७५।४६	—२६।५६
हैदराबाद	१७।२०	७८।३०	—१६।०
होशियारपुर	३१।३२	७५।५७	—२८।१२
होशंगाबाद	२२।४६	७७।४५	—१६।०

ऊपर प्रमुख शहरों के आक्षांश, रेखांश तथा स्टैण्डर्ड अन्तर दिये हैं। यदि किसी का जन्म गाँव में हुआ है, तो सबसे नजदीक के प्रसिद्ध स्थान के रेखांश देखकर स्टैण्डर्ड अन्तर स्पष्ट करना चाहिए।

यदि किसी शहर का नाम उपर्युक्त सारिणी में न हो तो पाठक को चाहिए कि वह भारत का मानचित्र देखकर अक्षांश-रेखांश जान ले, और बाद में स्टैण्डर्ड अन्तर स्पष्ट कर ले।

अगले पृष्ठों पर वेलान्तर-सारिणी देखो :—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वेलान्तर-सारिणी

तारीख	जनवरी मिनट	फरवरी मि०	मार्च मि०	अप्रैल मि०	मई मि०	जून मि०	जुलाई मि०	अगस्त मि०	सितम्बर मि०	अक्टूबर मि०	नवम्बर मि०	दिसम्बर मि०
१	—४	—१४	—१२	—४	+३	+२	—४	—६	+०	+१०	+१६	+११
२	—४	—१४	—१२	—४	+३	+२	—४	—६	+०	+११	+१५	+१०
३	—५	—१४	—१२	—३	+३	+२	—४	—६	+१	+११	+१५	+१०
४	—५	—१४	—१२	—३	+३	+२	—४	—६	+१	+११	+१५	+१०
५	—६	—१४	—१२	—३	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
६	—६	—१४	—१२	—२	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
७	—७	—१४	—१२	—२	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
८	—७	—१४	—१२	—२	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
९	—७	—१४	—११	—२	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
१०	—८	—१४	—११	—२	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
११	—८	—१४	—११	—२	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
१२	—८	—१४	—११	—२	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
१३	—९	—१४	—१०	—१	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
१४	—९	—१४	—१०	—१	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
१५	—९	—१४	—१०	—१	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
१६	—९	—१४	—१०	—१	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
१७	—९	—१४	—१०	—१	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
१८	—९	—१४	—१०	—१	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
१९	—९	—१४	—१०	—१	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
२०	—९	—१४	—१०	—१	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
२१	—९	—१४	—१०	—१	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
२२	—९	—१४	—१०	—१	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
२३	—९	—१४	—१०	—१	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
२४	—९	—१४	—१०	—१	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
२५	—९	—१४	—१०	—१	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
२६	—९	—१४	—१०	—१	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
२७	—९	—१४	—१०	—१	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
२८	—९	—१४	—१०	—१	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
२९	—९	—१४	—१०	—१	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
३०	—९	—१४	—१०	—१	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०
३१	—९	—१४	—१०	—१	+३	+२	—४	—६	+१	+१२	+१५	+१०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

तारीख	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रेल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सित०	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
१४	—९	—१४	—९	—०	+४	—०	—६	—४	+५	+१४	+१५	+५
१५	—१०	—१४	—९	+०	+४	—०	—६	—४	+५	+१४	+१५	+५
१६	—१०	—१४	—९	+०	+४	—०	—६	—४	+५	+१४	+१५	+४
१७	—१०	—१४	—८	+१	+४	—१	—६	—४	+६	+१५	+१५	+४
१८	—११	—१४	—८	+१	+४	—१	—६	—४	+६	+१५	+१५	+३
१९	—११	—१४	—८	+१	+४	—१	—६	—३	+६	+१५	+१४	+३
२०	—११	—१४	—८	+१	+४	—१	—६	—३	+७	+१५	+१४	+२
२१	—१२	—१४	—७	+१	+४	—२	—६	—३	+७	+१५	+१४	+२
२२	—१२	—१४	—७	+२	+४	—२	—६	—३	+७	+१५	+१४	+१
२३	—१२	—१४	—७	+२	+३	—२	—६	—२	+८	+१६	+१३	+१
२४	—१२	—१३	—६	+२	+३	—२	—६	—२	+८	+१६	+१३	+०
२५	—१३	—१३	—६	+२	+३	—२	—६	—२	+८	+१६	+१३	+०
२६	—१३	—१३	—६	+२	+३	—३	—६	—२	+९	+१६	+१२	—१
२७	—१३	—१३	—५	+२	+३	—३	—६	—१	+९	+१६	+१२	—१
२८	—१३	—१३	—५	+३	+३	—३	—६	—१	+९	+१६	+१२	—२
२९	—१३	—१२	—५	+३	+३	—३	—६	—१	+१०	+१६	+११	—२
३०	—१४	×	—४	+३	+३	—३	—६	—०	+१०	+१६	+११	—३
३१	—१४	×	—४	×	+३	×	—६	—०	×	+१६	×	—३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पीछे वेलान्तर-सारिणी स्पष्ट कर दी गई है। बालक का जिस तारीख को जन्म हो, उस तारीख के सामने अंकित मिनट ऋण या धन-जैसा सूचित करने से ही स्थानीय समय सही बनता है।

पीछे के उदाहरण में जिसका जन्म आगरे में ११ बजकर १६ मिनट पर हुआ था, आगरे का रेखांश ७८।५ है अतः शोधित करने पर स्थानीय समय १० बज कर ५९ मिनट २० सैकण्ड आये।

बालक का जन्म ४ नवम्बर को है। वेलान्तर-सारिणी में ४ तारीख के आगे नवम्बर मास देखा, तो +१६ अंकित है। ये धन १६ मिनट, १० बजकर ५९ मिनट २० सैकण्ड में जोड़ने हैं—

१०	५९	२०
+	१६	०
११	१५	२०

वस्तुतः पूर्णतः शुद्ध ४ नवम्बर को आगरे में ११ बजकर १६ मिनट पर जन्म लेने वाले बालक का स्थानीय समय ११ बजकर १५ मिनट २० सैकण्ड स्पष्ट हुआ, जो कि पूर्णतः सही है, और इसी समय पर लग्न एवं जन्मपत्रिका बनेगी।

अतः लग्न निकालने से पूर्व रेखांश-शोधन, व वेलान्तर-संस्कार परमावश्यक हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
तुला ६	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१
वृश्चिक ७	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४८	४८
	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३
धनु ८	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६
	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९
मकर ९	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१
	५५	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३
कुम्भ १०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
मीन ११	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६
	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लग्न-सारिणी

अंश राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
	५०	५७	५	१३	२०	२८	३६	४८	५२	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२९	३७	४५	५४	२	११	१९	२८	३७	४६
	९	४७	२५	५	४८	३५	१८	६	०	४८	४२	३९	४७	३९	४१	४९	५७	९	२३	३९	१	२१	५८	३५	४६	२०	५८	३८	२२	९
वृष १	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
	५४	३	१२	२१	३०	३९	४९	५८	७	१७	२६	३५	४५	५४	४	१४	२४	३३	४३	५३	३	१३	२३	३४	४४	५४	४	१५	२५	३६
	५७	५२	४९	४७	५२	५९	११	२४	४०	१	२५	४३	२४	५९	३७	१९	४	५३	४६	४२	४३	४५	५१	०	१४	३०	४९	१३	३९	९
मिथुन २	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७
	४६	५७	७	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३४	४५	५६	८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	७
	४१	१६	५५	३७	४२	९	१९	५१	४७	४५	४५	४८	५२	०	९	२०	३२	४९	५	२४	४४	६	२९	५३	१७	४५	१४	४२	११	४२
कर्क ३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५
	१३	४४	१६	४९	२२	५६	२९	३	३८	११	४४	२०	५२	२५	५८	३०	३	३७	६	३७	८	३७	१७	३५	४	३०	५६	३२	३७	११
सिंह ४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	२	१३	२४	३६	४७	५८	९	२०	३१
	३४	५७	२७	३९	५९	१९	३९	५५	१२	२८	४४	५८	१२	२५	३८	४९	०	१०	२५	३६	४९	५१	५३	५९	६	१२	१७	२२	२७	३२
कन्या ५	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४
	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३५	४६	५७	९	१९	३०	४१	५२	४
	३६	४०	४६	४७	५०	५९	५७	२०	५३	२१	८	१३	४	२०	२४	२८	३३	३७	४३	४८	५४	०	७	१९	१०	२६	३५	९	२९	११

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भारत ८२½ अंश रेखांशमाछ।

११ | लग्न

लग्न निकालने से पूर्व समय के बारे में समझ लेना आवश्यक है। समय दो प्रकार के होते हैं—

१—**स्टैण्डर्ड समय**—जो घड़ी द्वारा देखा जाता है और पूरे भारत मे एक ही होता है।

२—**स्थानीय समय**—यह स्टैण्डर्ड टाइम में अक्षांश-रेखांश शोधन कर वेलान्तर स्पष्ट कर बनाया जाता है।

इसके बाद सूर्योदय-सूर्यास्त स्पष्ट कर देने चाहिए।

सूर्यास्त—दिनमान में ५ का भाग देने से लब्धि में घण्टा-मिनट सूर्यास्त होता है। उदाहरणार्थ—दिनमान है—३३।२९

```
५ ) ३३।२९ (६        ५ ) २०९ (४१
    ३०                 २०
    ---                ---
     ३                  ९
    ×६०                 ५
    ---                ---
    १८०                ४ त्याज्य
   +२९
   ----
    २०९
```

अतः सूर्यास्त होगा ६।४१, यानि ६ बजकर ४१ मिनट पर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूर्योदय—सूर्यास्त को १२ घण्टे में से घटाने पर सूर्योदय स्पष्ट होता है।

उदाहरणार्थ—

घण्टा		मिनट	
१२	—	००	
६	—	४१	सूर्यास्त समय
५		१९	सूर्योदय समय

इष्टकाल—लग्न निकालने से पूर्व इष्टकाल निकालना जरूरी है। इसके लिए निम्न नियम हैं :—

(१) सूर्योदय से लेकर १२ बजे दिन के भीतर जन्म हो तो जन्म-समय और सूर्योदय-काल का अन्तर कर शेष को ढाई से गुणा करो। जो गुणनफल आयेगा, वही घट्यादि इष्टकाल होगा।

(२) ठीक बारह बजे दिन का इष्टकाल निकालना हो तो दिनमान का आधा करने से इष्टकाल हो जाता है।

(३) यदि १२ बजे दिन से सूर्यास्त के अन्दर का जन्म हो तो जन्म-समय और सूर्यास्त-काल का अन्तर कर शेष को ढाई से गुणा कर दिनमान में से घटाने पर जो शेष बचे, वही इष्टकाल होता है।

(४) सूर्यास्त से रात्रि के १२ बजे के भीतर का जन्म हो तो जन्म-समय एवं सूर्यास्त-काल का अन्तर कर शेष को ढाई से गुणा कर दिनमान में जोड़ देने से घट्यादि इष्टकाल होता है।

(५) ठीक बारह बजे रात्रि का जन्म हो तो रात्रिमान को आधा कर उसमें दिनमान जोड़ने से इष्टकाल बन जाता है।

(६) यदि रात्रि के बारह बजे से सूर्योदय से पहले का जन्म हो तो सूर्योदय-काल और जन्म-समय का अन्तर कर शेष को ढाई से गुणा कर ६० घटी में से घटाने पर इष्टकाल होता है।

(७) सूर्योदय से लेकर जन्म-समय तक जितने घण्टे-मिनट बीते हों, उन्हें ढाई से गुणा कर देने से इष्टकाल बन जाता है।

(८) इष्टकाल से लग्न निकालना—जब इष्टकाल बन जाय तो जन्म के दिन का सूर्य-स्पष्ट देखो (देखो पंचांग-परिचय,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय)। यह सूर्य-स्पष्ट पंक्ति के अन्तिम में लिखा होता है।

सूर्य-स्पष्ट को लग्न-सारिणी में देखो। जो लब्धि हो उसे इष्ट-काल में जोड़कर जो जोड़फल हो उसे पुनः लग्न-सारिणी में देखो। जहाँ निकटतम योग मिले उसके बाईं ओर का लिखा लग्न, तथा ऊपर लिखे अंक अंश होंगे।

उदाहरणार्थ, इष्ट है ३५।४२ ; सूर्य-स्पष्ट है २।७

तो लग्न-सारिणी में बाईं ओर जहाँ २ लिखा है, उस पंक्ति में ऊपर जहाँ ७ अंकित है, उस स्थान को देखा तो मिले १३।१।५१ इसे इष्ट ३५।४२ में जोड़ा—

३५।४२
१३। १।५१
४८।४३।५१ जोड़

इस पूरे जोड़ को ही लग्न-सारिणी में ढूँढा तो इसके निकटवर्ती संख्या (पर कम) ४८।३४।२१ मिली। उस स्थान के बाईं ओर है धनु तथा ऊपर है १६ अंक।

अतः यह स्पष्ट हो गया कि उस समय धनु लग्न १६ अंशों में चल रहा था।

अब हम ऊपर के सभी उदाहरणों को उदाहरणों से घटित करेंगे।

उदाहरणार्थ, किसी बालक का दिल्ली में ३-१२-७० को जन्म हुआ। पंचांग में मुख्य बातें नोट कीं—

दिनांक	३-१२-७०
दिनमान	२६।१०
सूर्योदय	६।४६
सूर्यास्त	५।१४
सूर्य-स्पष्ट	७।१६।४६।०
जन्म-स्थान	दिल्ली
अक्षांश	२८।३८
रेखांश	७७।१२
स्टैण्डर्ड अन्तर	२१।१२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

नियम-संख्या १ पर घटित सूर्य उदय से पाद के बिच

३-१२-७० को दिल्ली में प्रातः ८ बजकर १५ मिनट पर जन्म हुआ—

	घं०	मि०	सै०	
	८—	१५—	०	स्टैण्डर्ड समय
	—	२१—	१२	स्थानीय समय बनाने हेतु स्टैण्डर्ड अन्तर किया
	७—	५३—	४८	स्थानीय समय
+		१०—	००	३-१२-७० का वेलांतर जोड़ा (देखिये वेलांतर सारिणी)
	८—	३—	४८	स्थानीय जन्म-समय
	६—	४६—	०	सूर्योदय शेष किया
	१—	१७—	४८	
			× २½	ढाई से तात्पर्य २-३० मुख्य
	२—	३०—	०	(२½ को १ से गुणा करने पर)
		४२—	३०	(२½ को १७ मि० से गुणा करने पर)
		२—	००	(२½ को ४८ सै० से गुणा)
	३—	१४ —	३०	इष्टकाल
सर्य-स्पष्ट ७।१६	४३—	१ —	४९	
लग्न-सारिणी में अंश मिले	४६—	१६—	१९	इस संख्या को लग्न-सारिणी में ढूंढा

इस संख्या ४६-१६-१९ को लग्न-सारिणी में ढूंढा तो लग्न आया धनु के २ अंश।

अर्थात् बालक के जन्म के समय धनु लग्न दो अंशों में चल रहा था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नियम-संख्या ३ पर घटित दोपहरदिन से सूर्यास्तके बिच

उदाहरणार्थ ३-१२-७० को दिल्ली में दोपहर ४ बजकर १६ मिनट पर जन्म हुआ।

	४—१६— ०	
	—२१—१२	स्थानीय समय बनाने हेतु
	३—५४—४८	
	+१०—००	वेलान्तर जोड़ा
	४— ४—४८	शास्त्रीय समय
सूर्यास्त	५—१४— ०	
	४— ४—४८	स्थानीय समय
	१— ९—१२	शेष
	×२½	२ घड़ी ३० पलाले
	२—३०—००	गुणन गर्दा
	२२—३०	
	—३०	
	२—५३—००	
दिनमान	२६—१०— ०	
	२—५३— ०	घटाया
	२३—१७—०	इष्टकाल

दोपहर दिल्ली में ४-१६ पर जन्म होने पर इष्टकाल २३-१७-० स्पष्ट होता है। अब आगे (नियम १ के उदाहरण पर) लग्न स्पष्ट कर लें। सरिणी हेर्दा सिंह लग्न को १ अंश को जन्म

नियम-संख्या ४ पर घटित सूर्यास्त से रात्रि १२ के बिच

३-१२-७० को दिल्ली में रात्रि के दस बजकर ५२ मिनट पर बालक का जन्म हुआ।

१०—५२—०	
—२१—१२	स्टैण्डर्ड अन्तर
१०—३०—४८	
+१०—००	वेलान्तर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१०—४०—४८	स्थानीय समय
५—१४— ०	सूर्यास्त
५—२६—४८	
×२½	
१२—३०—००	
१—०५—००	
०२—००	
१३—३७—००	योग
२६—१०—००	दिनमान
३९—४७—००	इष्टकाल

रात्रि के १० बजकर ५२ मिनट पर इष्टकाल ३९-४७-०० होगा। सारिणी हेर्दा वृश्चिक लग्न को ० अंश को जन्म

नियम-संख्या ६ पर घटित रात्रि के १२ बजे से सूर्योदय पहिले

३-१२-७० को रात्रि के तीन बजकर १८ मिनट ३५ सैकण्ड पर जन्म दिल्ली में हुआ।

३—१८—३५	स्टैण्डर्ड समय
—२१—१२	रेखांश शोधन
२—५७—२३	
+१०—००	

(चूंकि बालक का जन्म रात के बारह बजे के बाद है, अतः तिथि ४-१२-७० हुई, पर ४-१२-६० का वेलान्तर भी १० मि० ही है।)

	३— ७—२३	स्थानीय समय
सूर्योदय	६—४६— ०	
	३— ७—२३	स्थानीय समय घटाया
	३—३८—३७	शेष
	×२½	गुणा किया
	७—३०—००	
	१—३५—००	
	१—३३	

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

९—०६—३३	योग
६०—००—००	घटी
९—६ —३३	घटाया
५०—५३—२७	इष्टकाल

उस समय इष्टकाल ५०-५३-२७ था। सारिणी हेर्दा मकर लग्नको ०अंश मा जन्म।

जन्म-कुण्डली

पीछे के पृष्ठों में हमने देखा कि नियम-संख्या १ पर घटित करने पर ३-१२-७० को दिल्ली में जिस बालक का जन्म प्रातः ८ बजकर १५ मिनट पर हुआ था, उसका धनु लग्न २ अंशों में आया था।

२०२७ मार्ग १८ गते बृहस्पतिवार

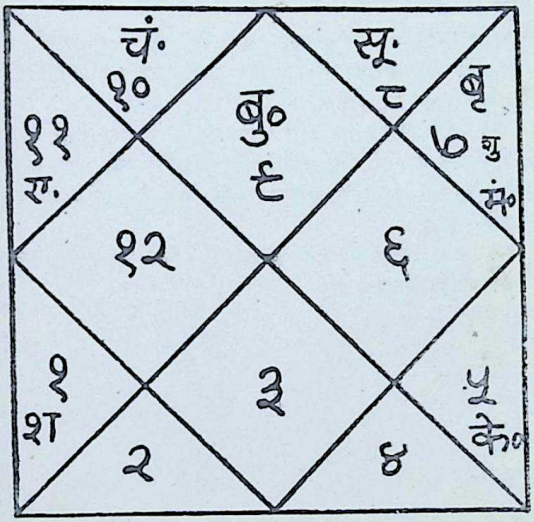

अब जन्म-कुण्डली में सबसे ऊपर के खाने पर ९ का अंक लिखेंगे,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्योंकि धनुराशि क्रम से नवीं राशि है। इसके बाद १०, ११, १२ तथा इसके बाद पुनः १, २ से अंक लिखेंगे।

अब पंचांग में उस दिन देखा कि चन्द्रमा मकर राशि का है। मकर का तात्पर्य दसवीं राशि, अतः १० के अंक में चन्द्रमा लिख दिया। सूर्य वृश्चिक राशि अर्थात् आठवीं राशि पर था, अतः आठ के अंक में सूर्य लिख दिया।

पचांग के पन्ने के नीचे बाईं ओर कुण्डली बनी होती है। प्रतिपदा से अष्टमी तक बाईं तरफ की कुण्डली, तथा नवमी से अमावस्या या पूर्णिमा तक के लिए दाहिनी तरफ की कुण्डली में जिस राशि में ग्रह अंकित हो, जन्मकुण्डली में भी उसी राशि में ग्रह अंकित कर देने चाहिए।

चूंकि ३-१२-७० का तात्पर्य पंचमी तिथि है, अतः बाईं ओर की कुण्डली का प्रयोग किया, और यथा-स्थान ग्रह लिख देने पर जन्म-कुण्डली बन गई।

इस प्रकार लग्नेश गुरु हुआ। लग्न-स्थान में बुध, दूसरे भाव में चंद्रमा, तीसरे भाव में राहु, पाँचवें भाव में शनि, नवें भाव में केतु, ग्यारहवें भाव में बृहस्पति, शुक्र तथा मंगल एवं बारहवें भाव में सूर्य ग्रह अंकित हुआ।

और यही बालक की जन्म-कुण्डली है, जिस पर जीवन-भर का फलाफल किया जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIOE

१२ ज्ञातव्य

१. जन्मराशि को प्रधानता—विवाह, मांगलिक कार्य, यात्रा, ग्रह देखना आदि में।

२. नामराशि को प्रधानता—देश, ग्राम, गृह, युद्ध, नौकरी, आपसी व्यवहार, वर्गशुद्धि, दान, जूआ, बुखार, बीमारी, मन्त्र-साधन आदि में।

३. दिशाशूल-वास

सोमवार	पूर्व में	शुक्रवार	पश्चिम
मंगलवार	उत्तर	शनिवार	पूर्व
बुधवार	उत्तर	रविवार	पश्चिम
गुरुवार	दक्षिण		

४. योगिनी-विचार

प्रतिपदा	पूर्व	षष्ठी	पश्चिम
द्वितीया	उत्तर	सप्तमी	वायव्य
तृतीया	अग्नि	अष्टमी	ईशान
चतुर्थी	नैर्ऋत्य	नवमी	पूर्व
पचमी	दक्षिण	दशमी	उत्तर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एकादशी	अग्निकोण	चतुर्दशी	पश्चिम
द्वादशी	नक्रृत्य	पूर्णिमा	वायव्य
त्रयोदशी	दक्षिण	अमावस्या	ईशान

चंद्रवास

मेष राशि पर चन्द्रमा हो तो चंद्र				पूर्व	दिशा में
वृष	,,	,,	,,	दक्षिण	,,
मिथुन	,,	,,	,,	पश्चिम	,,
कर्क	,,	,,	,,	उत्तर	,,
सिंह	,,	,,	,	पूर्व	,,
कन्या	,,	,,	,,	दक्षिण	,,
तुला	,,	,,	,,	पश्चिम	,,
वृश्चिक	,,	,,	,,	उत्तर	,,
धनु	,,	,,	,,	पूर्व	,,
मकर	,,	,,	,,	दक्षिण	,,
कुम्भ	,,	,,	,,	पश्चिम	,,
मीन	,,	,,	,,	उत्तर	,,

फल

यात्रा-काल में सामने चन्द्रमा हो तो अर्थ-लाभ, दक्षिण की ओर हो तो सुख, पीछे हो ती पत्नी-नाश तथा बाईं ओर हो तो धन-नाश होता है।

दिशाशूल-परिहार

रविवार	को	तांबूल	गुरु	को	दही
सोम	को	चंदन	शुक्र	को	घृत
मंगल	को	चंदन	शनि	को	तिलदान
बुध	को	पुष्प			

कालराहु-विचार

रविवार	उत्तर	गुरुवार	दक्षिण
सोमवार	वायव्य	शुक्रवार	अग्नि
मंगलवार	पश्चिम	शनिवार	पूर्व
बुधवार	नैर्ऋत्य		

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धरती-शयन

सूर्य संक्रान्ति से १, ५, ७, ८, १५, २१ तथा २४वें दिन धरती शयन करती है। इन दिनों पृथ्वी पर यज्ञादि वर्जित हैं।

रजस्वला धरती

पंचमी को मंगलवार, षष्ठी को रविवार, सप्तमी को शुक्रवार हो तो ऐसे दिन से तीन दिनों तक पृथ्वी रजस्वला रहती है, अतः यज्ञादि शुभकार्य वर्जित हैं।

वर्ग-विचार

अ	इ	उ	ए	—गरुड़
क	ख	ग	घ	ङ —बिलाव
च	छ	ज	झ	ञ —सिंह
ट	ठ	ड	ढ	ण —श्वान
त	थ	द	ध	न —सर्प
प	फ	व	भ	म —मूषक
य	र	ल	व	—हरिण
श	ष	स	ह	—मेंढा

वैरी-मित्र

अपने वर्ग से पाँचवाँ वर्ग शत्रु, चौथा मित्र तथा तीसरा सामान्य होता है।

पाया-विचार

१. आर्द्रा नक्षत्र से १० नक्षत्र तक जन्म हो तो चाँदी का पाया;
२. विशाखा से सात नक्षत्रों के बीच जन्म हो तो ताँबे का पाया;
३. धनिष्ठा से ५ नक्षत्रों के बीच जन्म हो तो सोने का पाया;
४. अश्विनी से मृगशिरा के बीच जन्म हो तो बालक का लोहे का पाया समझना चाहिए।

चौघटिका

प्रत्येक चौघटिका ३$\frac{3}{4}$ घटी का होता है, अर्थात् डेढ़ घंटे का होता है। जिस दिन जो वार होता हो, पहला चौघटिका उसी ग्रह का होता है।

अगले पृष्ठ पर दिन-रात्रि के चौघटिकासं-केत देखिये—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उ० = उद्वेग		का = काल	
चं = चंचलता (छल)		शु = शुभ	
ल = लाभ		रो = रोग	
अ = अमृत			

रविवार	दिन	उ,	चं,	ला,	अ,	का,	शु,	रो,	उ
	रात्रि	शु,	अ,	चं,	रो,	का,	ला,	ऊ,	शु
सोमवार	दिन	अ,	का,	शु,	रो,	उ,	चं,	ला,	अ
	रात्रि	चं,	रो,	का,	ला,	उ,	शु,	अ,	चं
मंगलवार	दिन	रो,	उ,	चं,	ला,	अ,	का,	शु,	रो
	रात्रि	का,	ला,	उ,	शु,	अ,	चं,	रो,	का
बुधवार	दिन	ला,	अ,	का,	शु,	रो,	उ,	चं,	ला
	रात्रि	उ,	शु,	अ,	चं,	रो,	का,	ला,	उ
गुरुवार	दिन	शु,	रो,	उ,	चं,	ला,	अ,	का,	शु
	रात्रि	अ,	चं,	रो,	का,	ला,	उ,	शु,	अ
शुक्रवार	दिन	चं,	ला,	अ,	का,	शु,	रो,	उ,	चं
	रात्रि	रो,	का,	ला,	उ,	शु,	अ,	चं,	रो
शनिवार	दिन	का,	शु,	रो,	उ,	चं,	ला,	अ,	का
	रात्रि	ला,	उ,	शु,	अ,	चं,	रो,	का,	ला

भद्रा का निवास

चन्द्रमा	मेश	राशि	का हो तो	भद्रा मृत्यु लोक में
,,	वृष	,,	,,	,,
,,	मिथुन	,,	,,	,,
,,	कर्क	,,	,,	स्वर्ग लोक में
,,	सिंह	,,	,,	,,
,,	कन्या	,,	,,	पाताल में
,,	तुला	,,	,,	,,
,,	वृश्चिक	,,	,,	मृत्यु लोक में
,,	धनु	,,	,,	पाताल में
,,	मकर	,,	,,	,,
,,	कुंभ	,,	,,	स्वर्ग लोक में
,,	मीन	,,	,,	,,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१३ | जन्मपत्रिका लिखने का प्रकार

श्री गणेशाय नमः

..... वार, तारीख .....माहे .....सन् .....
जन्मस्थान ..... अक्षांश ..... रेखांश .....
स्टैण्डर्ड अन्तर ..... वेलान्तर .....
जन्म-समय स्टैण्डर्ड ..... स्थानीय समय .....
स्थानीय सूर्योदय..... सूर्यास्त ..... दिनमान .....
.....

श्री गणेशायनमः ।। स जयति सिंधुर वदनो देवो यत्पादपंकज-स्मरणम् । वासर मणिरिव तमसां राशिन्नाशयति विघ्नानाम् ।।१ ।। स्वस्ति श्रीमन्नृप विक्रमार्क राज्य समयातीत संवत् ... तमे वर्षे तथाच श्रीमद् भूपति शालीवाहन कृत शके ..... प्रवर्तमाने ... यनगते श्री सूर्ये ..... गोलावलम्बिते श्री गगनचक्र चूड़ामणौ .....ऋतौ सन्मांगल्यप्रदे मासोत्तमे ..... मासे ..... पक्षे ..... तिथौ घट्य ..... पलानि ..... परं ..... जन्मतिथौ ..... वासरे ..... नक्षत्रे ..... घट्य ..... पलानि ..... परं ... जन्म नक्षत्रे .....घट्य ..... पलानि ...परं ..... जन्मयोगे तात्कालिके ..... करणे ..... राशिस्थिते चन्द्रे राशि नवमांशे ..... द्यै ..... रूये ..... दैवत्यै ..... राशिपतौ .....योनौ .....गणे ..... वर्णे ..... वश्ये ..... वर्गे ..... भाग-युंजाया ..... हंसके ..... नाडीस्थिते श्री फणीश्वर चक्रे ..... संक्रान्तेर्गतांशा ..... क ..... वि ..... समये श्री सूर्यार्द्ध बिम्बो-दयादिष्ट घट्य ... पलानि ..... समये ..... लग्न वह-मानायां शुभवेलायां ..... नगरे ... श्री ..... गृहे सौभाग्यवती ..... कुक्षे ..... रत्न जन्म तदभिधानं ..... नक्षत्रस्य ..... चरणानुगतं ..... क्षरोपरि ..... स्वरोपरि ..... राश्याच ... इतिनाम प्रतिष्ठितम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मूहूर्त | १४

भारत में परम्परा से प्रत्येक मांगलिक कार्य के लिए शुभ समय का विचार किया जाता रहा है। गर्भाधान से लेकर मृत्युपर्यन्त षोडष संस्कारों में प्रत्येक कार्य हेतु मुहूर्तों का आश्रय लेना आवश्यक बताया है। नीचे कुछ प्रमुख एवं आवश्यक मुहूर्त दिये जा रहे हैं—

(१) सूतिका स्नान मुहूर्त

वार—रवि, मंगल, गुरु;

नक्षत्र—रोहिणी, मृगशिरा, उत्तराषाढ़ा, उत्तरा भाद्रपद, उत्तरा फाल्गुनी।

(२) अन्नप्रासन

जन्म से—६, ८, १०वां या १६वां मास।

तिथि—१, ३, ५, ७, १०, १३, १५।

वार—सोम, गुरु।

नक्षत्र—अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त।

(३) कर्ण-वेध

जन्म से—१२वें या १६वें दिन।

वार—रवि, सोम, गुरु, शुक्र।

नक्षत्र—अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त।

लग्न—वृष, तुला, धनु।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu